हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● सोमवार ● 17.02.2025 ● वर्ष : 15 ● अंक : 206 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर मची भगदड़ में मरने वालों की संख्या बढ़कर 18 हुई

सीढ़ी पर एक यात्री के फिसलने से हुई दुर्घटना : रेलवे

नयी दिल्ली : राजधानी के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कल रात दुर्घटना का कारण फुटओवर ब्रिज की प्लेटफॉर्म नंबर 14 एवं 15 को उतरने वाली सीढ़ी पर एक यात्री का असावधानी वश फिसलना और उसके पीछे कई यात्रियों का चपेट में आना था। उत्तर रेलवे के मुख्य प्रवक्ता ने यह जानकारी दी और यह भी कहा कि कल रात भगदड़ की घटना के प्रभावित लोगों के लिए रेलवे द्वारा मुआवजा राशि वितरित की जा रही है। प्रवक्ता के अनुसार मृतकों के परिजनों को 10 लाख रुपये का मुआवजा दिया जा रहा है जबकि गंभीर रूप से घायल लोगों को ढाई-ढाई लाख रुपए और मामूली रूप से घायल लोगों को एक-एक लाख का मुआवजा दिया जा रहा है।

हादसे की दो सदस्यीय समिति ने शुरू की जांच

नयी दिल्ली : नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ की जांच के लिए दो सदस्यीय उच्च स्तरीय समिति बनाई गई है। इसमें उत्तर रेलवे के प्रधान मुख्य वाणिज्यिक प्रबंधक नरसिंह देव के नेतृत्व में प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त पंकज गंगवार शामिल हैं। रेल मंत्रालय के अनुसार समिति ने अपनी जांच शुरू कर दी है और नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर सभी वीडियो फुटेज पूरी तरह सुरक्षित रखने के निर्देश दिए गए हैं।

सीएम हेमन्त ने भगदड़ में 18 लोगों की मौत पर जताया शोक

रांची : सीएम हेमन्त सोरेन ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अव्यवस्था और भगदड़ के कारण हुई 18 लोगों की मृत्यु पर शोक जताया है। सोशल मीडिया पर एक पोस्ट जारी सोरेन ने कहा, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर अव्यवस्था और भगदड़ के कारण हुई कई लोगों की मृत्यु की हृदयविदारक खबर सुनकर मन अत्यंत आहत है। मरांग बुरु दिवंगत लोगों की आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दु:ख की यह विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दे। भगदड़ में घायल हुए लोगों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।

दुर्भाग्यपूर्ण घटना में लोगों की हुई मृत्यु अत्यंत दुखद : नीतीश

पटना : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटना में लोगों की हुई मृत्यु पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने इस घटना को अत्यंत दुखद बताते हुए मृतक आश्रितों के लिए आर्थिक सहायता की घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने मृतकों के परिजनों को दु:ख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार के रहनेवाले मृतक आश्रितों को 02 लाख रुपये एवं घायलों को 50 हजार रुपये की की आर्थिक सहायता मुख्यमंत्री राहत कोष से देने की घोषणा की है।

एजेंसी

नयी दिल्ली : राष्ट्रीय राजधानी के नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर मची भगदड़ में मरने वालों की संख्या बढ़कर 18 हो गई है, जबकि अन्य 12 लोग घायल हुए हैं। एक अस्पताल के अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी रविवार दी। एलएनजेपी अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि मृतकों में पांच बच्चे और 11 महिलाएं शामिल हैं।अधिकारी ने बताया, मृतकों की संख्या बढ़कर 18 हो गयी है। इसमें पांच बच्चे और 11 महिलाएं शामिल हैं। अन्य 12 लोगों को चोटें आई हैं।

रेलवे ने मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख रुपये और गंभीर रूप से घायल लोगों को 2.5-2.5 लाख रुपये तथा मामूली रूप से घायलों को एक-एक लाख रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की है।

उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी (सीपीआरओ) हिमांशु शेखर उपाध्याय ने बताया कि शनिवार रात मची भगदड़ की उच्च स्तरीय जांच की जा रही है। स्थिति अब सामान्य है। श्री उपाध्याय ने कहा, घटना के समय पटना जाने वाली मगध एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म 14 पर खड़ी थी और जम्मू जाने वाली उत्तर संपर्क क्रांति एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म 15 पर खड़ी थी। उन्होंने बताया कि यह घटना तब हुई जब फुट ओवरब्रिज से प्लेटफॉर्म की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर कुछ यात्री फिसल गए और उनके पीछे चल रहे यात्री भगदड़ में फंस गए। प्रयागराज में महाकुंभ के लिए विशेष ट्रेनों में सवार होने के लिए स्टेशन पर आने वाले यात्रियों की भारी भीड़ के कारण यह स्थिति पैदा हुई। इससे पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर इस घटना पर दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा, नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ से व्यथित हूं। मेरी संवेदनाएं उन सभी लोगों के साथ हैं जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल लोग जल्द स्वस्थ हों। अधिकारी इस भगदड़ से प्रभावित सभी लोगों की सहायता कर रहे हैं।

आईपीएल 2025 : केकेआर और आरसीबी के बीच ईडन गार्डन्स में होगा पहला मैच

एजेंसी

नयी दिल्ली : इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। मौजूदा चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) 22 मार्च को अपने घरेलू मैदान ईडन गार्डन्स में आईपीएल 2025 के शुरूआती मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) से भिड़ेगी। दस टीमों का यह टूर्नामेंट चैंपियंस ट्रॉफी के 9 मार्च को समाप्त होने के लगभग 2 सप्ताह बाद शुरू होगा।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने रविवार को कार्यक्रम की घोषणा की जिसमें 13 स्थानों पर 65 दिनों में 74 आईपीएल 2025 मैच आयोजित किए जाएंगे। कोलकाता में क्वालीफायर 2 (23 मई को) और 25 मई को खिताबी मुकाबले की मेजबानी भी की जाएगी, जबकि क्वालीफायर 1 और एलिमिनेटर की मेजबानी हैदराबाद में क्रमशः 20 और 21 मई को की जाएगी।

कोलकाता ने इससे पहले आईपीएल 2013 और 2015 के फाइनल की मेजबानी की थी, जहां मुंबई इंडियंस (एमआई) विजयी हुई थी। आईपीएल 2024 में उपविजेता सनराइजर्स हैदराबाद 23 मार्च को राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम में 2008 के चैंपियन राजस्थान रॉयल्स की मेजबानी करेगा। बाद में उस शाम चेन्नई सुपर किंग्स और मुंबई इंडियंस, आईपीएल के इतिहास की 2 सबसे सफल टीमें (पास पांच-पांच खिताब) एमए चिदंबरम स्टेडियम में आमने-सामने होंगी, जो आईपीएल 2025 का पहला डबल-हेडर भी है। सीएसके और एमआई बाद में 20 अप्रैल को मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में रिवर्स क्लैश के लिए मिलेंगे। दिल्ली कैपिटल्स 24 मार्च को विशाखापत्तनम में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ अपने अभियान की शुरूआत करेगी केकेआर और डीसी ने अभी तक आईपीएल 2025 सीजन के लिए अपने नए कप्तान की घोषणा नहीं की है। इस बीच आरसीबी ने हाल ही में रजत पाटीदार को अपना नया कप्तान नियुक्त किया है, जबकि श्रेयस अय्यर और ऋषभ पंत को पहले क्रमशः पीबीकेएस और एलएसजी के नए कप्तान के रूप में घोषित किया गया था।

आईपीएल 2025 का पूरा शेड्यूल

22 मार्च : कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 7:30 PM कोलकाता
23 मार्च : सनराइजर्स हैदराबाद बनाम राजस्थान रॉयल्स 3:30 PM हैदराबाद
23 मार्च : चेन्नई सुपर किंग्स बनाम मुंबई इंडियंस 7:30 PM चेन्नई
24 मार्च : दिल्ली कैपिटल्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स 7:30 PM विशाखापत्तनम
25 मार्च : गुजरात टाइटन्स बनाम पंजाब किंग्स 7:30 PM अहमदाबाद
26 मार्च : राजस्थान रॉयल्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स 7:30 PM गुवाहाटी
27 मार्च : सनराइजर्स हैदराबाद बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स 7:30 PM हैदराबाद
28 मार्च : चेन्नई सुपर किंग्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 7:30 PM चेन्नई
29 मार्च : गुजरात टाइटन्स बनाम मुंबई इंडियंस 7:30 PM अहमदाबाद
30 मार्च : दिल्ली कैपिटल्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद 3:30 PM विशाखापत्तनम
30 मार्च : राजस्थान रॉयल्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स 7:30 PM गुवाहाटी
31 मार्च : मुंबई इंडियंस बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स 7:30 PM मुंबई
1 अप्रैल : लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम पंजाब किंग्स 7:30 PM लखनऊ
2 अप्रैल : रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम गुजरात टाइटन्स 7:30 PM बेंगलुरु
3 अप्रैल : कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद 7:30 PM कोलकाता
4 अप्रैल : लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम मुंबई इंडियंस 7:30 PM लखनऊ
5 अप्रैल : चेन्नई सुपर किंग्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स 3:30 PM चेन्नई
5 अप्रैल : पंजाब किंग्स बनाम राजस्थान रॉयल्स 7:30 PM नई चंडीगढ़
6 अप्रैल : कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स 3:30 PM कोलकाता
6 अप्रैल : सनराइजर्स हैदराबाद बनाम गुजरात टाइटन्स 7:30 PM हैदराबाद
7 अप्रैल : मुंबई इंडियंस बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 7:30 PM मुंबई
8 अप्रैल : पंजाब किंग्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स 7:30 PM नई चंडीगढ़
9 अप्रैल : गुजरात टाइटन्स बनाम राजस्थान रॉयल्स 7:30 दोपहर 12 बजे अहमदाबाद
10 अप्रैल : रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम दिल्ली कैपिटल्स 7:30 PM बजे बेंगलुरु
11 अप्रैल : चेन्नई सुपर किंग्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स 7:30 PM बजे चेन्नई
12 अप्रैल : लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम गुजरात टाइटन्स 3:30 PM लखनऊ
12 अप्रैल : सनराइजर्स हैदराबाद बनाम पंजाब किंग्स 7:30 PM बजे हैदराबाद
13 अप्रैल : राजस्थान रॉयल्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 3:30 PM जयपुर
13 अप्रैल : दिल्ली कैपिटल्स बनाम मुंबई इंडियंस 7:30 PM दिल्ली
14 अप्रैल : लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स 7:30 PM लखनऊ
15 अप्रैल : पंजाब किंग्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स 7:30 PM नई चंडीगढ़
16 अप्रैल : दिल्ली कैपिटल्स बनाम राजस्थान रॉयल्स 7:30 PM बजे दिल्ली
17 अप्रैल : मुंबई इंडियंस बनाम सनराइजर्स हैदराबाद 7:30 PM बजे मुंबई
18 अप्रैल : रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम पंजाब किंग्स 7:30 PM बजे बेंगलुरु
19 अप्रैल : गुजरात टाइटन्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स 3:30 PM अहमदाबाद
19 अप्रैल : राजस्थान रॉयल्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स 7:30 PM जयपुर
20 अप्रैल : पंजाब किंग्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 3:30 PM न्यू चंडीगढ़
20 अप्रैल : मुंबई इंडियंस बनाम चेन्नई सुपर किंग्स 7:30 PM मुंबई
21 अप्रैल : कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम गुजरात टाइटन्स 7:30 PM कोलकाता
22 अप्रैल : लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स 7:30 PM लखनऊ
23 अप्रैल : सनराइजर्स हैदराबाद बनाम मुंबई इंडियंस 7:30 PM हैदराबाद
24 अप्रैल : रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम राजस्थान रॉयल्स 7:30 PM बेंगलुरु
25 अप्रैल : चेन्नई सुपर किंग्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद 7:30 PM चेन्नई
26 अप्रैल : कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम पंजाब किंग्स 7:30 PM कोलकाता
27 अप्रैल : मुंबई इंडियंस बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स 3:30 PM मुंबई
27 अप्रैल : दिल्ली कैपिटल्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 7:30 PM दिल्ली
27 अप्रैल : दिल्ली कैपिटल्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 7:30 PM दिल्ली
28 अप्रैल : राजस्थान रॉयल्स बनाम गुजरात टाइटन्स 7:30 PM जयपुर
29 अप्रैल : दिल्ली कैपिटल्स बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स 7:30 PM दिल्ली
30 अप्रैल : चेन्नई सुपर किंग्स बनाम पंजाब किंग्स 7:30 PM चेन्नई
1 मई : राजस्थान रॉयल्स बनाम मुंबई इंडियंस 7:30 PM जयपुर
2 मई : गुजरात टाइटन्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद 7:30 PM अहमदाबाद
3 मई : रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम चेन्नई सुपर किंग्स 7:30 PM बेंगलुरु
4 मई : कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम राजस्थान रॉयल्स 3:30 PM कोलकाता
4 मई : पंजाब किंग्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स 7:30 PM धर्मशाला
5 मई : सनराइजर्स हैदराबाद बनाम दिल्ली कैपिटल्स 7:30 PM हैदराबाद
6 मई : मुंबई इंडियंस बनाम गुजरात टाइटन्स 7:30 PM मुंबई
7 मई : कोलकाता नाइट राइडर्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स 7:30 PM कोलकाता
8 मई : पंजाब किंग्स बनाम दिल्ली कैपिटल्स 7:30 PM धर्मशाला
9 मई : लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु 7:30 PM लखनऊ
10 मई : सनराइजर्स हैदराबाद बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स 7:30 PM हैदराबाद
11 मई : पंजाब किंग्स बनाम मुंबई इंडियंस 3:30 PM धर्मशाला
11 मई : दिल्ली कैपिटल्स बनाम गुजरात टाइटन्स 7:30 PM दिल्ली
12 मई : चेन्नई सुपर किंग्स बनाम राजस्थान रॉयल्स 7:30 PM चेन्नई
13 मई : रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम सनराइजर्स हैदराबाद 7:30 PM बेंगलुरु
14 मई : टाइटन्स बनाम लखनऊ सुपर जायंट्स 7:30 PM अहमदाबाद
15 मई : मुंबई इंडियंस बनाम दिल्ली कैपिटल्स 7:30 PM मुंबई
16 मई : राजस्थान रॉयल्स बनाम पंजाब किंग्स 7:30 PM जयपुर
17 मई : रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु बनाम कोलकाता नाइट राइडर्स 7:30 PM बेंगलुरु
18 मई : गुजरात टाइटन्स बनाम चेन्नई सुपर किंग्स 3:30 PM अहमदाबाद
18 मई : लखनऊ सुपर जायंट्स बनाम सनराइजर्स हैदराबाद 7:30 PM लखनऊ
20 मई : क्वालीफायर 1 7:30 PM हैदराबाद
21 मई : एलिमिनेटर 7:30 PM हैदराबाद
23 मई : क्वालीफायर 2 7:30 PM कोलकाता
25 मई : फाइनल 7:30 PM कोलकाता

राधा कृष्ण किशोर ने किया राजहरा नॉर्थ कोयला खदान का उद्घाटन, कहा-

इस परियोजना से 2128.56 करोड़ के राजस्व की होगी प्राप्ति

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : झारखंड के वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने पलामू जिले के पण्डवा गांव में स्थित राजहरा नॉर्थ कोयला खदान का उद्घाटन किया। यह खदान 2021 में नीलामी के बाद फेयरमाइन कार्बन्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा विकसित की गई है, और अब यह समय से पहले अपने संचालन की शुरूआत कर रही है। इस परियोजना से राज्य सरकार को 2128.56 करोड़ रुपये की कुल राजस्व प्राप्ति होगी, जिसमें हर साल 102.276 करोड़ रुपये का राजस्व शामिल है, जो राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान करेगा। इस खदान से 550 से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा। साथ ही, कंपनी ने क्षेत्र में सड़क निर्माण, स्वच्छ पेयजल, स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा सुविधाओं का विस्तार करने का संकल्प लिया है। इससे पलामू और आसपास के इलाकों में औद्योगिक गतिविधियों में वृद्धि होगी, जो आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करेगा। इस मौके पर वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने कहा, राजहरा नॉर्थ कोयला खदान झारखंड के विकास में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह परियोजना न केवल राजस्व में वृद्धि करेगी, बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगी और क्षेत्र में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार होगा। इस कार्यक्रम में पलामू के सांसद विष्णुदयाल राम और फेयरमाइन कार्बन्स प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर समीर लोहिया समेत अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

फास्टैग का नया नियम आज से लागू

नयी दिल्ली : फास्टैग का नया नियम सोमवार से लागू हो जा रहा है। इसके तहत जिन भी यूजर्स के फास्टैग में लो बैलेंस, भुगतान में देरी या फिर फास्टैग ब्लैकलिस्ट होगा, उन पर अतिरिक्त जुर्माना लगाया जाएगा। इस नियम को लागू करने के पीछे सरकार का उद्देश्य फास्टैग में होने वाली परेशानी के कारण टोल पर लगने वाली गाड़ियों की लंबी कतारों को कम करना है और यात्रा को सुविधाजनक बनाना है। एनपीसीआई और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने फास्टैग इकोसिस्टम में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव जारी किए हैं, जिसका लक्ष्य टोल भुगतान को सुव्यवस्थित करना, विवादों को कम करना और धोखाधड़ी पर अंकुश लगाना है।

यूएई ने भारतीयों के लिए यात्रा की और आसान वीजा-ऑन-अराइवल नीति का किया विस्तार

एजेंसी

दुबई : संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने वीजा नियमों में किया बड़ा बदलाव करते हुए भारतीय नागरिकों के लिए वीजा-ऑन-अराइवल नीति का विस्तार किया है। 13 फरवरी 2025 से लागू इस नई नीति के तहत, भारतीय यात्री अब छह और देशों के वैध वीजा, निवास परमिट या ग्रीन कार्ड के आधार पर यूएई में वीजा ऑन अराइवल प्राप्त कर सकते हैं। अब सिंगापुर, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और कनाडा के वैध वीजा धारक भारतीय नागरिक यूएई में प्रवेश कर सकते हैं। इससे पहले, यह सुविधा केवल संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ के देशों और यूनाइटेड किंगडम के वीजा धारकों को ही उपलब्ध थी। यूएई अपने विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे और कारोबारी माहौल के साथ भारतीयों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ है। इस नई नीति से भारत और यूएई के बीच यात्रा और व्यवसाय के अवसरों को और अधिक बढ़ावा मिलेगा ।

यात्रियों के पास कम से कम 6 महीने के लिए वैध भारतीय पासपोर्ट होना चाहिए।

यात्री के पास सिंगापुर, जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा, अमेरिका, यूके या यूरोपीय संघ के किसी भी देश का वैध वीजा, निवास परमिट या ग्रीन कार्ड होना चाहिए।

आगमन पर यूएई के आव्रजन चेकपॉइंट पर निर्धारित वीजा शुल्क का भुगतान करना होगा।

यूएई की फेडरल अथॉरिटी फॉर आइडेंटिटी, सिटिजनशिप, कस्टम्स और पोर्ट सिक्योरिटी के महानिदेशक मेजर जनरल सुहैल सईद अल खैली ने इस पहल को भारत और यूएई के बीच दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी का हिस्सा बताया। खैली के अनुसार यह नीति भारतीय नागरिकों के लिए यात्रा को सरल और सुविधाजनक बनाएगी। यह पर्यटन, निवास और रोजगार के नए अवसरों को बढ़ावा देगी। यूएई को एक वैश्विक वित्तीय, पर्यटन और आर्थिक केंद्र के रूप में और अधिक आकर्षक बनाएगी। भारतीय नागरिकों को व्यापार, निवेश और स्टार्टअप के लिए अधिक अवसर प्रदान करेगी।

वीजा शुल्क और अवधि

- 14 दिन का वीजा : 100 दिरहम (लगभग ₹2,270)
- अवधि बढ़ाने का शुल्क : 250 दिरहम (लगभग ₹5,670)
- 60 दिन का वीजा : 250 दिरहम (लगभग ₹5,670)

एक नजर

झारखंड कांग्रेस प्रभारी बनने पर केदार पासवान ने के राजू को दी बधाई

बरही : कांग्रेस आलाकमान ने झारखंड समेत 9 राज्यों के प्रभारियों में बदलाव किया है। झारखंड कांग्रेस प्रभारी की कमान के राजू को सौंपी गई है, जबकि गुलाम अहमद मीर को पद से मुक्त कर दिया गया है। कांग्रेस एससी सेल के प्रदेश अध्यक्ष केदार पासवान ने के राजू को झारखंड कांग्रेस प्रभारी बनाए जाने पर बधाई दी और आशा व्यक्त की कि उनके नेतृत्व में झारखंड कांग्रेस और मजबूत होगी। बता दें कि के राजू 1981 बैच के आंध्र प्रदेश कैडर के पूर्व आईएएस अधिकारी रह चुके हैं और लंबे समय से कांग्रेस संगठन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

समाज को एकजुट रहने की जरूरत : अर्जुन रविदास

बरही : बरही प्रखंड के अंतर्गत करियातपुर पंचायत के ग्राम शिवपुर में आयोजित रविदास महासभा कमेटी विस्तार कार्यक्रम शांतिपूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता रविदास महासभा के अध्यक्ष अर्जुन रविदास ने किया। वही संचालन राजकुमार रविदास ने किया। कार्यक्रम के दौरान सभी के सहमति से कमेटी विस्तार कर पदाधिकारीओ का चयन किया गया जिसमे संरक्षक के रूप में डा. जयप्रकाश आंनद, सह संरक्षक विजय राम, उपाध्यक्ष मनोज राम, अशोक दास, उपसचिव रामकुमार दास, संजय रविदास, संगठन मंत्री सूरज दास, दिनेश दास, उप कोषाध्यक्ष पुरन राम, प्रवक्ता बम बम कुमार राम, संतोष रविदास, मीडिया प्रभारी अनिल कुमार, रविंद्र कुमार, विधि सलाहकार महेंद्र दास, कार्यालय प्रभारी अजय आनंद, महिला संगठन मंत्री कांति देवी, अंजली देवी, संयोजक राजेंद्र राम, राजकुमार राम, मनोज कुमार,मुकेश कुमार, नारायण राम, साधु शरण, डॉक्टर अजय रविदास सहित सभी पदाधिकारियों को जिम्मेदारियां दी गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में रविदास महासभा के सदस्य सक्रिय रहे। जिसमें अध्यक्ष अर्जुन रविदास, सचिव संतोष कुमार, कोषाध्यक्ष सतीश कुमार दास, पुरन राम, विनोद कुमार, बजेंद्र रविदास, अमरेंद्र राम ने अपनी सहभागिता निभाई। वहीं ग्रामीणों में उमेश दास, सुनील दास, रमेश दास, राजेश दास, सरजू दास, प्रकाश दास, राजकुमार दास, चंद्रिका दास, सोनू दास, सुधीर राज, गुलाब दास, मनोज दास, प्रदीप दास, चिंता देवी सहित सैकड़ो रविदास समाज के लोग शामिल रहे।

तीन अलग -अलग सड़क हादसों में पांच लोग घायल

कोडरमा : जिले के तीन अलग जगहों पर रविवार को हुए सड़क हादसों में पांच लोग घायल हो गए। पहली घटना में नवलशाही थाना क्षेत्र के गिरिडीह मुख्य मार्ग स्थित पुरनाडीह पुल के समीप एक स्कॉर्पियो वाहन (बीआर 01 जेई 1931) पुल में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें तीन युवक घायल हो गये है। घायलों की पहचान बिहार के समस्तीपुर निवासी सौरव चौधरी (28), बिहार के पटना निवासी माही पाण्डेय (28), बिहार के सिवान निवासी निहाल गुप्ता (29) के रूप मे हुई है। जानकारी के अनुसार तीनों घायल बिहार के नालंदा से कोडरमा आये थे जो शराब के नशे मे धुत थे। ग्रामीण की मदद से घायलों को सदर अस्पताल कोडरमा लाया गया। वहीं दूसरी घटना नवलशाही थाना क्षेत्र अंतर्गत कोडरमा - गिरिडीह मुख्यमार्ग स्थित पुरनाडीह पुल के नीचे एक हाईवा गिर गया। उक्त हाईवा डोमचांच से पुरनाडीह की ओर जा रही थी। इसी दौरान पुरनाडीह नदी के नीचे पुल का रेलिंग तोड़कर गिर गया।

उपायुक्त ने किया परेड का निरीक्षण कहा-वर्दी रक्षा एवं विश्वास का प्रतीक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड गृह रक्षा वाहिनी के नव नामांकित गृह रक्षकों के प्रशिक्षण पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 16 फरवरी को आयोजित पारण परेड में बतौर मुख्य अतिथि उपायुक्त नैंसी सहाय शामिल हुई। इस दौरान उपायुक्त के द्वारा परेड का निरीक्षण किया गया, मौके पर रोहित आनंद समादेष्टा हजारीबाग मौजूद रहे। तत्पश्चात उपायुक्त के द्वारा उन सभी 206 प्रशिक्षु गृह रक्षकों को पद और गोपनीयता शपथ दिलाई गई। उपायुक्त के द्वारा मुख्य परेड कमाण्डर पवन कुमार साहु, द्वितीय परेड कमाण्डर सोमनाथ भगत एवं अन्य सभी कम्पनी के कमाण्डर को पुरस्कृत किया गया। क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, हजारीबाग में महानिदेशक-सह-महासमादेष्टा का कार्यालय के द्वारा 16 दिसंबर 2024 से 16 फरवरी 2025 तक कुल 63 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें कुल 206 प्रशिक्षु गृह रक्षक (सभी गुमला जिला के) सम्मिलित हुए। उपायुक्त ने अपने संबोधन में सभी नव नामांकित गृह रक्षकों को शुभकामनाएं देते हुए संबोधित किया। उन्होंने कहा वर्दी धारण करने का अर्थ है अनुशासित रहना। वर्दी रक्षा का प्रतीक है विश्वास का प्रतीक है। किसी भी वदीधारी को ऐसा कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए जिससे वर्दी के सम्मान पर ठेस पहुंचे। उन्होंने गृह रक्षा वाहिनी के सभी सदस्यों को धन्यवाद देते हुए कम समय में व्यवस्थित प्रशिक्षण देने पर तारीफ की तथा सभी प्रशिक्षु लगन एवं तन्मयता से प्रशिक्षण पूर्ण किए वें भी बधाई की पात्र है। सभी को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं। प्रशिक्षुओं को दक्ष बनाने के लिए कई अन्य प्रकार के दिए गए है प्रशिक्षण क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र, झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, हजारीबाग में बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु गृह रक्षकों को अनिल पलटा डी०जी० के निर्देशन में अनेको प्रकार के प्रशिक्षण दिया गया। जैसे- टर्नआउट, व्यक्तिगत कवायद, आधुनिक हथियार (5.56 एम० एम० इन्सास), भीड़ नियंत्रण, गार्ड / संतरी का कर्त्तव्य, नागरिक सुरक्षा, प्राथमिक उपचार, अग्निशमन, भी०आई०पी० डियूटी, यातायात नियंत्रण, अनुशासन, श्रम एवं आपदा प्रबंधन इत्यादि। प्रशिक्षण के क्रम में प्रशिक्षु गृह रक्षकों को .303 रायफल एवं 5.56 एम० एम० इन्सास से 10-10 राउण्ड लक्ष्याभ्यास/ लक्ष्याभेदन फायरिंग रेंज पदमा हजारीबाग में कराया गया।

घायलों का हो बेहतर इलाज, मृतकों के परिजनों को मिले उचित मुआवजा : विनोद कुशवाहा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार शाम महाकुंभ के लिए रवाना होने वाली ट्रेन में चढ़ने के दौरान भारी भीड़ के कारण भगदड़ मच गई। इस दर्दनाक हादसे में 18 लोगों की मौत हो गई, जबकि 10 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। कुछ लोगों के बेहोश होने की भी खबर है। सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज जारी है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, महाकुंभ में जाने के लिए भारी संख्या में श्रद्धालु नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचे थे। ट्रेन में सीट पाने की होड़ में लोग एक-दूसरे को धक्का देने लगे, जिससे भगदड़ जैसी स्थिति बन गई। रेलवे की ओर से पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम न होने के कारण स्थिति बिगड़ती चली गई और कई लोगों की जान चली गई। झारखंड प्रदेश कांग्रेस महासचिव विनोद कुशवाहा ने इस घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया और केंद्र सरकार तथा रेलवे प्रशासन को इस हादसे का पूर्ण रूप से जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि महाकुंभ जाने वाले श्रद्धालुओं की भारी संख्या को देखते हुए अतिरिक्त ट्रेनें चलाई जानी चाहिए थीं और बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए थी।

लेकिन रेलवे प्रशासन की लापरवाही के कारण यह दर्दनाक हादसा हुआ। इस हृदयविदारक घटना पर दुख जताते हुए कांग्रेस महासचिव ने सरकार से मृतकों के परिजनों को उचित मुआवजा देने और घायलों के इलाज के लिए उचित इंतजाम करने की मांग की। उन्होंने कहा कि इस तरह की घटनाओं से बचने के लिए सरकार को यात्रियों की सुरक्षा के लिए कड़े कदम उठाने होंगे ताकि भविष्य में इस तरह के हादसे न हों।

आज से होगा दो दिवसीय 'जननी स्वास्थ्य मेला' का आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : श्रीनिवास सर्वमंगल सोसाइटी द्वारा संचालित रविन्द्र पथ बिजली ऑफिस के विपरीत स्थित संत कोलम्बस मिशन होस्पिटल में दो दिवसीय 'जननी स्वास्थ्य मेला' का आयोजन किया जा रहा है। 17 फरवरी यानि सोमवार से लेकर 18 फरवरी यानि मंगलवार तक मिशन होस्पिटल परिसर में महिलाओं के लिए विशेष निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाएगा। इसमें महिलाओं को निशुल्क चिकित्सा परामर्श, मुफ्त दवा, बी.पी जांच, अल्ट्रासाउंड, कैंसर स्क्रीनिंग, नेत्र जांच, एक समय का भोजन, दंत जांच एवं शुगर व हीमोग्लोबिन का जांच एवं इलाज मुफ्त होगा। शिविर के माध्यम से हेयर ट्रांसप्लांट एवं अन्य जांच में भारी छूट महिलाओं को प्रदान किया जाएगा। अनुभवी चिकित्सक एवं स्वास्थ्य कर्मी शिविर में अपनी सेवाएं देंगे। स्वास्थ्य कर्मी सक्रियता एवं तत्परता से निशुल्क शिविर में जुटे रहेंगे। महिलाओं को शिविर की जानकारी प्राप्त करने के लिए 9430165926, 9297993810 हेल्प लाइन नंबर जारी किया गया है। मौके पर संत कोलम्बस मिशन होस्पिटल के संचालक डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने शिविर की जानकारी देते हुए कहा कि महिलाओं को घर की व्यस्ततम कार्य को लेकर कई बार ऐसा देखा जाता है कि नियमित समय पर स्वास्थ्य की देखभाल नहीं करने से गंभीर एवं जटिल बिमारी पकड़ लेता है। जिससे महिलाओं को आर्थिक खर्च एवं कई परेशानियों को सामना करना पडता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सही समय पर स्वास्थ्य की देखभाल एवं उपचार हेतु 17 फरवरी सोमवार से दो दिवसीय निशुल्क शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

एनएमडीसी कंपनी से प्रभावित रैयतों ने किया विरोध प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के नापोखुर्द पंचायत अंतर्गत के ग्राम इंदिरा के चीरंवा में एनएमडीसी कंपनी से प्रभावित रैयतों की विशेष बैठक की गई। बैठक की अध्यक्षता बड़कागांव पुर्वी जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि दीपक करमाली ने किया।वहीं संचालन सोमर गंझू द्वारा किया गया।बैठक में सर्व समिति से रैयतो के द्वारा निर्णय लिया गया कि कंपनी के किसी भी व्यक्ति को गांव में घुसने नहीं दिया जाएगा। साथ ही साथ बगैर आम सभा के कोई कार्य नहीं करने दिया जाएगा। उपस्थित सभी लोगों ने यह भी निर्णय लिया कि बिना कमेटी बनाए कंपनी को कोई भी कार्य नहीं करने दिया जाएगा। जब तक कंपनी प्रभावित रैयतो को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं करेगी तब तक कोई भी कार्य नहीं करने दिया जाएगा। बैठक में उपस्थित सभी रैयतो ने कंपनी को जमीन नहीं देने का निर्णय लिया तथा रोहने कॉल ब्लॉक एनएमडीसी के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई। इस बैठक में मुख्य रूप से नापोखुर्द पंचायत के ग्राम नपोकला , ग्राम इंदिरा, ग्राम पसरिया , ग्राम चीरवां, ग्राम पोटंगा मलडी के सैकड़ो ग्रामीण उपस्थित होकर विरोध प्रदर्शन किया।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने शहीद कैप्टन करमजीत सिंह बक्शी को दी श्रद्धांजलि

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश शहीद कैप्टन करमजीत सिंह बक्शी के आवास पर पहुंचकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित किया और उनके माता-पिता से मिलकर अपनी संवेदनाएं प्रकट की और कहा कि शहीद पूरे देश के लिए सर्वोपरि है । आज सेना के जवान बॉर्डर पर है, तभी हम लोग अपने घरों में चैन की नींद सो पाते हैं। साथ ही साथ उन्होंने कहा की यह माता-पिता धन्य है जिन्होंने ऐसे शूरवीर को जन्म दिया जिन्होंने अपने देश के खातिर बलिदान दे दी और वीरगति को प्राप्त किया । इनके इस कृत्य के लिए पूरा देश इनका आभारी रहेगा और जिसे शब्दों से बयां कर पाना काफी मुश्किल है। हजारीबाग सिख समाज के लोगों ने प्रदेश अध्यक्ष से आग्रह किया कि पैगोडा चौक का नामकरण कप्तान शाहिद करमजीत सिंह बक्शी के नाम पर किया जाए जिस पर पहल करते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने तत्काल विभाग के सचिव और सरकार के संबंधित पदाधिकारी से बात की और इस पर संज्ञान लेते हुए उनसे आग्रह किया कि चौक का नामकरण जो है करमजीत सिंह बक्शी के नाम पर हर हालत में झारखंड सरकार करने का काम करेगी । इनके साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय पूर्व सांसद प्रदीप बालमुचू रामगढ़ विधायक ममता देवी, हिन्दू न्यास बोर्ड के अध्यक्ष जयशंकर पाठक जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष ज्योती मथारू प्रदेश से आए सतीश पाल मुंजनी, रियाजउद्दिन अंसारी, शांतनु मिश्रा, परमजीत सिंह, बलजीत सिंह बेदी ओबीसी के सुरजीत नागवाला, रंजीत यादव, दीपक गुप्ता, रविन्द्र प्रताप सिंह, राजीव कुमार मेहता, कजरु सावं, गोवर्धन गंझू के अतिरिक्त कई कांग्रेसी उपस्थित थे ।

मोमिन कॉन्फ्रेंस को मजबूती प्रदान करने के लिए जमीनी स्तर पर करें कार्य : प्रदेश अध्यक्ष

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : मोमिन कांफ्रेंस हजारीबाग जिला इकाई का एक दिवसीय कार्यकर्ता सम्मेलन मोमिन कॉन्फ्रेंस के जिला अध्यक्ष मोहम्मद जहांगीर अंसारी के हाशमिया कालोनी पगमिल अवस्थित आवास पर रविवार को आयोजित की गई जिसमें बतौर मुख्य अतिथि मोमिन कॉन्फ्रेंस के प्रदेश अध्यक्ष आबिद अली अंसारी शरीक हुए। वहीं बतौर विशिष्ट अतिथि केंद्रीय सचिव डॉ अनवर हुसैन अंसारी शरीक हुए। इस अवसर पर जिला कमेटी के विस्तारित कमिटी के सभी पदाधिकारीगण को प्रदेश अध्यक्ष आबिद अली ने प्रमाण पत्र सौंप कर अहम जिम्मेदारी सौंपी। इस अवसर पर मोमिन कॉन्फ्रेंस संगठन के प्रति समर्पित भाव से सभी को अपनी जिम्मेदारियां का निर्वहन को लेकर आह्वान करते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जिस आशा और विश्वास के साथ हमने हजारीबाग मोमिन कॉन्फ्रेंस जिला इकाई का मो. जहांगीर अंसारी को जिला अध्यक्ष बनाया था और जो दायित्व सौंपा था उसे उन्होंने पूरी जिम्मेदारी से निभाते हुए जिला कमेटी का विस्तार किया और एक मजबूत संगठन तैयार किया। उन्होंने कहा कि मोमिन कॉन्फ्रेंस कोई राजनीतिक संगठन नहीं बल्कि एक सामाजिक संगठन है जो मोमिन समाज के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करती है। मोमिन कॉन्फ्रेंस के सभी सदस्य एक परिवार की तरह है उन्होंने प्रमाण पत्र सौंपते हुए सभी से कहा कि सभी लोग अपने-अपने कार्य क्षेत्र से जुड़ जाएं और मोमिन कॉन्फ्रेंस को मजबूती प्रदान करने के लिए जमीनी स्तर पर कार्य करें। सामाजिक बुराई को खत्म करने व राजनीतिक हिस्सेदारी में बढ़ चढ़कर भाग लेने पर जोर देते हुए कहा कि गांव-गांव तक मोमिन कांफ्रेंस का संदेश पहुंचाएं। वहीं जिला अध्यक्ष मो. जहांगीर अंसारी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि मोमिन कॉन्फ्रेंस के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य हजारीबाग जिला मोमिन कॉन्फ्रेंस के इस आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में संकल्प लेकर जाएं कि हम मोमिन कॉन्फ्रेंस के उत्थान और मोमिनो के सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक विकास को लेकर हर क्षेत्र में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए पूरी एकजुटता और मजबूती के साथ कार्य करेंगे। कहा कि किसी भी समाज के उत्थान के लिए शिक्षा बेहद जरूरी है, बगैर शिक्षा के हम अपने समाज का उत्थान और विकास नहीं कर सकते। इस अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करने वालों में केंद्रीय सचिव डॉ अनवर हुसैन अंसारी, प्रदेश उपाध्यक्ष आबिद अंसारी, प्रदेश महासचिव सलीम रजा सहित कई पदाधिकारी एवं सक्रिय सदस्य शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

कलश यात्रा के साथ 51 कुंडीय राष्ट्र गायत्री महायज्ञ शुरू

चौपारण : गायत्री माता का प्राण प्रतिष्ठा समारोह सह 51 कुंडीय राष्ट्र गायत्री महायज्ञ को लेकर रविवार को भव्य जल यात्रा निकली। जल यात्रा का शुभारंभ मुखिया जानकी यादव, मुखीया गंदौरी दांगी, पूर्व मुखिया प्रतिनिधि अरबिंद सिन्हा, भाजपा नेता राजदेव यादव, विकास यादव, रामस्वरूप पासवान सहित कई ने व्रतियों के माथे पर कलश रख कर किया। जल यात्रा गायत्री मंदिर परिसर कसियाडीह से शुरू होकर महराजगंज होते हुए ग्राम हथिया नदी से पूरे वैदिक मंत्रोच्चार व शंख उद्घोस के साथ 1100 व्रतियों ने कलश में जल भरा। इससे पहले यज्ञ ब्यवस्थापक सच्चिदानंद सिंह ने मंत्रोच्चार के साथ बरही विधायक मनोज कुमार यादव व मुख्य यजमान महेंद्र साव सहित अन्य के कर कमलों द्वारा कलश संकल्प व गंगा मैया का पूजन करवाए। मौके पर विधायक मनोज कुमार यादव ने यज्ञ ब्यवस्थापक सहित अन्य को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि जन्म और मृत्यु भगवान के हाथ में है, लेकिन जीवन को कैसे जिया जाए इसकी शिक्षा हमें महायज्ञ से ही मिलती है। यज्ञ का समापन 19 फरवरी को गायत्री माता की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा व यज्ञ कि पूणार्हुति के साथ होगी। इस बीच प्रतिदिन ध्यान साधना, प्रज्ञा योग, देवपूजन, गायत्री चालीसा,विभिन्न संस्कार, शाम में शांतिकुंज हरिद्वार से आए बालक राम रत्नमूल की टोली के द्वारा प्रज्ञा पुराण कथा एवं विराट दीपयज्ञ होगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में जिला समन्वयक केशवानन्द, महिला पुर्णिमा देवी, उपजोन समन्वयक लखन लाल प्रजापति,डॉ ललिता राणा (झारखंड प्रकोष्ठ), बिके शर्मा, गजाधर साव, शिव शंकर प्रसाद, एसएन पाण्डेय, अर्जुन साहू (ट्रस्ट) महेंद्र साव, बुधन साव, मनोज कुमार, रूपेश सिंह,नन्दू साव, विजय गुप्ता, अशोक दांगी, सीताराम राणा सहित गायत्री परिवार के सैकड़ो लोग लगे हैं। वहीं जल यात्रा में चयकला पंचायत के पूर्व मुखिया मो सफाउद्दीन निजामी,मुखीया प्रतिनिधि हेलाल अख्तर,अब्दुल सलाम, मो० सरताज,अफाक आलम, शबन रज्जा सहित बड़ी संख्या में मुस्लिम समाज के लोग भी शामिल थे।

पूर्व विधायक अंबा प्रसाद ने स्कूली बच्चों संग मनाया अपना 33वां जन्मदिन

बड़कागांव : बड़कागांव विधानसभा की पूर्व विधायक अंबा प्रसाद ने अपना 33वां जन्मदिन होरम स्थित बालिका कस्तूरबा आवासीय विद्यालय में मनाया गया। अंबा प्रसाद के जन्मदिन के मौके पर छात्राओं के अनुरोध पर उन्होंने अपना हुवा सरहुल का गाना फुल गेलक रे फुलियो गेल रे गाया और छात्राओं के साथ नृत्य की। अपने जन्मदिन के इस मौके पर पूर्व विधायक अंबा प्रसाद ने छात्राओं को यह संदेश दिया कि अपने जीवन में खूब पढ़े और आगे बढ़े ,और अपने माता-पिता, गांव घर और देश का नाम रोशन करें। उनके जन्मदिन के इस मौके पर कस्तूरबा आवासीय विद्यालय के सभी छात्राएं,शिक्षक गण एवं कांग्रेस के कार्यकर्ता मौजूद थे।

ब्रह्म समाज ने मनाया माघ उत्सव

हजारीबाग : हजारीबाग की भूमि में पुनर्जागरण के आंदोलन को लाने में यहां 1867 में स्थापित ब्रह्म समाज हजारीबाग की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मेन रोड हजारीबाग में अवस्थित इसी ब्रह्म समाज के मंदिर में रविवार को माघ उत्सव मनाया गया। इस दिन आयोजित उपासना में एक तरफ जहां पाठ और प्रार्थना का आयोजन किया गया वहीं बीच-बीच में ब्रह्मसंगीत प्रस्तुत किए गए। आज के दिन पाठ और संगीत के माध्यम से ईश्वर को स्मरण करने का और उन्हें धन्यवाद देने का कार्य किया गया। साथ ही गीत के माध्यम से यह प्रार्थना की गई की सब का जीवन सुखमय हो, समाज में भाईचारा बनी रहे, चारों तरफ खुशी का माहौल हो। ज्ञात हो की माघ उत्सव का आयोजन सर्वप्रथम ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने 1830 में किया था। माघ महीने में ब्रह्म समाज की स्थापना की गई थी और इसी स्थापना दिवस के अवसर पर प्रत्येक वर्ष माघ उत्सव का आयोजन किया जाता है। हजारीबाग ब्रह्म समाज में 1867 से प्रत्येक वर्ष माघ महीने में इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। रविवार के दिन आयोजित उपासना में संध्या धनपति एवं कोलकाता से आए सुप्रतिम चक्रवर्ती ने पाठ का दायित्व संभाला। इसके माध्यम से ईश्वर को स्मरण करते हुए ब्रह्म समाज एवं ब्रह्म संगीत के इतिहास पर प्रकाश डाला। उपासना के पूर्वार्ध में गीत प्रस्तुत करने का दायित्व हजारीबाग के तापसी दास, रीता भद्र, रूप पाल, रूबी धणपति, मंदिरा गुप्ता एवं सुलगना ने संभाला। डॉ सुकल्याण मोइत्रा ने ब्रह्म संगीत शैली में तबला पर संगत किया। कार्यक्रम के दूसरे भाग में गीत प्रस्तुत करने का दायित्व कोलकाता से आए सुप्रतिम चक्रवर्ती, एलोरा चक्रवर्ती एवं जयश्री डे ने संभाला। उपासना कार्यक्रम के बाद खिचड़ी प्रसाद का वितरण किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में हजारीबाग ब्रह्म समाज के सचिव निलंजन चटर्जी, डॉ दीपक कुंडू एवं अतनु घोष मुख्य भूमिका में रहे। शहर के बंगाली समाज के लोग अच्छी संख्या में उपासना में सम्मिलित हुए।

सूर्य मंदिर महायज्ञ महोत्सव भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ शुभारंभ

बरही : बरहीडीह छठ घाट सूर्य मंदिर महायज्ञ महोत्सव का शुभारंभ भव्य कलश यात्रा के साथ हुआ। इस यात्रा में 351 महिलाओं ने भाग लिया और विधिवत कलश उठाया। कलश यात्रा बरहीडीह होते हुए पूरे बरही के चारों प्रमुख मार्गों से होकर पुनः मंदिर परिसर पहुंची। इस धार्मिक अनुष्ठान के दौरान श्रद्धालुओं में भारी उत्साह देखने को मिला। कलश यात्रा में बतौर मुख्य अतिथि बरही विधायक मनोज कुमार यादव शामिल हुए, जिन्होंने महिलाओं को कलश प्रदान कर यात्रा का शुभारंभ किया। उनके अलावा कई गणमान्य लोग इस आयोजन में उपस्थित रहे, जिनमें जीप उपाध्यक्ष किशुन यादव, प्रमुख मनोज रजक, भाजपा जिला उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, जीप प्रतिनिधि सह विहिप जिला सहमंत्री गुरुदेव गुप्ता, मुखिया समशेर आलम, भाजपा मंडल अध्यक्ष भगवान केशरी, चौपारण मुखिया संघ अध्यक्ष बीरेंद्र रजक, भाजपा पूर्व मंडल अध्यक्ष अमित साहू प्रमुख रूप से शामिल थे। पूजा समिति की ओर से अध्यक्ष राजसिंह चौहान, सचिव राजवंशी सिंह, कोषाध्यक्ष रमेश ठाकुर समेत पूजा कमिटी ने आयोजन की सभी व्यवस्थाओं की देखरेख की। इसके अतिरिक्त कई सामाजिक कार्यकर्ता और स्थानीय लोगों ने इस धार्मिक अनुष्ठान में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। महायज्ञ में बतौर मुख्य जजमान बासुदेव सिंह, संजय सिंह, अनुज सिंह, सुरेश राणा, पंसस जीतू ठाकुर और पवन सिंह सपरिवार उपस्थित रहे। उन्होंने पूरे विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। बताते चलें कि यह महायज्ञ पूरे नौ दिनों तक चलेगा, जिसका आयोजन वैदिक रीति-रिवाजों के अनुसार मुख्य आचार्य रामचंद्र पांडे एवं उनके सहयोगी ब्राह्मणों के नेतृत्व में संपन्न किया जाएगा।

उर्दू किसी खास धर्म की जुबान नहीं, भारतीय तहजीब का प्रतीक है : इरफान अंसारी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : अंजुमन तरक्की उर्दू हिन्द, झारखंड का पहला राज्य सम्मेलन पुरानी विधानसभा, रांची में आयोजित किया गया। सम्मेलन के पहले सत्र की अध्यक्षता राष्ट्रीय सचिव अतहर फारूकी ने की, जिसमें सम्मेलन के कंवेनर एम. जेड. खान ने कंवेनर रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट में अंजुमन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला गया। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि झारखंड सरकार के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि उर्दू किसी विशेष धर्म से नहीं जुड़ी, बल्कि यह एक भारतीय भाषा और तहजीब का प्रतीक है। उन्होंने उर्दू को उसका उचित सम्मान न मिलने पर चिंता जताई और कहा कि इस भाषा से प्रेम करने वालों की संख्या कम नहीं है। उन्होंने उर्दू शिक्षा को बढ़ावा देने पर भी बल दिया। इस सत्र में जालिब वतनी की पुस्तक उड़ान का विमोचन किया गया। इस अवसर पर सुशील साहिल (गोड्डा), मुफ्ती सईद आलम (गिरिडीह), हसन निजामी (धनबाद), जफरुल्लाह सादिक (हजारीबाग), जमशेद कमर (रांची) आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। भारतीय संविधान की प्रस्तावना उर्दू भाषा में डॉ. मोहम्मद रेहाना अली ने प्रस्तुत की। सभा को संबोधित करते हुए सुभाषिनी अली ने कहा कि उर्दू को उसकी सही पहचान तक पहुंचाने के लिए ठोस प्रयासों की जरूरत है। उन्होंने कहा कि उर्दू को केवल मुसलमानों की भाषा समझना एक बड़ी गलतफहमी है। इस भाषा की तरक्की के लिए इसे आर्थिक व्यवस्था से जोड़ने की जरूरत है और इसे जनप्रिय बनाने के लिए अधिक प्रयास करने होंगे। उन्होंने उर्दू साहित्य को अन्य भाषाओं में अनुवादित करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. यासीन अंसारी ने की, जबकि संचालन एम. जेड. खान ने किया। इस सत्र में सांसद महुआ माजी ने कहा कि हिन्दी और उर्दू का संबंध ₹मां और मौसी₹ की तरह है। सम्मेलन में झारखंड के 22 जिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वीना श्रीवास्तव, अपराजिता, एम. एल. सिंह, के. के. सिंह, सुशील साहिल, रेहाना, नजमा नाहिद, आलम आरा, फरहत जहां, शाजिया शबनम, डॉ. अंजार, मो. शकील, शोएब, कनक चौधरी आदि। यह सम्मेलन झारखंड में उर्दू भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। वक्ताओं ने उर्दू को नई पीढ़ी तक पहुंचाने, इसे शिक्षा प्रणाली में मजबूत करने और सामाजिक-आर्थिक विकास से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। सम्मेलन के दौरान उर्दू भाषा को अधिक मान्यता दिलाने के लिए विभिन्न सुझाव और संकल्प पारित किए गए। उल्लेखनीय है कि अंजुमन की स्थापना 1882 में हुई थी, और इससे महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, शिबली नोमानी जैसे महान विभूतियों का संबंध रहा है।

झारखंड भाजपा ने मनाई संत रविदास की 648वीं जयंती

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड भाजपा के अनुसूचित जाति मोर्चा के तरफ से आज 648वीं संत रविदास की जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पार्टी के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष डॉ रवीन्द्र कुमार राय, केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, पूर्व नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी, अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष किशुन दास, राज्यसभा सांसद अदित्य साहु और धनबाद से सांसद ढुल्लू महतो मौजूद रहे। बताया गया कि डॉ रविंद्र राय ने दीप जलाकर और संत रविदास की तस्वीर पर माला चढ़ाकर कार्यक्रम की शुरूआत की। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने कहा- संत शिरोमणि रविदास महाराज ने जात-पात, छुआछूत, ऊंच-नीच को भूलाकर इंसानियत के साथ समाज और देश को एक करने की प्रेरणा दी है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अनुसूचित जाति मोर्चा के माध्यम से अनुसूचित जाति समाज को आगे बढ़ाने का काम सिर्फ भारतीय जनता पार्टी ही कर रही है। वहीं मौके पर मौजूद कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष रविंद्र राय ने कहा कि भाजपा ने अनुसूचित जाति के बीच संगठन को मजबूत करने के लिए इस कार्यक्रम को आयोजन किया है। वहीं, कार्यक्रम में पूर्व नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने कहा कि संत रविदास ने आजीवन चर्मकार का ही कार्य किया लेकिन कभी भी मन में किसी प्रकार की कुंठा नहीं रखी, तिरस्कार का भाव नहीं रखा। चर्मकार का कार्य करते हुए खुद को संसार में स्थापित कर यह संदेश दिया कि यदि मन में लगन और भक्ति हो तो कोई भी व्यक्ति संत शिरोमणि बन सकता है। उन्होंने कहा कि एक राजा की बेटी मीराबाई को भी संत रविदास की शिष्या बनने का सौभाग्य मिला और वहीं से उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। उन्होंने बताया कि कैसे सिकंदर लोदी ने संत शिरोमणि रविदास की लोकप्रियता से घबरा कर उन्हें अपना धर्म बदलने का दबाव बनाया।

शिक्षा विभाग ने डाटा अपलोड न होने पर 952 स्कूलों के वेतन निकासी पर लगाई रोक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची जिला शिक्षा विभाग ने यू डायस प्लस पोर्टल पर छात्रों का डाटा अपलोड न होने पर स्कूलों के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर की है। विभाग ने शनिवार को स्कूलों को एक पत्र जारी किया, जिसमें कहा गया कि पिछले 6 महीनों के दौरान कई बार कायार्देश दिए गए थे। लेकिन इसके बावजूद डाटा अपलोड नहीं किया गया। इसके परिणामस्वरूप अब 952 स्कूलों के फरवरी माह के वेतन निकासी पर रोक लगा दी गई है। इनमें 865 शिक्षा विभाग द्वारा संचालित स्कूल और 87 गैर मान्यता प्राप्त अल्पसंख्यक स्कूल शामिल हैं। मिली जानकारी के अनुसार, विभाग ने स्कूलों को 18 फरवरी तक कार्य पूरा करने का निर्देश दिया है। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि अगर यह कार्य पूरा नहीं किया जाता है, तो फरवरी के वेतन निकासी पर रोक जारी रहेगी। झारखंड शिक्षा परियोजना रांची ने पत्र में यह भी कहा कि यदि बिना कार्य पूरा किए फरवरी का वेतन निकासी किया गया, तो यह विभागीय आदेश की अवहेलना मानी जाएगी। इसके लिए संबंधित प्राचार्य और व्यय पदाधिकारी पर कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा गैर मान्यता प्राप्त स्कूलों और निजी स्कूलों की मान्यता रद्द करने की कार्रवाई भी की जा सकती है। विभाग ने यह भी बताया कि गैर मान्यता प्राप्त स्कूलों के 32,114 विद्यार्थियों का डाटा अपडेट नहीं हुआ है, जिसके कारण उन छात्रों को 8वीं की बोर्ड परीक्षा में बैठने की अनुमति रद्द की जा सकती है। विभाग ने चेतावनी दी कि 2024-25 वेबसाइट कभी भी बंद हो सकती है। साथ ही कार्य पूरा न होने की स्थिति में छात्रों का पीईएन नंबर भी नहीं बनेगा, जिसके लिए स्कूल स्वयं जिम्मेदार होंगे।

स्कॉर्पियो खरीदने के बाद सवालों के घेरे में जयराम महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड के गिरिडीह जिले के डुमरी से जेएलकेएम के एकमात्र विधायक, जयराम महतो, हाल ही में अपनी कथनी और करनी के बीच अंतर को लेकर विवादों में घिर गए हैं। उन्होंने अपने नाम पर एक एस-11 स्कॉर्पियो गाड़ी (नंबर जेएच-10डीबी-1947) खरीदी है, जो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गई है। इससे पहले, विधानसभा के पहले सत्र के दौरान, जयराम महतो ने जोर देकर कहा था कि उन्हें विधायक भत्ता नहीं चाहिए और सभी विधायकों को आवास की बजाय क्वार्टर में रहना चाहिए। उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि विधायकों को आम जनता की तरह सरकारी बसों से विधानसभा आना चाहिए। अब, नई गाड़ी खरीदने के बाद, उनकी इन बयानों और वर्तमान क्रियाओं के बीच विरोधाभास पर सवाल उठ रहे हैं। गाड़ी खरीदने पर उठे सवालों के जवाब में, जयराम महतो ने स्पष्ट किया कि विधायक भत्ता प्राप्त करने के लिए उनके नाम पर गाड़ी होना आवश्यक है, इसलिए उन्होंने यह गाड़ी खरीदी। उन्होंने यह भी घोषणा की है कि फरवरी और मार्च महीने की अपनी सैलरी का 75% हिस्सा उन छात्र-छात्राओं में वितरित करेंगे, जो मैट्रिक और इंटर की परीक्षाओं में डुमरी के मेरिट लिस्ट में शीर्ष 10 में स्थान प्राप्त करेंगे। हालांकि, इस घोषणा के बाद भी, सोशल मीडिया पर उनकी कथनी और करनी के बीच सामंजस्य न होने के आरोपों पर बहस जारी है। इससे पहले भी, जयराम महतो बोकारो में बीएसएल क्वार्टर से संबंधित मामलों और विधानसभा सत्र के दौरान पत्रकारों के साथ व्यवहार को लेकर सुर्खियों में रहे हैं। इस पूरे प्रकरण से यह स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक जीवन में नेताओं की कथनी और करनी के बीच सामंजस्य होना आवश्यक है, ताकि जनता का विश्वास बना रहे।

राज्य में सशक्त वैचारिक और राजनीतिक माहौल तैयार करना है : सुदेश महतो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रविवार को केंद्रीय कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में आजसू पार्टी के अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो की उपस्थिति में सैकड़ों युवाओं और समाजसेवियों ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। इस मौके पर समाजसेवी आनंद राज, रोशन कुमार, गौतम सिंह, मुहर्रम सेंट्रल कमिटी के अध्यक्ष शफीकुल खान, संगठन मंत्री दानिश खान, डॉ. अखिलेश कुमार, अभय कुमार, रोहित गुप्ता समेत कई प्रमुख हस्तियां उपस्थित रहीं। सुदेश महतो ने इस अवसर पर कहा कि पार्टी का उद्देश्य राज्य में एक सशक्त वैचारिक और राजनीतिक माहौल तैयार करना है, जिससे संगठन की विचारधारा जन-जन तक प्रभावी ढंग से पहुंच सके। उन्होंने यह भी कहा कि समाज के हर वर्ग के लोगों का पार्टी से जुड़ना इस बात का संकेत है कि नए नेतृत्व को व्यापक स्वीकार्यता मिल रही है, जो चुनावी सीमाओं से परे है। मिलन समारोह में नगर केंद्रीय महासचिव डा. मुकुंद मेहता, संजय मेहता अध्यक्ष ज्ञान सिंहा, जिला उपाध्यक्ष डा. पार्थ परितोष, जिला सचिव दयाशंकर, मीडिया आयोजक अरबाज खान समेत कई अन्य नेताओं ने भी भाग लिया।

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के पांच नए कॉलेजों को मिला आईसीएआर एक्रीडिटेशन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की राष्ट्रीय कृषि शिक्षा एक्रीडिटेशन बोर्ड ने बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के पांच नए कॉलेजों को मान्यता प्रदान कर दी है। इन कॉलेजों के नाम हैं- तिलका मांझी कृषि महाविद्यालय, गोड्डा; रवींद्रनाथ टैगोर कृषि महाविद्यालय, देवघर; कृषि महाविद्यालय, गढ़वा; बागवानी महाविद्यालय, खूंटपानी, चाईबासा तथा कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, रांची बोर्ड ने आईसीएआर मुख्यालय, नयी दिल्ली में 27 जनवरी को हुई अपनी 38वीं बैठक में उच्च स्तरीय समीक्षा समिति की रिपोर्ट और अनुशंसाओं के आधार पर इन कॉलेजों को मान्यता प्रदान करने का निर्णय लिया। इन कॉलेजों का एक्रीडिटेशन हो जाने से अब यहां के छात्र-छात्राओं का देश के अग्रणी कृषि विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश अपेक्षाकृत आसान हो जाएगा, रोजगार बाजार में उनकी डिग्री की पूछ बढ़ेगी तथा आईसीआर इन कॉलेजों में शिक्षण एवं छात्र कल्याण सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए विकास अनुदान भी प्रदान कर सकेगा। एक्रीडिटेशन बोर्ड ने निर्देश दिया है कि इन कॉलेजों से संबंधित सेल्फ स्टडी रिपोर्ट तत्काल विश्वविद्यालय के वेबसाइट पर अपलोड किया जाय तथा बोर्ड को इसकी सूचना दी जाय। इन कॉलेजों में प्रतिवर्ष होने वाले नामांकन तथा शिक्षकों की उपलब्धता से संबंधित आंकड़ा भी संबंधित पक्षों की जानकारी के लिए वेबसाइट पर डाला जाएगा। विश्वविद्यालय इन कॉलेजों में शिक्षकों तथा तकनीकी और सपोर्टिंग स्टाफ की वर्तमान संख्या बनाए रखेगा तथा कॉलेजों में विद्यार्थियों के प्रवेश हेतु स्वीकृत सीटों की संख्या में कोई वृद्धि बिना बोर्ड की पूवार्नुमति के नहीं करेगा। इन कॉलेजों की स्थापना वर्ष 2017-18 में की गई थी किंतु आईसीएआर की शर्तें पूरी नहीं होने के कारण कॉलेजों और उनके यूजी पाठ्यक्रमों का एक्रीडिटेशन अबतक नहीं हो पाया था। इसे कुलपति डॉ एससी दुबे के एक वर्ष के कार्यकाल की महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। उन्होंने जनवरी 2024 में बीएयू के कुलपति का पदभार ग्रहण किया था। कुलपति ने इस उपलब्धि के लिए समस्त विश्वविद्यालय परिवार को बधाई दी है तथा राज्य सरकार एवं कुलाधिपति कार्यालय के संबंधित अधिकारियों के प्रति उनके सतत सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता प्रकट की है। ज्ञातव्य है कि इन कॉलेजों के कामकाज की समीक्षा एवं उनके प्रत्ययन के संबंध में अपना मंतव्य देने के उद्देश्य से आईसीएआर की पांच सदस्यीय विशेषज्ञ समिति ने पिछले 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक बिरसा कृषि विश्वविद्यालय मुख्यालय तथा इन कॉलेजों का दौरा किया था। समीक्षा समिति के अध्यक्ष कृषि एवं बागवानी विज्ञान विश्वविद्यालय, शिवमोगा, कर्नाटक के पूर्व कुलपति डॉ एमके नाइक थे।

एक नजर

सिविल कोर्ट रांची में विशेष लोक अदालत 22 को

रांची : विवाह एवं चेक अनादरण से संबंधित विशेष लोक अदालत का आयोजन रांची के सिविल कोर्ट में 22 फरवरी को किया जाएगा। झालसा के निर्देश पर न्यायायुक्त-सह-अध्यक्ष के मार्गदर्शन पर विवाह एवं चेक अनादरण को लेकर विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। 17 फरवरी से 21 फरवरी तक विवाह एवं चेक अनादरण से संबंधित मामलों पर बातचीत के लिए प्री-लोक अदालत की बैठकें आयोजित की जायेंगी। वहीं पारिवारिक न्यायालयों एवं एनआई एक्ट न्यायालय से वादकारियों को अधिक से अधिक नोटिस भेजा जा रहे हैं, ताकि अधिक से अधिक मामलों का निस्तारण किया जा सके। विशेष लोक अदालत की सफलता को लेकर 5 फरवरी को भी एडिशनल फैमिली कोर्ट के जज, राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में डालसा सचिव ने रांची के सभी थाना प्रभारियों के साथ डालसा हॉल में बैठक की थी और उन्हें कई निर्देश भी दिया था। उन्होंने सभी से अधिक से अधिक नोटिस का तामिला लोगों को कराने कहा है ताकि आगामी विशेष लोक अदालत में अधिक से अधिक मामलों का निस्तारण किया जा सके।

फ्लैट का ताला तोड़कर उड़ाए गहने और पांच लाख से अधिक कैश

रांची : राजधानी रांची में बढ़ती चोरी की घटनाएं प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल खड़ा कर रही है। अब पुलिस चोरों के आगे बेबस होती नजर आ रही है। पिछले एक सप्ताह में एक दर्जन से ज्यादा घरों में चोरी हो चुकी है, लेकिन फिर भी पुलिस अपराधियों तक नहीं पहुंच पाई है। अब ताजा मामला बरियातू थाना क्षेत्र के प्रह्लाद एन्क्लेव अपार्टमेंट का है, जहां चोरों ने दिन दहाड़े एक बड़ी चोरी को अंजाम दिया। बता दें कि प्रह्लाद एन्क्लेव में रहने वाले दो परिवार कुंभ स्नान के लिए प्रयागराज गए हुए थे। इसी मौके का फायदा उठाते हुए चोरों ने दोनों फ्लैटों का दरवाजा तोड़कर लाखों के गहने और 5 लाख से ज्यादा नकद पर हाथ साफ कर लिया। फ्लैट के मालिक संतोष कुमार मलिक और वीरेंद्र कुमार के घरों से चोरों ने सब कुछ लूट लिया। गहने, पैसे, और कीमती सामान—सब कुछ चोर लेकर फरार हो गए। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही वहीं, मामले की जानकारी मिलते ही बरियातू थाने के थानेदार मनोज कुमार और उनकी टीम तुरंत प्रह्लाद एन्क्लेव पहुंची, लेकिन चोरों का कोई सुराग नहीं मिला। सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं, लेकिन पुलिस के हाथ अभी तक कुछ खास नहीं लगा है। राजधानी रांची में चोरों का आतंक बढ़ता जा रहा है।

जेल अदालत-सह-विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन

रांची : झालसा के निर्देश पर न्यायायुक्त-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के मार्गदर्शन में रविवार को बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा होटवार में जेल अदालत-सह-विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में वरीय न्यायिक पदाधिकारी कुशेश्वर सिंकु के साथ मयंक मलयाज, मनोज कुमार इंदवार, शंभु महतो, डालसा सचिव कमलेश बेहरा, न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी प्रशांत वर्मा, कारापाल, काराकर्मी बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा होटवार, रांची और एलएडीसी चीफ प्रवीण कुमार श्रीवास्तव, डिप्टी चीफ राजेश कुमार सिन्हा, सहायक बिरेंद्र प्रताप, न्यायालयकर्मी और कई बंदी उपस्थित थे। विभिन्न न्यायालयों में लंबित मामलों के निष्पादन के लिए केंद्रीय कारा में 10 बंदियों का आवेदन जेल अदालत के लिए दिया गया था। इसमें से चार बंदियों को जेल अदालत का लाभ देते हुए कारा मुक्त किया गया।

संक्षिप्त खबरें

झारखंड उच्च न्यायालय के पहले मुख्य न्यायाधीश का निधन

रांची : झारखंड उच्च न्यायालय के पहले मुख्य न्यायाधीश, न्यायमूर्ति विनोद कुमार गुप्ता, का 15 फरवरी 2025 को निधन हो गया। उनका जन्म 10 सितंबर 1947 को हुआ था। न्यायमूर्ति गुप्ता ने दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून की डिग्री प्राप्त की और 1970 में दिल्ली उच्च न्यायालय में वकालत शुरू की। अपने करियर के दौरान, उन्होंने जम्मू और कश्मीर के महाधिवक्ता और केंद्रीय सरकार के वरिष्ठ स्थायी अधिवक्ता के रूप में भी सेवाएं दीं। 1990 में, उन्हें जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया गया, और 1996 में उनका स्थानांतरण कलकत्ता उच्च न्यायालय में हुआ। 15 नवंबर 2000 को, झारखंड उच्च न्यायालय की स्थापना के साथ, वे इसके पहले कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश बने, और 5 दिसंबर 2000 को स्थायी मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली। बाद में, उन्होंने हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय और उत्तराखंड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में भी कार्य किया। न्यायमूर्ति गुप्ता के निधन से न्यायिक समुदाय में शोक की लहर है, और उनके योगदान को हमेशा स्मरण किया जाएगा।

कर्मियों के बच्चों की स्कूल फीस माफ कराए प्रबंधन : संघ

रांची : एचईसी मजदूर संघ की बैठक रविवार को रांची के धुर्वा स्थित क्वार्टर नंबर सीडी 241/3 में सुनील कुमार पांडे की अध्यक्षता में हुई। बैठक में उपस्थित एचईसी के कर्मचारी और संघ के सदस्यों ने एचईसी की समस्याओं को लेकर गहन विचार विमर्श किया। बैठक में संघ के महामंत्री रमा शंकर प्रसाद ने कहा कि एचईसी समय पर वेतन नहीं दे रहा है। इससे कर्मियों की स्थिति काफी दयनीय हो गई है। प्रबंधन पर कर्मियों के 25 माह का वेतन बकाया है। उन्होंने कहा कि कर्मी अपने बच्चों की स्कूल फीस भी नहीं दे पा रहे हैं। इसके चलते स्कूल से उन्हें बार-बार नोटिस दिया जा रहा है। मौके पर संघ के अन्य? सदस्यों ने कहा कि एचईसी परिसर में जितने भी स्कूल हैं, उनसे प्रबंधन बात कर 100 प्रतिशत फीस माफ कराए। राज्य के अन्य पीएसयू भी अपने कर्मचारियों को इस तरह की सुविधाएं देते हैं। साथ ही कहा गया कि कारखाने की सभी मशीनों का अधिक से अधिक उपयोग हो। इस पर निदेशक, उत्पादन से बात करने की जरूरत है। ताकि, ज्यादा से ज्यादा वर्क ऑर्डर आए। बैठक में रमाशंकर प्रसाद, जीतू लोहरा, सुनील कुमार पांडे, सुनील कुमार, सरोज कुमार, राजेश सोनी, संजय कुमार, मनोज कुमार, उदय शंकर, घनश्याम ठाकुर, अनिल तिवारी, सुधीर कुमार चौधरी और मनोज कुमार समेत संघ के अन्य सदस्य मौजदू थे।

श्री राधा कृष्ण सेवा धाम मंदिर में 194वां अन्नपूर्णा महाप्रसाद का हुआ आयोजन

रांची : श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम ट्रस्ट द्वारा संचालित पुंदाग मे श्री कृष्ण प्रणामी मंगल राधिका सदानंद सेवा धाम में 194 वाँ श्री कृष्ण प्रणामी अन्नपूर्णा सेवा महाप्रसाद का आयोजन किया गया है। महाप्रसाद में 151 किलोग्राम की केसरिया मेवा युक्त खीर का भोग भगवान श्री राज श्याम जी को विधिवत भोग पुजारी अरविंद पांडे द्वारा लगाया गया। तथा पूरे विधि विधान से पूजा- अर्चना एवं आरती की गई। आज का महाप्रसाद स्व.नरेंद्र जैन तथा स्व. कुसुम जैन की पुण्य स्मृति में उनके पुत्र ऋषभ जैन व पुत्रवधू जिमी जैन के सौजन्य से किया गया। मंदिर परिसर में उपस्थित 3 हजार से भी अधिक श्रद्धालुओं के बीच महाप्रसाद भोग का वितरण किया गया। तत्पश्चात भजन- कीर्तन का आयोजन किया गया। ट्रस्ट के भजन गायक मनीष सोनी ने अपने मनमोहक सुमधुर भजनों की अमृत गंगा का रसपान कराते हुए श्रोताओं को खूब झुमाया। तथा पूरा वातावरण को कृष्णमय एवं भक्तिमय बना दिया। ट्रस्ट के प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने बताया कि संस्था द्वारा श्री कृष्ण प्रणामी सेवा धाम श्री राधा कृष्ण मंदिर परिसर मे आज 194 वें अन्नपूर्णा सेवा महाप्रसाद का आयोजन था।आज सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। तथा भगवान श्री राधा कृष्ण मंदिर मे लगभग 5 हजार से भी अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। इस अवसर पर-ट्रस्ट के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष निर्मल जालान, राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, सचिव मनोज चौधरी, पूरणमल सर्राफ, धीरज कुमार गुप्ता,अशोक ठाकुर सहित बड़ी संख्या में महिलाएं, पुरुष उपस्थित थे।

जेपीएससी-2 में सीबीआई द्वारा मांगी गई अभियोजन की स्वीकृति अविलम्ब दे सरकार : विजय शंकर

रांची : उपरोक्त बाते रविवार को आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केन्द्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व विधायक प्रत्याशी विजय शंकर नायक ने रविवार के दो डीएसपी के अलावे इकत्तीस के खिलाफ सीबीआई ने राज्य सरकार से अभियोजन स्वीकृति मांगे जाने पर आज अपनी प्रतिक्रिया में कही। इन्होंने आगे कहा कि जेपीएससी 2 नियुक्ति घोटाला की जांच करने में ही सीबीआई को 12 वर्षो से अधिक लगे तब जांच पूरी हुई है और उसके बाद आरोप पत्र दायर की गई है। सीबीआई ने इस नियुक्ति घोटाले की जांच बहुत ही गंभीरता के साथ-साथ वैज्ञानिक तरीकों से किया और सीबीआई ने अभियुक्तों के खिलाफ भारतीय आईपीसी की धारा 420 ,120 बी भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 की धारा 13 (2) सहपाठी धारा 13 (1) डी के तहत कार्रवाई करने का अनुरोध किया है। नायक ने आगे बताया कि आरोप पत्र मे जेपीएससी के तत्कालीन पदाधिकिरियों परीक्षकों और तत्कालीन परीक्षार्थियों द्वारा सुनियोजित साजिश रचकर अयोग्य लोगों को परीक्षा में सफल घोषित करने का षडयंत्र रचने का आरोप लगाया गया हैं। नायक ने यह भी कहा कि यह आक्रोश का विषय है कि जिन दागी आरोपियों को सरकार के द्वारा जिन्हें सेवा से बर्खास्त किया जाना चाहिए उनमे से कई लोगों को आईपीएस में प्रोन्नति देने के लिए यूपीएससी को अनुशंसा भेजी गई है जो सरकार की मंशा को जग जाहिर कराता है। नायक ने यह भी कहा कि जेपीएससी 1 एवं 2 की परीक्षा में तत्कालीन आयोग के अध्यक्ष, सदस्य, विधायक, मंत्री, पूर्व मंत्री और वकील के रिश्तेदारों ने अपने अपने रिश्तेदारों को नियुक्त कराया इसलिए जनता खासकर राज्य के युवाओ को हेमंत सरकार से आशा है कि भाजपा के कार्यकाल मे हुए इस घोटाला का पदार्फाश करने एवम राज्य के मेधावी युवाओ को न्याय दिलाने के लिए बिना लाग लपेट देरी किए बिना अविलंब अभियोजन स्वीकृति सीबीआई को दे दिया जाए और भ्रष्टाचार के विरुद्ध सरकार अपनी प्रतिबध्दता दिखाए अन्यथा विलम्ब होने की दिशा मे आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच आन्दोलन करने को बाध्य होगी।

एक नजर

गण्यमान्य समाज संगठन सम्मेलन हुआ संपन्न

बोकारो : गण्यमान्य समाज संगठन के द्वारा पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत स्थान सेक्टर 8 सी बोकारो इस्पात नगर में गन्यमान्य समाज संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मदन मोहन महतो के अध्यक्षता,एवं मुख्य अतिथि हिटलर सिंह अवर सचिव कोयला मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली के गरिमामई उपस्थिति में सम्मेलन का कार्यक्रम संपन्न हुई सर्वप्रथम मुख्य अतिथि को गुलदस्ता एवं शाल ओढाकर सम्मानित किया गया सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि हिटलर सिंह ने कहा जीएसएस देश के विभिन्न राज्यों में गरीब वंचित असहाय वर्ग को हर स्तर पर सहयोग करते हुए मुख्य धारा में जोड़ने का लगातार प्रयास कर रही है जीएसएस नई दिल्ली से निबंधित समाजसेवी संगठन है यह संगठन देश हित में मुख्य धारा से अलग हाशिये में पड़े वंचित तबके को शिक्षा रोजगार महिला बाल विकास स्वरोजगार के माध्यम से सशक्त करने हेतु समाज सेवा की ओर अग्रसर है । श्री मदन मोहन महतो ने कहा जीएसएस भारत के उत्तर प्रदेश राजस्थान दिल्ली महाराष्ट्र गुजरात मध्य प्रदेश बिहार झारखंड हरियाणा पंजाब छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में किसान, मजदूर के बीच शिक्षा के माध्यम से सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षणिक बौद्धिक आर्थिक रूप से सशक्त करने के लिए तथा अंधविश्वास पाखंडवाद रूढ़िवादी परंपरा के खिलाफ जागरूकता लाने की प्रयास किया जा रहा है सम्मेलन में सर्वसम्मति से सदस्य बनाने का निर्णय लिया गया तथा सभी जिलों में संगठन का विस्तार प्रखंड पंचायत एवं मोहल्ले तक करने का आह्वान किया कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जयप्रकाश महतो संजय शान,राजू कुशवाहा,विष्णु प्रसाद, दशरथ महतो,विजय कुमार महतो, अवधेश कुमार सिंह ,राजू महतो, ऋषिकेश कुमार ,अगम महतो आदि उपस्थित रहे ।

नेतृत्व क्षमता विकसित करने को लेकर किशोरियों का एक्सपोजर विजिट

बोकारो : बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति के खिलाफ जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से सहयोगिनी बोकारो द्वारा चलाए जा रहे अभियान के तहत धनबाद के बाघमरा प्रखंड के महुदा पहुंचीं। यह दौरान एक्सपोजर विजिट के तहत जेजीवीटी संस्था के किशोरियों से बाल विवाह रोकने से जुड़ी पहल और प्रयासों की जानकारी प्राप्त की। महुदा में आयोजित कार्यक्रम के दौरान किशोरियों को बाल विवाह के दुष्प्रभावों और इसके सामाजिक असर से अवगत कराया गया। इस दौरान हल्ला-बोल/ आवाज-दो कार्यक्रम के तहत बाल विवाह से उत्पन्न समस्याओं और उनके समाधान पर चर्चा की गई। धनबाद और बोकारो की किशोरियों ने अपने-अपने अनुभव साझा करते हुए इस प्रथा के खिलाफ आवाज बुलंद करने का संकल्प लिया।

चन्दनकियारी के हर क्षेत्र में होगा विकास : उमाकांत

बोकारो : चन्दनकियारी विधानसभा के हर क्षेत्र में होगा विकास। उक्त बातें पूर्व मंत्री सह विधायक उमाकांत रजक ने चास प्रखंड के कोलबेन्दी में आयोजित अभिनंदन समारोह में कही। समारोह की अध्यक्षता अमृत बाउरी एवं संचालन सोमनाथ बनर्जी एवं बंशीधर बाउरी ने संयुक्त रूप से की। विधायक उमाकांत रजक ने कहा कि क्षेत्र में शिक्षा,स्वास्थ्य,सडक,रोजगार सहित अन्य मूलभूत सुविधा के लिए रोडमैप तैयार किया जा रहा है। क्षेत्र के हर समस्याओ का सरल एवं सहज तरीके से निदान करने को प्रयासरत रहूंगा। उन्होनें कहा कि मैने जो नया चन्दनकियारी बनाने का संकल्प लिया हूं,उस पर शत प्रतिशत खरा उतरने प्रयास करूंगा।

कर्त्तव्य, एकता, संघर्ष, परिवर्तन और अधिकार हीं हमारा मूल मंत्र : राजेंद्र सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : क्रान्तिकारी इस्पात मजदूर संघ का 13वां एकदिवसीय द्विवार्षिक महासम्मेलन बोकारो इस्पात नगर के जनवृत 02 कला केन्द्र में लगभग पांच हजार प्रतिनिधियो द्वारा ध्वनिमत से पारित 26 सूत्री प्रस्ताव के साथ सम्पन्न हुआ। महासम्मेलन मे सेल/बोकारो इस्पात संयंत्र तथा सेल के विभिन्न माइंस से आये हुए प्रतिनिधियो ने वर्तमान समस्याओ, संगठन विस्तार एवं अगले दौ वर्ष युनियन की रणनीति पर गहन विचार मंथन किया। हालाँकि युनियन की अध्यक्ष पूर्व विधायक झरिया विधानसभा पूर्णिमा सिंह महासम्मेलन में परिजन के चिकित्सीय कारणो से उपस्थित नही हो सकी। श्रीमती सिंह ने दूरसंचार पर अपनी अनुपस्थिति के लिये खेद व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे बहुत दुख है कि मजदूरो के इस ऐतिहासिक महासम्मेलन का हिस्सा नही बन पायी। महासम्मेलन मे पारित सभी प्रस्ताव पर मेरी सहमति है। महासम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित स्टील,मेटल एंड इंजीनियरिंग वर्कर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय महामन्त्री सह-सदस्य एनजेसीएस श्री संजय बढ़ावकर ने अपने संबोधन मे कहा कि प्रबंधन का विगत चार वर्षो मे मजदूरो के प्रति नकारात्मक रवैया चिन्ताजनक है। आर पार की लड़ाई का वक्त आ चुका है।श्रम कानून मे परिवर्तन और संगठित क्षेत्र मे घटती रोजगार से सरकार एवं प्रबंधन की मंसूबों को भली-भाँति समझा जा सकता है। क्रान्तिकारी इस्पात मजदूर संघ मे महिलाओ एवं युवाओ की बढ़ती भागीदारी उत्साहित करने वाला है। वेज रिवीजन का ट.ड.व.हुए चार वर्ष बीत चुके हैं मगर अब तक समझौता नहीं होना प्रबंधन के द्वारा एनजेसीएस की एकता को तोडने की साजिश है। ठेका मजदूरो के सुरक्षा से समझौता और मिनिमम वेज ना मिलना बेहद चिन्ताजनक है। वहीं पूर्व अध्यक्ष स्व बच्चा सिंह के निधन से आहत एवं पूर्णिमा नीरज सिंह का युनियन अध्यक्ष के रूप में मनोनयन से उत्साहित युनियन के महामन्त्री सह-सदस्य एनजेसीएस राजेंद्र सिंह ने व्यापक रूप से पिछले दौ वर्ष में युनियन की गतिविधियों के साथ-साथ अगले दौ वर्ष की रणनीति पर विचार रखा।श्री सिंह ने कहा कि एक ओर वर्ष 2000 से लगातार युनियन अध्यक्ष के रूप में युनियन के मार्गदर्शक स्व बच्चा सिंह का निधन ना सिर्फ युनियन के लिये अपितु व्यक्तिगत रूप से मेरे लिये एक अपूरणीय क्षति है। वहीं दूसरी ओर पूर्णिमा नीरज सिंह को अध्यक्ष के रूप मे पाकर बेहद उत्साहित हैं। श्री सिंह ने कहा कि वैश्वीकरण, निजीकरण और सरकार की मुनाफा नीति का सबसे अधिक आघात सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानो पर हुआ है।

पासवान समाज ने किया पारिवारिक वनभोज का आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : सिटी पार्क वन भोज स्थल में रविवार को पासवान समाज के द्वारा पारिवारिक वनभोज सह मिलन समारोह आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में समाज के सदस्यों महिलाओं एवं बच्चों ने भाग लिया। इस तरह का वार शक पिकनिक प्रत्येक वर्ष हम लोगों द्वारा मनाई जाती है। इसमें या पता चलता है कि हम लोगों के समाज में बच्चों लोगों की क्या प्रोग्रेस हुई है एक दूसरे का सुख-दुख का भी पता चलता है पासवान समाज द्वारा सेक्टर 4 में हम लोगों के भगवान बाबा चौहरमल की भी प्रतिमा की स्थापना की गई है जो की प्रत्येक वर्ष चैत माह के पूर्णिया में धूमधाम से बाबा चौहरमल की पूजा अर्चना की जाती है इस पूजा में काफी संख्या में समाज के साथ साथ सभी वर्ग के लोग भी पूजा में सम्मिलित होते हैं इस पिकनिक से हम लोग यह संदेश देना चाहते हैं कि अगर किसी भी समाज का लोग मजबूत होता है तो हमारे देश एवं लोकतंत्र को और मजबूती मिलती है।

सरकार राज्य के विकास और नागरिकों के कल्याण की दिशा में कर रहा है काम : मंटू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : झारखंड मुक्ति मोर्चा बोकारो महानगर क्षेत्र के विभिन्न शाखा कमिटीयों में बैठक हुई। बैठक को संबोधित करते हुए बोकारो महानगर प्रमुख मंटू यादव ने कहा कि हेमंत सरकार राज्य के विकास और नागरिकों के कल्याण की दिशा में काम कर रही हैं झामुमो नेता मंटू यादव ने कहा कि पार्टी का लगातार जनाधार बढ़ रहा है संगठन के एक-एक कार्यकर्ता सदस्यता अभियान को व्यापक स्तर पर चलते हुए प्रत्येक घर में सदस्य बनाने का लक्ष्य लेकर चल रहा है। पार्टी के प्रत्येक शाखा कमेटी और वार्ड में अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित हो ताकि सभी लोग मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा चलाए जा रहे कल्याणकारी योजनाओं से अवगत हो सकें। बैठक में आज बालीडीह शाखा कमेटी के अध्यक्ष-बिंदेश्वरी घटवार, उपाध्यक्ष-ज्वाला सिंह, मो० मकसूद आलम देवनारायण सिंह, सरिता देवी, सचिव- भोला टुडू, कोषाध्यक्ष- सचिन सिंह, संगठन सचिव-मो० पालन हक्कानी, कमीर्डीह शाखा अध्यक्ष- विनोद बिहारी, उपाध्यक्ष- चंदन यादव, सचिव- रवि कुमार, कोषाध्यक्ष-बबलू अंसारी, उप सचिव- धनंजय कर्मकार, बीयाडा औद्योगिक क्षेत्र शाखा के अध्यक्ष- प्रमोद कुमार गुप्ता सचिव-नजीर अंसारी, उपाध्यक्ष-चंदन कुमार, कोषाध्यक्ष- संतोष सिंह, संगठनसचिव - अजय सिंह, माराफारी शाखा अध्यक्ष-आलम अंसारी, उपाध्यक्ष- पीयूष कुमार, आलम अंसारी, संजय प्रसाद, त्रिभुवन प्रसाद, बलजीत कुमार, मनोहर प्रसाद, रितिक कुमार, विजय कुमार, साहब सिद्दीकी, लालू राय, सत्येंद्र यादव, रामाधार सिंह, अमित रंजन, उपेंद्र कुमार,अमन यादव, वीरेंद्र गुप्ता इत्यादि उपस्थित थे।

कोयला चोरी बंद नही कराई गई तो बीसीसीएल अंजाम भुगतने के लिए रहे तैयार : चंद्र प्रकाश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : बाघमारा खानूडीह बसंती चौक पर रविवार को ग्रामीण अधिकार मंच के बैनर तले जन समस्याओ को लेकर सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने जनता दरवार का आयोजन किया। कार्यक्रम में स्थानीय लोगो ने पहुंच कर अपनी समस्याओ से सांसद को अवगत कराया। साथ ही सांसद से लोगो ने शिकायत किया कि बीसीसीएल मनाने तरीके से अवैध कोयला चोरी करवा रही है। मुख्य रूप से विस्थापित लोगो को उनका अधिकार नही दिया जा रहा है। पानी, बिजली की समस्या का मुख्य कारण बीसीसीएल की मनमानी है। स्थानीय लोगो की समस्याओ को सुनने के बाद सांसद ने लोगो को आश्वासन दिया कि जल्द उनकी समस्याओ का निदान किसी भी स्तर से कराई जाएगी। वहीं सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने बीसीसीएल प्रबंधन को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि अगर कोयला चोरी बंद नही कराई गई तो इसका अंजाम भुगतने के लिए आगे तैयार रहें। वहीं उन्होंने बीसीसीएल प्रबंधन को चेताया कि स्थानीय विस्थापित लोगो की मांगों को अगर बीसीसीएल नही मानती है तो इसका अंजाम बुरा होगा। उन्होंने कहा कि यहां के विस्थापितों को भारत सरकार के द्वारा बनाए गए नियमों के आधार पर लोगो को मुआवजा तथा नौकरी देनी होगी। विस्थापितों की समस्याओ तथा कोयला चोरी पर अगर बीसीसीएल सक्रीय नही हुई तो आगे चरणबद्ध तरीके से आन्दोलन होगा। ब्लॉक वन,टू एरिया से लेकर पूरे बाघमारा बीसीसीएल में पूरी तरह से चक्का जाम कर दिया जाएगा। उनके प्रोडक्शन को पूरी तरह से ठप कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा मामले को लेकर केन्द्रीय कोयला मंत्री से भी शिकायत की जाएगी। वहीं सांसद ने स्थानीय लोगो को संयम के साथ अपनी मांगो को लेकर सक्रीय रहने के निर्देश भी दिए। मौके पर जिला सांसद प्रतिनिधि सुभाष रवानी, गोपाल महतो, खानू महतो, शंकर महतो, सीताराम सोरेन, राजेश महतो, पिंकू पांडेय आदि मौजूद थे।

ठाकुर अनुकूल चन्द्र का 137वां जन्म उत्सव धूमधाम से मनाया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : मुराईडीह कॉलोनी नेहरू क्लब के कमिटी हाल में श्री श्री ठाकुर अनुकुलचंद्र जी के 137 वॉ जन्म उत्सव धूमधाम से मनाया गया इस कार्यक्रम में सद्गुरु श्री श्री ठाकुर अनुकूल चंद्र जी के जीवन के बारे में जानकारी दी गई कार्यक्रम के शुभआरंभ भजन कीर्तन से की गई इस अवसर पर मुख्य अतिथि बाघमारा विधायक शत्रुघ्न महतो मुख्य रूप शामिल होकर सभी भक्तों के साथ बैठकर भजन कीर्तन किए समस्त क्षेत्रीय सत्संगी परिवार के लोग शामिल हुए मुराईडीह पोचरी सिनवाटांड जोगीडीह वरोरा डुमरा हरिणा निश्चितपुर भीमकनाली बाघमारा चिटाही सिनीडीह के सदस्यों सहित काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया एवं प्रसाद ग्रहण की भंडारा का भी आयोजन किया गया था कार्यक्रम को सफल बनाने में डीके राय अमर बाउरी आनंद बाउरी भीष्म बाउरी दुलाल बाउरी भीमलाल मिस्त्री जादू नाथ मंडल बेदी विदेशी कर्मकार सुनील बाउरी आस्तिक बाउरी बप्पी राय विकास मित्र आदि शामिल थे।

नो एंट्री में घुसे तेज रफ्तार ट्रक ने महिला को रौंदा, बेटी गंभीर रूप से हुई घायल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : धनबाद के रांगाटांड़ स्थित श्रमिक चौक पर रविवार सुबह एक दर्दनाक हादसा हो गया। नो एंट्री में घुसे तेज रफ्तार ट्रक ने सड़क पार कर रही महिला और उसकी बेटी को कुचल दिया। हादसे में महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसकी 15 वर्षीय बेटी गंभीर रूप से घायल हो गई। उसे इलाज के लिए एसएनएमएमसीएच में भर्ती कराया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, आज सुबह करीब 7 बजे लगभग 40 वर्षीय महिला अपनी 15 वर्षीय बेटी के साथ धनबाद रेलवे स्टेशन की तरफ जाने के लिए सड़क पार कर रही थी। तभी पूजा टॉकीज की तरफ से आ रहे एक तेज रफ्तार ट्रक ने महिला और उसकी बच्ची को रौंद दिया। जिससे महिला की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि उसकी बेटी बुरी तरह से घायल हो गई। घटना के बाद मौके पर मौजूद पुलिस ने घायल बच्ची को इलाज के लिए एसएनएमएमसीएच भेजा और महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए ले गई। बताया जा रहा है कि ट्रक पर डीएवी पुराना बाजार स्थित माँ तारा ट्रांसपोर्ट का माल लदा था और ट्रक वहीं जा रहा था। घटना के बाद से ट्रक का ड्राइवर फरार बताया जा रहा है। वहीं मौके पर जुटे स्थानीय लोगों ने बताया कि यह घटना पुलिस की लापरवाही की वजह से घटी है। वरना शहर में जब नो एंट्री है तो यह तेज रफ्तार ट्रक रांगाटांड़ जैसे भीड़भाड़ वाले जगह पर कैसे घुसा। उन्होंने बताया कि ट्रक का ड्राइवर लगातार अपना संतुलन खो रहा था। जिस वजह से ट्रक लगातार जहां तहां टकराता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था और अंततः ट्रक ने महिला और उसकी बच्चे को कुचल डाला।

संक्षिप्त खबरें

रेलवे स्टेशन पर नाबालिग का किया गया रेस्क्यू

बोकारो : बोकारो के रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ पोस्ट बोकारो और एएचटीयू टीम बोकारो के ड्यूटी अधिकारी और कर्मचारियों द्वारा बोकारो स्टील सिटी रेलवे स्टेशन की जांच की जा रही थी। मौके पर जांच कराने के दौरान एसआई अरुणा उरांव, एएसआई आर बी यादव, मेरी सहेली टीम और एएचटीयू टीम लगभग 2 :30 बजे बोकारो स्टील सिटी रेलवे स्टेशन के चाइल्ड हेल्प डेस्क के पास प्लेट फॉर्म संख्या 1 पर एक नाबालिग लड़की को देखा, जो लक्ष्यहीन और परेशान हालत में घूम रही थी। पूछने पर उसने अपना नाम उम्र 14 वर्ष पता मुरुद टोला,पोस्ट-सिवानडीह, पोस्ट-सेक्टर-12, जिला-बोकारो की रहने वाली बताया । इसके अलावा, उसने यह भी कहा कि वह अपने परिजनों को बिना सूचना दिए घर से भाग कर बोकारो रेलवे स्टेशन पहुंच गई। उसके पास न ही कोई यात्रा करने का टिकट है। इसलिए, बचाई गई नाबालिग लड़की को उसकी सुरक्षित अभिरक्षा और आगे की आवश्यक कानूनी कार्रवाई के लिए चाइल्ड हेल्प डेस्क, बोकारो को सौंप दिया गया।

ओएनजीसी ने संरक्षण क्षमता महोत्सव वॉकाथन का किया आयोजन

बोकारो : ओएनजीसी सीबीएम परिसंपत्ति, बोकारो द्वारा संरक्षण क्षमता महोत्सव 2024-25 के तहत 16 फरवरी की सुबह वॉकाथन आयोजित किया गया, जिसमें कर्मचारी एवं समुदाय के सदस्य ईंधन संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए एकत्रित हुए। इस रैली की अगुवाई सीबीएम परिसंपत्ति के परिसंपत्ति प्रबंधक श्री आदित्य जौहरी ने की, जिनके साथ ओएनजीसी के अन्य कर्मचारी भी उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम का आयोजन कार्बन फुटप्रिंट को कम करने और स्वच्छ ईंधन को अपनाने के महत्व के बारे में लोगों को शिक्षित करने और जागरूकता फैलाने के लिए किया गया। संरक्षण क्षमता महोत्सव 2024-25 का उद्देश्य जीवाश्म ईंधन के स्मार्ट और अधिक जिम्मेदारीपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देकर सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण और भावी पीढ़ियों के लिए ऊर्जा संरक्षण में सहायक व्यवहारिक परिवर्तन को प्रेरित करना है।

स्टेडियम में पत्रकार एकादश ने कोल माइंस वर्क्स यूनियन को 01 रन से किया पराजित

धनबाद : सिजुआ स्टेडियम में पूर्व सांसद कॉमरेड ए के राय कर पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि सभा के बाद सिजुआ स्टेडियम में दोस्ताना क्रिकेट मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुये पत्रकार एकादश की टीम ने 60 रन बनाये। जबाब में दूरी टीम निर्धारित 10 ओवर में 59 रन ही बना सकी। टॉस जीतने के बाद पत्रकार एकादश की टीम ने खेलते हुये पत्रकारदय जितेन्द्र कुमार जीतु ने धमाकेदार 1 छक्के व 4 चौके की मदद से नाबाद 28 रन व समर शक्ति सिंह ने 1 छक्के के साथ 16 रन नाबाद ,जबकि प्रदीप मोदक व विजय भुइँया ने 8/ 8 रन बनाकर व सुशील चौरसिया शून्य पर आउट हुये कुल 60 रन के जबाब में कोल माइंस वर्क्स यूनियन सह आयोजन समिति के ओर से बल्लेबाजी करते हुये राज कुमार चौहान ने 2 छक्के व 2 चौके की मदद से 20 रन,त्रिपुरारी ने 1 धक्के 2 चौके के साथ 20 रन,पप्पू पंडित 8,भोला सिंह 2 ,ब्रजेश सिंह 5,लखेन्द्र पासवान 4 व ब्रह्मदेव साव शून्य पर रहे। खेल के बाद अतिथियों ने दोनों टीम को मोमेंटो देकर सम्मानित किया। इससे पूर्व श्रद्धांजलि समारोह में पोलित बयूरो के हलधर महतो,आरएसएस के पंकज सिंह, पवन महतो,क्षेत्रीय अध्यक्ष अशोक यादव,तत्कालीन पार्षद छोटू सिंह,मूखिया संतोष महतो,राजद नेता भोलू यादव, ऑ३४ केंद्रीय उपाध्यक्ष कृष्णा सिंह,सीएमडब्लूयू के महामंत्री भोला सिंह,कामता नोनिया, बृजेश सिंह,परदेशी चौहान, सुधीर सुमन, मधु सूदन वर्मा, अशोक कुमार,लखेन्द्र पासवान, मुखराम रवानी, सरोज सिंह,राज कुमार चौहान, विकास सिंह, ब्रह्मदेव साव सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सफलता शिक्षक, अभिभावक एवं छात्रों के संयुक्त परिश्रम का परिणाम : सहदेव महतो

धनबाद : संकल्प एजुकेशन अंगार पथरा में रविवार को शिक्षा से समृद्धि की ओर नामक अभिभावक जागरूकता अभियान का शुभारंभ संकल्प एजुकेशन के निदेशक सहदेव महतो ने दीप प्रज्वलित कर किया अभिभावकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सफलता शिक्षक, अभिभावक एवं छात्रों का सामूहिक प्रयास का परिणाम होता है हम सभी को अपना-अपना दायित्व पूरे मन से करना चाहिए। वर्तमान समय में शिक्षा का महत्व विशेष है। शिक्षा के बिना हम समृद्धि की कल्पना कर ही नहीं सकते। शिक्षा ही एक मात्र हथियार है जो हमारे जीवन को परिवर्तित कर सकता है अतः हम सब को सोच समझकर शैक्षिक निर्णय लेना चाहिए ठीक ही कहा गया है पूत सपूत तो क्या धन संचय पूत कपूत तो क्या धन संचय। मौके पर संकल्प एजुकेशन के प्रबंध निदेशक मनोरमा देवी शिक्षक शैलेंद्र यादव, कुणाल कुमार शर्मा, सुभाष ऋषि, निहाल रंजन ,मानसी कुमारी,लवली कुमारी, अभय कुमार, हरेंद्र कुमार रवानी, भवानी कुमार महतो,रिद्धि शर्मा, आदित्य शर्मा,लक्ष्मण कुमार, दया कुमार दास, यश महतो, अक्षत कुमार एवं उनके अभिभावक गण उपस्थित थे।

एक नजर

गुरुनानक हॉस्पिटल ने टीकर में लगाया स्वास्थ्य शिविर

चांडिल : गुरुनानक हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर प्राइवेट लिमिटेड, मानगो जमशेदपुर के द्वारा रविवार को माँ अन्नपूर्णा नर्सिंग होम में एक मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्देश्य जनहित में स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाना और जरूरतमंदों को मुफ्त चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना था। शिविर में विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने मरीजों को परामर्श दिया और उनकी स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान किया। इसमें जनरल फिजीशियन डॉ. राजन कुमार बर्णवाल, हड्डी रोग विशेषज्ञ साकिब हुसैन, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. शिखर दीप जैन, ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. रोहित झा शामिल थे। गुरुनानक हॉस्पिटल की ओर से मरीजों के लिए मुफ्त शुगर जांच, पीएफ जांच और दवाओं का वितरण किया गया। इस चिकित्सा शिविर में कुल 245 मरीजों ने भाग लिया और चिकित्सा सेवाओं का लाभ उठाया। इसकी जानकारी अस्पताल के प्रबंधक राजपाल सिंह ने दिया।

हजारीबाग व धनबाद में चलाया गया टिकट चेकिंग अभियान

सरिया (गिरिडीह): सरिया स्थित हजारीबाग रोड रेलवे स्टेशन समेत पूरे धनबाद मंडल में बड़े पैमाने पर टिकट चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। उक्त जानकारी धनबाद मंडल के वरीय मंडल वाणिज्य प्रबंधक एवं वरीय जनसंपर्क अधिकारी अमरेश कुमार ने दिया। इन्होंने बताया कि इसी क्रम में शनिवार को धनबाद मंडल में मेगा टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया जिसके अंतर्गत मंडल के विभिन्न खण्डों के साथ-साथ धनबाद, गोमो, चन्द्रपुरा, कोडरमा, हजारीबाग रोड, डाल्टनगंज, चोपन, बरकाकाना, सिंगरौली स्टेशनों में भी गहन टिकट चेकिंग की गयी यह मेगा टिकट चेकिंग अभियान शनिवार को दिन- रात चलाया गया। इस जांच अभियान के दौरान कुल 876 यात्रियों को पकड़ा गया। इस जांच अभियान में बिना टिकट यात्रा कर रहे यात्री, बिना उचित प्राधिकार के यात्रा करने वाले यात्री, बिना बुक किये गए सामान के साथ यात्रा कर रहे यात्रियों से 04 लाख 44 हजार 435 रूपए जुमार्ने के रूप में वसूली गई व उन्हें कड़ी हिदायत दी गई। चेकिंग टीमों द्वारा स्टेशनों एवं विभिन्न मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों में भी चेकिंग किया गया। धनबाद मंडल द्वारा निरंतर टिकट जांच की जा रही है तथा भविष्य में भी यह जारी रहेगी। इस अभियान का उद्देश्य बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों पर अंकुश लगाना है ताकि वे टिकट लेकर यात्रा करें एवं उचित टिकट लेकर यात्रा करने वाले यात्रियों को बिना टिकट यात्रा करने वाले यात्रियों के कारण किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

डीडीसी ने सुदूरवर्ती पहाड़िया गावों का किया दौरा

साहिबगंज : साहिबगंज के डीडीसी सतीश चंद्रा ने शनिवार को जिले के सुदूरवर्ती पहाड़िया गांवों का दौरा किया। उनके साथ जिला पंचायती राज पदाधिकारी अनिल कुमार भी थे। उन्होंने ग्रामीणों से मिलकर सरकारी योजनाओं के लाभ की जानकारी ली। इस दौरान डीडीसी ने बोरियो प्रखंड की पंचायत दुगाटीला के धोधी बेड़ो व मीरपहाड़ में पहाड़िया जाति के 150 लोगों के बीच कंबल का वितरण किया। साथ ही गांवों में पेयजल, शौचालय, आंगनबाड़ी केंद्र, सड़क, पीएम आवास, जनमन योजना, खेल मैदान सहित अन्य सुविधाओं की जानकारी ली। संबंधित पदाधिकारी व कर्मियों को लंबित योजनाओं का जल्द निष्पादन करने का निर्देश दिया।

मंत्री सुदिव्य सोनू नें किया चांडिल डैम का निरीक्षण

- चांडिल डैम के नीचे छोर पर रिसोट व केसरगाड़िया आयलैंड पर बनेगा इको कॉटेज
- विधायक सविता महतो नें मंत्री को पुष्प गुच्छ देकर किया स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चांडिल : झारखंड सरकार के नगर विकास एवं आवास विभाग उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग तथा पर्यटन, कला संस्कृति, खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग के मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू नें रविवार को चांडिल डैम का निरिक्षण किया। इस दौरान उनके साथ विधायक सविता महतो व विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। इस दौरान विधायक सविता महतो नें पारडीह काली मंदिर के समीप मंत्री को पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। इस दौरान मंत्री नें डिमूडीह, बोराबिंदा, केशरगढ़ीया का निरिक्षण कर बोट से चांडिल डैम नौका बिहार पहुंचे। जहां उपायुक्त रवि शंकर शुक्ला ने मंत्री व विधायक को छो : मुखुटा व प्रतिक चिन्ह देकर सम्मनित किया। इस दौरान मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू नें कहा चांडिल डैम हमरा लोकप्रिय पर्यटन स्थल है, निश्चित रूप से यहां पर सुविधा बढ़ाने के लिए नई चीजों को सोचने के लिए विधायक सविता महतो से मार्ग दर्शन के लिए चांडिल डैम के खूबसूरती और पर्यटकों के लिए और बेहतर क्या किया जा सके जिसका निरिक्षण किया गया। उन्होंने कहा चांडिल डैम में दो प्रोजेक्ट हमारे निगाह में है जिसमे डैम के नीचे छोर पर रिसोट व केसरगाड़िया आयलैंड पर इको कॉटेज बनाने का विचार है और तमाम इस इलाके में विकास का विचार है। इसके लिए स्थानीय लोगों व समिति से विचार विमर्श किया। जल्द ही योजनाओं को धरातल पर उतरने का प्रयास करेंगे। इस दौरान विधायक सविता महतो नें कहा मंत्री जी नें डैम का निरिक्षण किया। जल्द ही चांडिल डैम झारखंड के पर्यटन स्थल के रूप में विकसित होगा और लोगों को रोजगार मिलेगी। इस अवसर पर विभागीय अधिकारी के साथ उपयुक्त रविशंकर शुक्ला, अनुमंडल पदाधिकारी विकास कुमार राय, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अरबिंद कुमार विन्हा, अंचल अधिकारी अमित कुमार श्रीवास्तव, चारुचांद किस्कु, झामुमो नेता ओम प्रकाश लायेक, काबलु महतो, कृष्णा किशोर महतो, मंत्री महतो, जगदीश सरदार, दिलीप महतो, नारायण गोप, श्यामल मार्डी, सरदीप नायक, शंकर लायेक, राहुल वर्मा आदि उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

झालसा के द्वारा मंडल कारा में जेल अदालत एवं मेडिकल कैंप का किया गया आयोजन

पाकुड़ : रविवार को झालसा रांची के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार पाकुड़ के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश शेषनाथ सिंह द्वारा जेल अदालत एवं मेडिकल कैंप का विधिवत उद्घाटन किया गया जेल अदालत में न्यायिक पदाधिकारी ने जेल में बंदियो को जिला विधिक सेवा प्राधिकार से मिलने वाली नि:शुल्क सहायता पर विस्तृत जानकारी दी साथ ही बंदियो को उनके अधिकार के बारे में भी बताया गया इस दौरान झालसा रांची के निर्देश पर मेडिकल चेकअप कैंप एवं सरकार की ओर से चल रही मलेरिया उन्मूलन अभियान के तहत मेडिकल कैंप लगाया गया कैंप में बंदियो को चिकित्सक एवं मेडिकल करमी के द्वारा फाइलेरिया की दवाई खिलाई गई मेडिकल टीम के द्वारा बताया गया की जेल में बंदियो को उनके उम्र एवं ऊंचाई के अनुरूप दवाई दी जा रही है वहीं गर्भवती महिला एवं पीड़ित व्यक्ति के अलावा 2 वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों को यह दवा नहीं खिलाई जाएगी। मौके पर झालसा के सचिव अजय गुड़िया अनुमंडल न्यायिक दंडाधिकारी संदेश उज्जवल प्रभारी न्यायाधीश विजय कुमार दास अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी डी एन आजाद लीगल एंड डिफेंस काउंसलिंग डिप्टी चीफ नकुमुद्दीन शेख सहायक गंगाराम टुडू मेडिकल टीम के कर्मी एवं जेल के प्र शासनिक पदाधिकारी उपस्थित थे।

जेल अदालत- सह-कानूनी जागरूकता शिविर एवं मेडिकल चेकअप कैंप का हुआ आयोजन

साहिबगंज: झारखण्ड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार,रांची के निर्देशन पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार, साहेबगंज के तत्वाधान में और प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार अखिल कुमार के मार्गदर्शन में मंडल कारा, साहेबगंज में जेल अदालत सह कानूनी जागरूकता शिविर एवं मेडिकल चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। प्राधिकार के सचिव विश्वनाथ भगत ने बताया कि बंदियों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने और अपराध से दूर रहने की प्रेरणा दी गई। सभी कैदियों से कहा गया कि भविष्य में ऐसा कोई कृत्य न करें, जिससे उन्हें दोबारा जेल आना पड़े। जिला विधिक सेवा प्राधिकार आपके भलाई के लिए दिन-रात सोचता है। इस मौके पर कारा अधीक्षक चन्द्रशेखर सुमन, लीगल एड डिफेन्स कौंसिल आदि उपस्थित थे।

नकली शराब बनाने और बेचने के मामले में दुकानदार गिरफ्तार

साहिबगंज/उधवा: राधानगर थाना क्षेत्र के पाकीजा मोड़ स्थित एक दुकान में बीते शुक्रवार की शाम को पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर नकली शराब बनाने तथा अवैध अंग्रेजी बिक्री का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने दुकान में छापेमारी कर अवैध अंग्रेजी शराब तथा नकली शराब बनाने की सामग्री जब्त की। दुकानदार अजय मंडल उर्फ छक्कू को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। थाना प्रभारी नितेश पांडेय ने बताया कि गुप्त सूचना पर कार्रवाई की गयी। छक्कू अपने होटल में शराब पिलाने के साथ ही साथ नकली अंग्रेजी शराब भी बेचते थे। छापेमारी के दौरान अंग्रेजी शराब एवं बीयर जब्त किया गया तथा अजय मंडल उर्फ छक्कू को रंगे हाथ पकड़ा गया है। वहीं तीस पीस बीयर, नकली शराब बनाने की सामग्री स्प्रीट, केमिकल, स्टीकर, खाली बोतलें एवं लेवल बरामद किया गया। मामले में राधानगर थाना कांड संख्या 47/25 के तहत प्राथमिकी दर्ज की गयी है। छापेमारी दल में थाना प्रभारी नितेश कुमार पांडेय, एसआइ पंकज कुमार दुबे, सअनि संजय कुमार यादव, सर्वेश्वर सोरेन, प्रशांत मरांडी सहित अन्य पुलिस बल मौजूद थे।

झारखंड वन बचाओ समिति ने किया पतौड़ा झील में बर्ड वॉक का आयोजन

साहिबगंज: वन बचाओ समिति ने रविवार को उधवा के पक्षी आश्रयणी में बर्ड वॉक का आयोजन किया। इसमें पीएमश्री नवोदय विद्यालय, राजमहल मॉडल कॉलेज और उधवा हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। बर्ड वॉक का नेतृत्व पक्षी विशेषज्ञ संजय खाखा, अविनाश कुमार और दशरथ ठाकुर ने किया। उन्होंने छात्रों को विभिन्न पक्षी के प्रजातियों की पहचान, उनके आवास, प्रवास और संरक्षण के महत्व के बारे में जानकारी दी। विशेषज्ञों ने पक्षियों की पहचान, प्रवास और पारिस्थितिकी में उनकी भूमिका पर जानकारी दी। अधिकारियों ने छात्रों को जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता और पक्षियों की पारिस्थितिकी में भूमिका के बारे में बताया। कार्यक्रम में वन परिसर पदाधिकारी राणा रंजीत चौधरी, उप वन परिसर पदाधिकारी इंद्रजीत कुमार, नमामि गंगे के डीपीओ अमित मिश्रा सहित वन विभाग के अधिकारी और कर्मी मौजूद थे।

आरपीएफ ने भारी मात्रा में शराब और बीयर किया जब्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : आरपीएफ ने रविवार को अप फरक्का एक्सप्रेस में बड़ी मात्रा में शराब और बीयर जप्त किया है। जानकारी देते हुए आरपीएफ इंस्पेक्टर बरहरवा ने बताया कि, फरक्का एक्सप्रेस के स्लीपर कोच एस/2 और एस/3 में शराब जा रहा था, गुप्त सूचना के आधार पर आरपीएफ इंस्पेक्टर बरहरवा संजीव कुमार और सीआईबी इंस्पेक्टर मृत्युंजय कुमार सिंह के नेतृत्व में, सीपीडीएस टीम मालदा एएसआई आदित्य कुमार ठाकुर, कांस्टेबल तरुण भूषण, कांस्टेबल अनिल कुमार दास, कांस्टेबल कुमार प्रियंकर, सीआईबी टीम मालदा हेड कांस्टेबल नूपुर वरन मीडिया, हेड कांस्टेबल जनार्दन राम एवं आरपीएफ टीम बरहरवा हेड कांस्टेबल संजय कुमार, हेड कांस्टेबल नील कमल बरूई, कांस्टेबल प्रवीण कुमार और ट्रेन एस्कॉर्ट पार्टी एएसआई लालटू मन्ना के साथ मिलकर जब ट्रेन बरहरवा रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म नंबर 01 पर आई तो पूरी टीम ने स्लीपर कोच एस/2 और एस/3 को सावधानीपूर्वक सर्च किया जिसमे से 10 प्लास्टिक के बोरे अलग अलग जगह से सीट के नीचे से बरामद किए गए जिनके बारे में कोच में मौजूद यात्रियों से पूछताछ की गई तो सभी ने इन बोरो के बारे अपनी अनभिज्ञता जाहिर की। उसके बाद इन बोरो को खोल कर चेक किया गया तो सभी में अलग अलग ब्रांड की शराब मिली। सभी 10 बोरो को प्लेटफार्म नंबर 1 में उतारा गया और एक एक प्लास्टिक के बोरे को चेक किया गया तो उनमें कुल,288 पाउच ऑफिसर्स चॉइस व्हिस्की के,180 पीस हेवर्ड केन बीयर के, 07 पीस ब्लेंडर्स प्राइड व्हिस्की के,06 पीस रॉयल चैलेंज व्हिस्की के,33 पीस इंपीरियल ब्ल्यू व्हिस्की के मिले। उपरोक्त सभी को जब्त कर आरपीएफ पोस्ट बरहरवा लाया गया।

जिला सीनियर क्रिकेट लीग टूर्नामेंट का चैंपियन बना नेताजी क्रिकेट क्लब

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला क्रिकेट संघ के तत्वाधान में सिदो-कान्हू स्टेडियम में चल रहे सीनियर क्रिकेट लीग कम नॉट आउट टूर्नामेंट के तहत 16 फरवरी को रविवार को फाइनल मैच खेला गया। फाइनल मुकाबला यंग बॉयज क्रिकेट क्लब बनाम नेताजी क्रिकेट क्लब के बीच खेला गया। नेताजी क्रिकेट क्लब ने टॉस जीत कर पहले बल्लेबाजी करते हुए 35 ओवर में 8 विकेट पर 223 रन बनाया। फैजान अहमद ने 57, अनुज ने 17, परितोष ने 13, पीयूशम ने 45, मिस्टर एनर्जी ने 31, अनिकेश ने 14 व राहुल ने 13 रनों की पारी खेली। यंग बॉयज क्रिकेट क्लब के गेंदबाज रजनीश व दीपक ने 3-3, श्याम व शत्रुघन ने 1-1 विकेट लिया। जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी यंग बॉयज क्रिकेट क्लब की टीम 25 ओवर में 120 रन बना कर ऑल आउट हो गई। रश्मिकांत ने 36, श्याम रंजन ने 29 व सोनू कुमार ने 11 रनों की पारी खेली। नेताजी क्रिकेट क्लब के गेंदबाज गौरव व राहुल ने 3-3, मिस्टर एनर्जी ने 2, फैजान व विष्णु ने 1-1 विकेट लिया। नेताजी क्रिकेट क्लब ने 103 रनों से जीत हासिल कर चैंपियन बनने का गौरव हासिल किया। नेताजी क्रिकेट क्लब के खिलाड़ी मो फैजान को मैन ऑफ दी मैच घोषित किया गया। वहीं टूर्नामेंट में सबसे अधिक 285 रन बनाने वाले पीयूशम सिंह को बेस्ट बैट्स मैन, 16 विकेट लेने वाले गेंदबाज मिस्टर एनर्जी को बेस्ट बॉलर एवं हरफनमौला खिलाड़ी मिस्टर एनर्जी को 16 विकेट लेने व 118 रन बनाने पर मैन ऑफ दी सीरीज घोषित किया गया। मैच में अंपायरिंग मो अशफाक व राकेश रोशन जबकि स्कोरिंग सागर सुमन ने किया। मुख्य अतिथि डीडीसी सतीश चंद्रा एवं विशिष्ठ अतिथि जिला खनन पदाधिकारी कृष्ण कुमार किस्कू ने विजेता, उपविजेता टीमों व खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। इस दौरान डीडीसी ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए विजेता और उपविजेता टीम को शुभकामना दी। कहा कि दोनों टीमों ने बेहतरीन प्रदर्शन कर फाइनल तक का सफर किया। खेल में हार-जीत लगी रहती है। उपविजेता बनना भी एक उपलब्धि है। मेहनत करें और अगली बार विजेता बनने की कोशिश करें।

ललमटिया रेलवे फाटक पर ड्यूटी के दौरान मजदूर की मौत, कोयला ढुलाई ठप

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मुआवजा की मांग को लेकर ग्रामीण कोयला ढुलाई ठप कर दी

गोड्डा : ललमटिया खदान से कोयला लेकर एनटीपीसी फरक्का तक जाने वाली एमजीआर में कार्यरत ठेका मजदूर की ड्यूटी के दौरान हार्ट अटैक से मौत हो गई। मामला ललमटिया थाना क्षेत्र के बागजोरी रेलवे फाटक के समीप का है। ठेका मजदूर चितरकोठी निवासी जोके मुर्मू (50) शनिवार को रेलवे फाटक पर जेनरल शिफ्ट में ड्यूटी पर तैनात था। सुबह करीब दस बजे अचानक उसे हार्ट अटैक आया और बेहोश होकर गिर पड़ा। सूचना मिलते ही पुत्र सुशील मुर्मू व अन्य परिजन मौके पर पहुंचे और उसे अस्पताल ले जाने की तैयारी करने लगी। इसी दौरान जोके मुर्मू की मौत हो गई। मुआवजा की मांग को लेकर ग्रामीण व परिजन शव लेकर राजमहल परियोजना के सेलो प्वाइंट पहुंचे और शव को फरक्का-एमजीआर रेल लाइन पर रखकर कोयला ढुलाई ठप कर दी। समाचार लिखे जाने तक एनटीपीसी व ईसीएल का कोई पदाधिकारी वार्ता के लिए घटनास्थल पर नहीं पहुंचा था।

पश्चिम बंगाल के 55 कृष्ण भक्तगण कन्हैया स्थान मंदिर भ्रमण के लिए पहुंचे

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : राजमहल प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत कन्हैया स्थान स्थित कन्हैयानाटयशाला मंदिर में आए दिन देश विदेश से कृष्ण भक्ति घूमने के लिए आते हैं। वही शनिवार को देर शाम पश्चिम बंगाल के नदिया जिला के कमल गोसाईं के नेतृत्व में 55 कृष्ण भक्तगण तथा श्रद्धालु कन्हैया स्थान मंदिर पहुंचे। जिसमें उन्होंने गंगा आरती, तुलसी पूजन, मंगल आरती, मंदिर परिक्रमा कर भजन कीर्तन में लीन रहे। इसके बाद दूसरे दिन रविवार की सुबह पहुंचे श्रद्धालुओं ने महाराजपुर पहाड़ की तलती स्थित मोती झरना शिव मंदिर व शिवलिंग में पूजा अर्चना भजन कीर्तन किया। साथ में आए कमल गोस्वामी प्रभु ने कृष्ण भक्त व श्रद्धालुओं को बताया कि कन्हैया स्थान इस्कॉन मंदिर पूरे विश्व में भगवान श्रीकृष्ण की लीला स्थली एवं गुप्त वृंदावन के नाम से प्रसिद्ध है। यहां श्रीचैतन्य महाप्रभु को 1505 ईस्वी में भगवान श्रीकृष्ण के बाल्य रूप का दर्शन हुआ था। वर्तमान में भी यहां भगवान श्रीकृष्ण-राधा एवं श्रीचैतन्य महाप्रभु के पदचिह्न मौजूद हैं।

राज्य के तमाम पत्रकार संगठनों को मनोरंजन के साथ-साथ पत्रकारों के हितों पर भी बात करनी चाहिए : मनमोहन सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खरसावां : प्रेस क्लब ऑफ सरायकेला- खरसावां का सालाना वार्षिक मिलन सह वनभोज कार्यक्रम खरसावां के अकर्षिणी गेस्ट हाउस में रविवार को संपन्न हुआ। इसमें बतौर मुख्य अतिथि खरसावां विधानसभा के विधायक दशरथ गागराई के प्रतिनिधि अनूप सिंहदेव विशिष्ट अतिथि खरसावां थाना प्रभारी गौरव कुमार, गम्हरिया सीडीपीओ दुर्गेश नंदिनी, खरसावां एजीएम राजेश राम सहित प्रेस क्लब के तमाम पदाधिकारी मौजूद रहे।

क्लब के सदस्यों को सौंपा गया 5 लाख का बीमा

इस दौरान प्रेस क्लब से जुड़े पत्रकारों को पांच लाख का बीमा पत्र सौंपा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अतिथियों ने प्रेस क्लब से जुड़े पत्रकारों के कार्यों की जमकर सराहना की। बात दें कि प्रेस क्लब ऑफ सरायकेला- खरसावां का यह चौथा वनभोज था। अपने गठन काल से ही क्लब ने कई चुनौतियों का सामना करते हुए कई कीर्तिमान स्थापित करने में सफलता हासिल की है।

मनोरंजन के साथ पत्रकारों के हित में सोचें पत्रकार संगठन और सरकार : अध्यक्ष

क्लब के अध्यक्ष मनमोहन सिंह ने भरोसा दिलाया कि प्रेस क्लब से जुड़े तमाम पत्रकारों के हितों की रक्षा के लिए वह कंधे से कंधा मिलाकर चलते रहेंगे। उन्होंने राज्य सरकार से पत्रकार सुरक्षा कानून और पत्रकारों के लिए न्यूनतम 10 लाख का बीमा देने की मांग की है। उन्होंने कहा कि राज्य के तमाम पत्रकार संगठनों को मनोरंजन के साथ पत्रकारों के हितों पर भी बात करनी चाहिए। किसी आपदा की घड़ी में पत्रकारों के परिवार के साथ खड़ा होना होगा इसके लिए फंड जेनरेट करना जरूरी है। खेलकूद से यह संभव नहीं है। इसके लिए मंथन करने की जरूरत है। अतिथियों को किया गया सम्मानित इस दौरान अतिथियों का मोमेंट और शॉल देकर स्वागत किया गया। उसके बाद पत्रकारों ने लजीज व्यंजन का लुफ्त उठाया। अंत में निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता के संकल्प के साथ अपने कार्य स्थल के लिए रवाना हुए। बता दे कि प्रेस क्लब ऑफ सरायकेला- खरसावां में जिले के सभी प्रखंडों से लगभग 65 पत्रकार जुड़े हैं।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में जिले के सभी 9 प्रखंडों से जुड़े क्लब के पत्रकार शामिल हुए। इनमें मुख्य रूप से महासचिव रमजान अंसारी, शशांक शेखर परमेश्वर गोराई आदि शामिल थे।

संपादकीय.....

महान साधक थे रामकृष्ण परमहंस

रामकृष्ण परमहंस भारत के एक महान संत, आध्यात्मिक गुरु एवं विचारक थे। इन्होंने सभी धर्मों की एकता पर जोर दिया। उन्हें बचपन से ही विश्वास था कि ईश्वर के दर्शन हो सकते हैं। अतः ईश्वर की प्राप्ति के लिए उन्होंने कठोर साधना और भक्ति का जीवन बिताया। स्वामी रामकृष्ण मानवता के पुजारी थे। साधना के फलस्वरूप वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि संसार के सभी धर्म सच्चे हैं और उनमें कोई भिन्नता नहीं। वे ईश्वर तक पहुँचने के भिन्न-भिन्न साधन मात्र हैं। 19 वीं शताब्दी में श्री रामकृष्ण परमहंस एक रहस्यमयी और महान योगी पुरुष थे। जिन्होंने काफी सरल शब्दों में अध्यात्मिक बातों को सामान्य लोगों के सामने रखा। जिस समय हिन्दू धर्म बड़े संकट में फंसा हुआ था उस समय श्री रामकृष्ण परमहंस ने हिन्दू धर्म में एक नयी उम्मीद जगाई।

रामकृष्ण के जीवन में अनेक गुरु आये पर अन्तिम गुरुओं का उनके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा। एक थी भैरवी जिन्होंने उन्हें अपने कापालिक तंत्र की साधना करायी और दूसरे थे श्री तोतापुरी उनके अन्तिम गुरु। गंगा के तट पर दक्षिणेश्वर के प्रसिद्ध मंदिर में रहकर रामकृष्ण मां काली की पूजा किया करते थे। गंगा नदी के दूसरे किनारे रहने वाली भैरवी को अनुभूति हुई कि एक महान संस्कारी व्यक्ति रामकृष्ण को उसकी दीक्षा की आवश्यकता है। गंगा पार कर वो रामकृष्ण के पास आयी तथा उन्हें कापालिक दीक्षा लेने को कहा। रामकृष्ण ने भैरवी द्वारा बतायी पद्धति से लगातार साधना कर मात्र तीन दिनों में ही सम्पूर्ण क्रिया में निपुण हो गये।

रामकृष्ण के अन्तिम गुरु तोतापुरी थे जो सिद्ध तांत्रिक तथा हठ योगी थे। उन्होंने रामकृष्ण को दीक्षा दी। रामकृष्ण को दीक्षा दी गई परमशिव के निराकार रुप के साथ पूर्ण संयोग की। पर आजीवन तो उन्होने मां काली की आराधना की थी। वे जब भी ध्यान करते तो मां काली उनके ध्यान में आ जाती और वे भावविभोर हो जाते। जिससे निराकार का ध्यान उनसे नहीं हो पाता था।

तोतापुरी ध्यान सिद्ध योगी थे। उनको अनुभव हुआ कि रामकृष्ण के ध्यान में मां काली प्रतिष्ठित हैं। उन्होने शक्ति सम्पात के द्वारा रामकृष्ण को निराकार ध्यान में प्रतिष्ठित करने के लिये बगल में पड़े एक शीशे के टुकड़े को उठाया और उसका रामकृष्ण के आज्ञाचक्र पर आघात किया जिससे रामकृष्ण को अनुभव हुआ कि उनके ध्यान की मां काली चूर्ण-विचूर्ण हो गई हैं और वे निराकार परमशिव में पूरी तरह समाहित हो चुके हैं। वे समाधिस्थ हो गये। ये उनकी पहली समाधि थी जो तीन दिन चली। तोतापुरी ने रामकृष्ण की समाधी टूटने पर कहा। मैं पिछले 40 वर्षो से समाधि पर बैठा हूं पर इतनी लम्बी समाधी मुझे कभी नही लगी।

श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म पश्चिम बंगाल के हुगली जिले में कामारपुकुर नामक गांव में 18 फरवरी 1836 को एक निर्धन निष्ठावान ब्राहमण परिवार में हुआ था। इनके जन्म पर ही ज्योतिषियों ने रामकृष्ण के महान भविष्य की घोषणा कर दी थी। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुन इनकी माता चन्द्रा देवी तथा पिता खुदिराम अत्यन्त प्रसन्न हुए। इनको बचपन में गदाधर नाम से पुकारा जाता था। पांच वर्ष की उम्र में ही वो अदभुत प्रतिभा और स्मरणशक्ति का परिचय देने लगे। अपने पूर्वजों के नाम व देवी- देवताओं की स्तुतियां, रामायण, महाभारत की कथायें इन्हे कंठस्थ याद हो गई थी।

1843 में इनके पिता का देहांत हो गया तो परिवार का पूरा भार इनके बड़े भाई रामकुमार पर आ पड़ा था। रामकृष्ण जब नौ वर्ष के हुए इनके यज्ञोपवीत संस्कार का समय निकट आया। उस समय एक विचित्र घटना हुई। ब्राह्मण परिवार की परम्परा थी कि नवदिक्षित को इस संस्कार के पश्चात अपने किसी सम्बंधी या किसी ब्राह्मण से पहली शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। एक लुहारिन जिसने रामकृष्ण की जन्म से ही परिचर्या की थी। बहुत पहले ही उनसे प्रार्थना कर रखी थी कि वह अपनी पहली भिक्षा उसके पास से प्राप्त करे। लुहारिन के सच्चे प्रेम से प्रेरित हो बालक रामकृष्ण ने वचन दे दिया था।

सूडोकु नवताल- 7344

सरल

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7343 का हल

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8

युद्ध के प्रति भारतीय तटस्थता नहीं, बल्कि शांतिपरक पक्षधरता को ऐसे समझिए

कमलेश पांडेय

चाहे 'वैश्विक युद्ध' की आशंका की बात हो या विभिन्न देशों के बीच जारी 'द्विपक्षीय युद्ध' की, भारत ने साफ कर दिया है कि वह ऐसे किसी भी मामले में तटस्थ नहीं, बल्कि शांति का पक्षधर है। बता दें कि अपनी हालिया अमेरिकी यात्रा के क्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक सवाल का जवाब देते हुए यह साफ कर दिया है कि रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत न्यूट्रल यानी तटस्थ नहीं है। भारत शांति का पक्षधर है। इसलिए दुनियादारी के निष्णात लोग 'ह' से 'हलंत' तक की अटकलें लगा रहे हैं और उनके इस वक्तव्य के अंतरराष्ट्रीय मायने निकाले जा रहे हैं।

ऐसा इसलिए कि इजरायल-फिलिस्तीन युद्ध के दौरान भी भारत का कुल मिलाकर यही नजरिया रहा है। चाहे चीन-ताइवान युद्ध की अटकलें हों या ईरान-इजरायल युद्ध की आशंका, अफगानिस्तान सरकार का तालिबान के हाथों पतन हो या तुर्की के इशारे पर सीरिया की सरकार का पतन, भारत ने कभी हस्तक्षेप नहीं किया। वह हमेशा यही कहता रहा कि हम वसुधैव कुटुंबकम के पक्षधर हैं। पीएम मोदी भी लगातार कहते रहे हैं कि यह युद्ध नहीं, बुद्ध का समय है।

वैसे दुनिया को यह भी पता है कि पाकिस्तान और बंगलादेश जैसे अमन-चैन के दुश्मनों से घिरा भारत यदि उनकी बड़ी-बड़ी कायराना व हिन्दू/भारत विरोधी हरकतों को नजरअंदाज करते हुए सीधी कार्रवाई से यदि बचता आया है तो सिर्फ इसलिए कि वह युद्ध नहीं बल्कि शांति चाहता है। इन देशों का जन्म भी क्रमशः भारत के विभाजन से हुआ है। पाकिस्तान ने आजादी हासिल करते ही कश्मीर के सवाल पर भारत से छद्म लड़ाई छेड़ दी। उसके बाद 1965 और 72 में सीधी लड़ाई लड़कर बुरी तरह से मात खाया। 1999 में भी उसने कारगिल में छद्म युद्ध छेड़ा और बुरी तरह से पीटा। उसके इशारे पर थिरकने वाले बांग्लादेश की भी कुछ ऐसी ही नियति है।

उधर, 1962 में भारत के खिलाफ युद्ध लड़ चुका चीन इन दोनों देशों को प्रोत्साहन देता आया है। हालांकि, आजादी के बाद पाकिस्तान की और पाकिस्तान से आजादी हासिल करने के दौरान बांग्लादेश की भारत ने दिल खोलकर मदद की, लेकिन दोनों देश भारत से सांप्रदायिक नफरत रखते

हैं, इस वास्ते किसी भी हद तक गुजर जाने के लिए तत्पर रहते हैं और विदेशी ताकतों की हाथों में खेलते रहते हैं। भारत इसे बखूबी समझता है। वह इन दोनों देशों में निरंतर ब्रेक के बाद जारी हिंदुओं के दमन-उत्पीड़न और हत्याओं के बावजूद इन्हें क्षमा करता आया है, ताकि इनकी सांप्रदायिक फितरत बदलते। इतना ही नहीं, नेपाल, म्यांमार, श्रीलंका, मालदीव आदि जैसे पड़ोसी देशों से जुड़े घटनाक्रमों पर जब आप गौर करेंगे तो भारतीय धैर्य की दाद आपको देनी पड़ेगी। यदि उनके हितों का सवाल नहीं हो तो भारत ने कभी सैन्य हस्तक्षेप इन देशों के खिलाफ नहीं किया। वहीं, दुनियावी मंचों पर अमेरिका, सोवियत संघ (अब रूस), चीन आदि के मामलों में भी न तो किसी का पक्ष लिया, न किसी का विरोध किया। इन बातों का सीधा संदेश है कि जो शांति का दुश्मन है, वो भारत का दुश्मन है।

इस नजरिए से यदि देखा जाए तो 'आतंकवाद' और उसको प्रोत्साहित करने वाले 'देश' या उनका गुट भी भारत के दुश्मन हैं। पूरी दुनिया में हथियारों की होड़ पैदा करके एक दूसरे पर कोहराम मचाने वाले देश या उनके संरक्षक भी भारत के दुश्मन हैं। इस वजह से भी भारत हथियारों की होड़ में शामिल हो चुका है, क्योंकि लोहा को लोहा ही काटता है। भारत का बढ़ता रक्षा कारोबार भी उसके इसी नजरिए का द्योतक है।

सवाल है कि समकालीन विश्व में शांति का दुश्मन कौन है? इसका जवाब होगा कि ट्रंप के नेतृत्व में अमेरिका भले 'चंद्रायण व्रत' करने का संकेत लगातार दे रहा है, लेकिन मौजूदा वैश्विक परिस्थितियों के लिए कहीं न कहीं उसकी नीतियां ही जिम्मेदार रही हैं। हालांकि, भारत से मित्रता के चलते अब उसका भी स्वभाव बदल रहा है। जबकि चीन ऐसा करने को राजी नहीं है। अपने साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा वश चीन अभी जो दुनियावी तिकड़म बैठा रहा है, देर-सबेर उस पर ही भारी पड़ेंगी, क्योंकि भारत की नीतियां ही ऐसी परिपक्व हैं।

वहीं, यह भी कड़वा सच है कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रूस ने अब तक जो कुछ भी किया है, वह अमेरिकी रणनीतियों से अपने बचाव में किया है या फिर उसे संतुलित रखने के लिए किया है। जबकि चीन जो कुछ भी कर रहा है, वह उसकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा है। यह भी अजीबोगरीब है कि दुनिया को आतंकवाद और आतंकवादियों का निर्यातक देश पाकिस्तान (अब बांग्लादेश भी) अब अमेरिका की बजाय चीनी गोद में खेल रहा है।

यदि आप अमेरिका, रूस, चीन की बात छोड़ दें तो जापान, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, इजरायल, जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, ईरान, तुर्की जैसे दूसरी पंक्ति के बहुत सारे देश हैं, जो अपनी अपनी सुविधा के अनुसार नाटो या सीटो में शामिल होते रहे। लेकिन भारत हमेशा ही गुटनिरपेक्ष रहा और गुटनिरपेक्षता की नीति को बढ़ावा दिया। यह गुटनिरपेक्षता की नीति ही शांति की गारंटी है। दुनिया प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध के संतापों को झेल चुकी है। लेकिन तीसरा विश्वयुद्ध यदि दस्तक देते देते सहम जाता है तो उसके पीछे भारत के नेतृत्व में लामबंद तीसरी दुनिया के देश ही हैं, जो किसी की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा के समक्ष घुटने टेकने को तैयार नहीं हैं, बल्कि शांति का पैगाम देते आए हैं। जी-7, जी-20 आदि में भारत की बढ़ती भूमिका इसी बात की परिचायक है। यदि भारत ने चीनी नेतृत्व वाले 'ब्रिक्स' की सदस्यता ली है तो उसके पीछे भी पुनीत भावना यही है। वहीं, अमेरिकी नेतृत्व वाले 'क्वाड' में भारत की मौजूदगी दुनियावी शांति से ही अभिप्रेरित है।

दुनिया के युद्धोन्मत देशों को यह समझ लेना चाहिए कि अंतरराष्ट्रीय जरूरतों वश भारत उनका मित्र देश भले ही है, लेकिन उनके यौद्धिक मिजाजों का सम्बर्द्धक बनने में उसकी कोई भी दिलचस्पी नहीं है। चाहे अमेरिका हो या रूस, दोनों देशों पर यह बात लागू होती है। भारत हिंसा की दृष्टि से अभिशप्त दुनिया को 'बुद्धम शरणम गच्छामि', वसुधैव कुटुंबकम एवं सत्य-अहिंसा का संदेश देना चाहता है और इसी दिशा में मजबूती पूर्वक वह अग्रसर है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

केजरीवाल की हठधर्मिता ने डुबोई 'आप' की नैय्या

तनवीर जाफरी

दिल्ली की 70 सदस्यों की विधान सभा हेतु हुए 2015 के चुनाव में 70 में से 67 सीटें तथा 2019 में दिल्ली की सातवीं विधानसभा चुनाव में 62 सीटें जीतकर ऐतिहासिक बहुमत प्राप्त करने वाली आम आदमी पार्टी पिछले दिनों दिल्ली चुनाव की जंग हार गयी। भारतीय जनता पार्टी को जहां पूर्ण बहुमत के साथ जहां 48 सीटें हासिल हुई वहीं 'आप ' को केवल 22 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा। आप के लिये सबसे बड़ा झटका यह भी रहा कि सत्ता गंवाने के साथ ही उसके राष्ट्रीय संयोजक अरविन्द केजरीवाल सहित पार्टी के और भी कई दिग्गज नेता चुनाव हार गये। कुछ राजनैतिक विश्लेषकों का मानना है कि दिल्ली में आम आदमी पार्टी की पराजय से पार्टी के अंत की शुरूआत हो चुकी है। यदि ऐसा है तो वास्तव में इसका जिम्मेदार कौन है ? क्या वजह थी कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में 43.57 प्रतिशत मत प्राप्त होने के बावजूद आप को केवल 22 विधानसभा सीटों पर ही जीत हासिल हुई जबकि भाजपा ने मात्र दो प्रतिशत अधिक यानी 45.56 प्रतिशत मत प्राप्त कर 48 सीटों पर जीत दर्ज की। नतीजों से साफ है कि भाजपा ने त्रिकोणीय संघर्ष का लाभ उठाकर ही आम आदमी पार्टी से 26 सीटें अधिक हासिल कीं और दिल्ली की सत्ता आप के हाथों से झटक ली। हालांकि हार के बावजूद आम आदमी पार्टी के इस तर्क को भी नकारा नहीं जा सकता कि बावजूद इसके कि बीजेपी के साथ प्रोपेगंडा, सरकार की सारी मशीनरी, मीडिया,धनबल व बाहुबल सब कुछ थे, फिर भी उसे आप से मात्र दो प्रतिशत ही ज्यादा वोट मिले हैं।

सवाल यह है कि 2011 में यू पी ए सरकार के विरुद्ध भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के बाद 26 नवंबर 2012 को देश के अनेक बुद्धिजीवियों द्वारा अरविन्द

केजरीवाल के राष्ट्रीय संयोजकत्व में स्थापित की गयी आम आदमी पार्टी जोकि न केवल दिल्ली में सत्ता में थी बल्कि वर्तमान समय में देश के समृद्ध राज्य पंजाब में भी सत्तारूढ़ है वही नया नवेला राजनैतिक दल आखिर किन वजहों से और किन परिस्थितियों में इस अंजाम तक जा पहुंचा कि आज 'आप' के 'अंत' पर चर्चा छिड़ गयी है ? सच पूछिये तो दिल्ली में भाजपा की संभावित फतेह की सुगबुगाहट तो दरअसल उसी समय शुरू हो गयी थी जबकि 'आप ' ने विगत अक्टूबर 2024 को हरियाणा में हुये विधानसभा चुनाव में 'इण्डिया ' गठबंधन घटक का सदस्य होने के बावजूद राज्य की 89 सीटों पर चुनाव लड़ा और कांग्रेस को हरियाणा की सत्ता में वापसी से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गौरतलब है कि कांग्रेस हरियाणा में 90 में 7 सीटें आप के लिये छोड़ने को तैयार थी परन्तु केजरीवाल की जिद थी कि कांग्रेस उसे 10 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़ा करने दे। इस बात पर दोनों दलों में समझौता नहीं हो सका। और आप ने 89 सीटों पर उम्मीदवार उतार दिये। नतीजतन अअढ को राज्य भर में केवल 1.53% वोट प्राप्त हुए। जिन्होंने कांग्रेस को हराने व भाजपा को जिताने में अहम भूमिका निभाई। 2024 में आप द्वारा 10 सीटें तब मांगीं जा रही थीं जबकि 2019 में आम आदमी पार्टी का वोट शेयर ठडळअ से भी काफी कम था। इसी हरियाणा चुनाव परिणाम के बाद ही दिल्ली में भी इसी तरह के चुनाव परिणाम की उम्मीद की जाने लगी थी।

जाहिर है ऐसे विध्वंसक फैसले लेने के लिये स्वयं अरविन्द केजरीवाल ही जिम्मेदार थे। वैसे भी 2012 में 'आप ' अपने गठन के साथ ही उस समय विवादों में आ गयी थी जबकि अन्ना हजारे ने केजरीवाल द्वारा आम आदमी पार्टी के रूप में नया राजनैतिक दल बनाने की कोशिश का विरोध किया था। हालांकि अन्ना हजारे व केजरीवाल दोनों ही नेताओं को लेकर एक बड़े राजनैतिक विश्लेषक वर्ग का यह भी मानना है कि अन्ना आंदोलन हो या केजरीवाल की तर्ज - ए -सियासत,दरअसल यह सब कांगेस के विरोध में तथा भाजपा को फायदा पहुँचाने के लिये रचा गया एक बड़ा राजनैतिक चक्रव्यूह है,अन्यथा क्या कारण है कि जिस जनलोकपाल को लेकर आंदोलन व राजनैतिक दल खड़ा किया गया था उसका जिक्र इन्हीं नेताओं के मुंह से अब क्यों सुनाई नहीं देता। पिछले दस सालों में बड़े से बड़े घोटाले उजागर हुये, उनके विरोध अन्ना हजारे ने आंदोलन क्यों नहीं किया?

इसके अलावा आप के गठन के फौरन बाद ही जिसतरह पार्टी के संस्थापक लोगों व अनेक बुद्धिजीवियों द्वारा पार्टी छोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ उसका भी मुख्य कारण केजरीवाल का जिद्दीपन व उनकी हठधर्मिता ही थी। क्या वजह थी कि आम आदमी पार्टी को सबसे पहले चंदा देने वाले पूर्व कानून मंत्री सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील शांति भूषण जिन्होंने पार्टी की स्थापना पर 1 करोड़ रुपए का चंदा दिया था, 2014 से ही उनका 'आप' से मोहभंग हो गया ? शांति भूषण ने उसी समय केजरीवाल को अनुभवहीन, दिल्ली विधानसभा चुनावों में टिकट बंटवारे में गड़बड़ी करने व पार्टी में मनमानी चलाने जैसे अनेक आरोप लगाए थे। इसी तरह केजरीवाल के एक और खास साथी एक्टिविस्ट आशीष खेतान, एक प्रसिद्ध टीवी न्यूज चैनल के मैनेजिंग एडिटर के पद से इस्तीफा देकर आम आदमी पार्टी में शामिल होने वाले आशुतोष,पार्टी का थिंक टैंक व पार्टी की कानूनी लड़ाई लड़ने वाले वाले प्रशांत भूषण जैसे साथियों को केजरीवाल संभाल नहीं सके। इसी तरह राजनीतिक विचारक योगेंद्र यादव को जोकि आम आदमी पार्टी के लिए चुनावी रणनीति बनाने में अहम भूमिका निभाते थे उन्हें भी प्रशांत भूषण के साथ ही पार्टी विरोधी गतिविधि ?ों के आरोप में पार्टी से निकाल दिया गया। समाजशास्त्री आनंद कुमार,पैथोलॉजिस्ट अंजली दमानिया, सामाजिक कार्यकर्ता मयंक गांधी,किरन बेदी ,शाजिया इल्मी, विनोद कुमार बिन्नी,कपिल मिश्रा,एमएस धीर सहित और भी कई नेता या तो पार्टी छोड़ गये या फिर निष्क्रिय हो गये। ऐसे सभी नेता केजरीवाल के साथ काम कर पाने में स्वयं को असहज महसूस कर रहे थे। परिणामस्वरूप अनेक साथी नेताओं के मना करने के बावजूद केजरीवाल अपनी जिद में ही दिल्ली में विवादित शराब नीति लाये जोकि उनकी राजनैतिक तबाही व बदनामी का कारक साबित हुई।

अब सत्ता से हटते ही भाजपा ने केजरीवाल को राजनैतिक रूप से समाप्त करने का प्लान तैयार कर लिया है। जहाँ भाजपा की गिद्ध दृष्टि अब पंजाब की आप सरकार पर जा टिकी है वहीँ भाजपा ने एम सी डी के भी फिलहाल तीन 'आप ' पार्षद झटक लिये हैं। साथ ही केंद्रीय सतर्कता आयोग ने केजरीवाल के 6 फ़्लैग स्टाफ बंगले के नवीनीकरण पर हुए बेतहाशाखर्च की जांच का आदेश भी दे दिया है। भाजपा द्वारा केजरीवाल के इस सरकारी आवास को 'शीश महल' का नाम दिया गया था तथा इसे उनके विरुद्ध चुनावी मुद्दा बनाया गया था। बहरहाल मात्र दिल्ली की हार से आप के अंत की भविष्यवाणी करना तो फिलहाल मुनासिब परन्तु इतना जरूर कहा जा सकता है कि केजरीवाल की जिद व उनकी हठधर्मिता के चलते ही 'आप ' की नैय्या डूब रही है।

बॉलीवुड के अनकहे किस्से : फिल्म शहीद, मनोज कुमार और प्राण

अजय कुमार शर्मा

1940 के दशक की बात है। पुरानी दिल्ली में छठी कक्षा के कुछ छात्रों ने घर की चादरों से पर्दों का और चारपाइयों से कुर्सियों का काम निकाल कर एक नाटक करने का निर्णय लिया। नाटक का नाम था शहीद भगत सिंह। इसमें भगत सिंह की भूमिका करने वाला छात्र लोगों की भीड़ देखकर सहम गया और परदे के पीछे दूसरे काम करने लगा। भरपूर ऊर्जा और आत्मविश्वास से भरे इस लड़के ने सहपाठियों द्वारा मजाक उड़ाने के बावजूद अभिनेता बनने के अपने फैसले को नहीं बदला। छात्रों के इसी समूह में एक किशोर की पत्रकारिता में गहरी रुचि थी। इन दोनों में अच्छी दोस्ती हो गई और कुछ वर्षों बाद दोनों फिल्म जगत में काम और नाम कमाने के लिए बंबई चले गए। यह दोनों थे भगत सिंह यानी मनोज कुमार और पत्रकारिता में रुचि रखने वाले केवल कश्यप।

कुछ समय प्रोडक्शन अस्सिटेंट और छोटी-छोटी भूमिकाओं में अभिनय करना शुरू कर नायक बनने तक मनोज कुमार और कुछ फिल्मी सितारों के प्रचारक बनने से लेकर निमार्ता बनने तक केवल कश्यप एक दूसरे के संपर्क में रहे और जब इस लायक हो गए कि वह फिल्म बना सकें तो तय किया गया कि फिल्म भगत सिंह पर ही बनाई जाए। शीर्षक रखा गया "शहीद"। काफी मेहनत और रिसर्च के बाद मनोज कुमार ने कहानी लिखी। इसके लिए बिना पैसे की परवाह किए वह उस हर व्यक्ति से मिले जो तब जीवित था और किसी भी तरीके से भगत सिंह के संपर्क में रहा था। यहां तक वे भगत सिंह के भाई और उनकी मां जो उस समय 81 वर्ष की अवस्था में भी सक्रिय थीं, उनसे पंजाब जाकर मिले और काफी नई जानकारी प्राप्त कीं। केवल कश्यप ने फिल्म बनाने के लिए अपनी संपत्ति पर बैंक का कर्जा लिया। अपनी फिएट गाड़ी भेज दी और सारे पैसे इस फिल्म के निर्माण में लगा दिए। लेकिन किसी को उनकी फिल्म की सफलता पर भरोसा नहीं था क्योंकि उससे पहले 1952 में प्रदर्शित फिल्म जिसमें प्रेम अदीब ने भगत सिंह की भूमिका की थी और दूसरी फिल्म शहीद भगत सिंह जो 1963 में प्रदर्शित हुई थी और इसमें शम्मी कपूर ने भगत सिंह की भूमिका की थी, फ्लॉप हो चुकी थीं। लेकिन इन दोनों को अपनी रिसर्च और स्क्रिप्ट पर पूरा भरोसा था।

हालांकि बजट कम होने के कारण ज्यादातर नए सितारों के साथ फिल्म शुरू की गई थी। तब प्राण एक बड़े खलनायक थे और लोग उन्हें देखने सिनेमाघरों पर टूटते थे। उनको ध्यान में रखकर मनोज कुमार ने एक काल्पनिक किंतु एक महत्वपूर्ण पात्र केहर सिंह की रचना की थी। केवल कश्यप ने जब इस भूमिका के बारे में प्राण से बात की तो कम पैसे की वजह से उन्होंने भूमिका करने से इनकार कर दिया। तब मनोज कुमार जो उनके साथ दो बदन फिल्म कर चुके थे, किसी अन्य फिल्म के सेट पर मिले तो उन्होंने यह बताया कि यह छोटी-सी भूमिका उनके लिए कितनी महत्त्वपूर्ण साबित होगी क्योंकि यह उनको ध्यान में रखकर विशेष तौर पर लिखी गई है और अगर वह इसे नहीं करेंगे तो वह इसे फिल्म से ही निकाल देंगे। तब प्राण तैयार हो गए और सच में डाकू केहर सिंह की यह भूमिका उनके लिए बहुत लाभकारी सिद्ध हुई।

शहीद की शूटिंग लुधियाना के एक वास्तविक जेल में हुई थी। प्राण इस जेल में सत्याग्रहियों के साथ ही बंद थे लेकिन सर्वाधिक उग्र कैदी थे जो अपनी फांसी के दिन का इंतजार करते हुए जेल में हर रोज कुछ न कुछ उपद्रव फैलाते रहते हैं। मदन पुरी जेलर की भूमिका में थे। भगत सिंह के बारे में सुनकर उसका हृदय परिवर्तन हो जाता है। उसे इस बात पर हैरानी होती है कि उसके जैसे अपराधी और भारत माता के सपूत भगत सिंह को एक जैसी सजा कैसे दी जा सकती है यानी फांसी की सजा। अंतिम दृश्य में जब केहर सिंह को फांसी के लिए ले जाया जा रहा है तब वह भगत सिंह से मिलने की इच्छा प्रकट करता है और उससे कहता है कि मैं ऊपर जा रहा हूं और भगवान से पूछूंगा कि तुम्हारी दुनिया में यह क्या हो रहा है? भगत सिंह और केहर सिंह दोनों से एक जैसा बर्ताव। अंत में किसी नेक व्यक्ति से हाथ मिलाने की बात वाला दृश्य बहुत भावुक करने वाला है। क्योंकि दोनों के हाथ बंधे थे तो दोनों एक-दूसरे की ओर पीठ करके हाथ मिलाते हैं। फांसी के तख़्ते की और जाते-जाते वह आंखों में आंसुओं और रुंधे गले से दूसरे कैदियों से कहते है मेरे बच्चों यानी भगत सिंह और उनके साथियों का ख्याल रखना...। बाद में प्राण ने इस किरदार को हमेशा अपना सबसे शक्तिशाली किरदार माना। इस फिल्म में प्राण परदे पर केवल 5 मिनट ही रहे थे लेकिन इस किरदार से अच्छे व्यक्ति का रोल करने की उनकी काबिलियत सबके सामने आ गई थी। शहीद की टीम ने सभी को आश्चर्यचकित करते हुए बहुत नाम और पैसा कमाया।

1 जनवरी 1965 में रिलीज हुई इस फिल्म के प्रीमियर में लाल बहादुर शास्त्री जो बहुत कम समय के लिए आए थे, लेकिन फिर पूरे तीन घंटे बैठकर इस फिल्म को देखकर गए। इस फिल्म को उस साल के तीन राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। श्रेष्ठ कहानी के लिए ऑल इंडिया सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट। श्रेष्ठ हिंदी फिल्म के लिए राष्ट्रपति द्वारा रजत पदक और राष्ट्रीय एकता पर श्रेष्ठ फिल्म के लिए ?20,000 नगद । इस फिल्म को सबसे बड़ा पुरस्कार तब मिला जब भगत सिंह की मां ने लुधियाना में इस फिल्म को देखा और इसको अपने बेटे पर बनी सर्वश्रेष्ठ फिल्म बताया। फिल्म के क्रेडिट्स में फिल्म के निर्देशक के रूप में एस राम शर्मा का नाम गया था लेकिन सब जानते हैं इस फिल्म को निर्देशन मनोज कुमार ने ही किया था।

दैनिक पंचांग

17 फरवरी 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

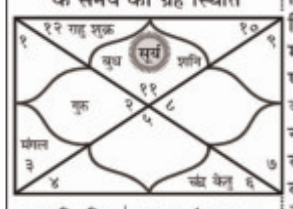

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	कुंभ में	कुंभ	06.17 बजे से
चंद्र	कन्या में	मीन	07.53 बजे से
मंगल	मिथुन में	मेष	09.24 बजे से
बुध	कुंभ में	वृष	11.04 बजे से
गुरु	वृष में	मिथुन	13.02 बजे से
शुक्र	मीन में	कर्क	15.16 बजे से
शनि	कुंभ में	सिंह	17.32 बजे से
राहु	मीन में	कन्या	19.44 बजे से
केतु	कन्या में	तुला	21.54 बजे से
राहुकाल	7.30 से 9.00 बजे तक	वृश्चिक	00.09 ब.से
		धनु	02.25 बजे से
		मकर	04.30 बजे से

सोमवार 2025 वर्ष का 48 वा दिन
दिशाशूल पूर्व **ऋतु** शिशिर।
विक्रम संवत् 2081 **शक संवत्** 1946
मास फाल्गुन (दक्षिण भारत में माघ)
पक्ष कृष्ण **तिथि** पंचमी 04.54 बजे प्रात: को समाप्त।
नक्षत्र चित्रा अहोरात्र।
योग शूल 08.55 बजे को समाप्त।
करण कौलव 15.34 बजे तदनन्तर तैतिल 04.54 बजे प्रात: को समाप्त।
चन्द्रायु 18.5 घण्टे
रवि क्रान्ति दक्षिण 11° 58'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872258
जूलियन दिन 2460723.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना शाबान
तारीख 18

दिन का चौघड़िया				रात का चौघड़िया			
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक		चर	05.43 से	07.14 बजे तक	
काल	07.22 से	08.50 बजे तक		रोग	07.14 से	08.45 बजे तक	
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक		काल	08.45 से	10.17 बजे तक	
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक		लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक	
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक		उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक	
चर	01.17 से	02.45 बजे तक		शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक	
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक		अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक	
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक		चर	04.22 से	05.53 बजे तक	

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

शहीद निर्मल महतो मेला के आयोजन को लेकर कमेटी का हुआ गठन

सिल्ली : सिल्ली आगामी महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर बुढ़ाम में 26 एवं 27 फरवरी को शहीद निर्मल महतो मेला का आयोजन शहीद निर्मल महतो मेला कमेटी के सदस्यों द्वारा किया जाएगा। मेला को भव्य रूप से आयोजित करने को लेकर रविवार को ग्रामीणों एवं सदस्यों के बीच बैठक कर सर्वसम्मति से कमेटी का गठन किया गया। जिसमें मेले का मुख्य संरक्षक राधिका महतो एवं भागीरथ महतो, संरक्षक हरिदास मुंडा, दशरथ महतो, रामपदो महतो, राजेंद्र महतो, उपेंद्र महतो, अध्यक्ष रविंद्र नाथ मुंडा, मुकेश महतो, दिलीप महतो एवं प्रवीण महतो इत्यादि को चुना गया।

पलामू टाइगर रिजर्व में हाथी की मौत

लातेहार : पलामू टाइगर रिजर्व अंतर्गत गारू पश्चिमी वन क्षेत्र में एक जंगली हाथी की मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलने के बाद रविवार को वन विभाग की टीम घटना स्थल पर पहुंचकर मामले की छानबीन कर रही है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि हाथी के पोस्टमार्टम होने के बाद ही मौत का कारण पता चल पाएगा। मिली जानकारी के अनुसार रविवार को वन विभाग को सूचना मिली कि वन क्षेत्र के बीसी 10 में एक हाथी की मौत हो गई है। सूचना के बाद वन विभाग की टीम घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की छानबीन की। बाद में डिप्टी डायरेक्टर कुमार आशीष के निर्देश पर मृतक हाथी के पोस्टमार्टम के लिए चिकित्सकों की टीम के साथ वन विभाग के अधिकारी घटनास्थल पर पहुंचे। बताया जाता है कि हाथी की मौत बीती रात ही हो गई है।

प्रेमी व प्रेमिका ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : नाबालिग प्रेमिका ने शादी से इनकार किया तो प्रेमी ने घर से दस किलोमीटर दूर स्थित जंगल में फांसी लगाकर जान दे दिया। इधर सदमे को बर्दाश्त नहीं कर पाई प्रेमिका ने भी घर से कुछ दूरी जंगल में फांसी लगाकर जान दे दी। प्रेमिका की शादी ठीक हो जाने से प्रेमी लड़का काफी नाराज चल रहा था। लड़की पर शादी का दबाव बना रहा था, लेकिन लड़की एक ही गांव के होने के कारण शादी करने से इन्कार कर गई थी, तो नाराज प्रेमी ने जान दे दी। मामला पलामू जिले के पाटन थाना अंतर्गत किसैनी के गोबरमारा टोला का है। जहां दो साल का प्रेम चढ़ा परवान ने दोनों की जान ले ली। पाटन पुलिस दो दिन पूर्व 14 फरवरी को नाबालिग प्रेमिका नीलम कुमारी 17 वर्ष पिता राजा सिंह का शव पेड़ से लटकते फंदे से उतारकर पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया था, वहीं प्रेमी जीतेंद्र सिंह 18 वर्ष पिता श्याम बिहारी सिंह बीते 13 फरवरी से बकरी चराने के बहाने घर से फरार था। पाटन पुलिस द्वारा काफी खोजबीन के बाद रविवार को घर से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित जंगल में शव पेड़ से लटका पाया गया। पाटन पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। ऐसे मृतक जीतेंद्र के परिजन 14 फरवरी को पाटन थाना में गुमशुदगी का मुकदमा दर्ज कराया था। जानकारी मिली कि कुछ दिनों पूर्व मृतक जीतेंद्र सिंह अपनी प्रेमिका को गांव के मंदिर में रात को बुलाकर शादी करने के लिए कसम खिला रहा था, जो लड़की शादी के लिए राजी नहीं हुई तो प्रेमी जीतेंद्र ने लड़की को उसी समय धमकी दी कि शादी नहीं करोगी तो हम फांसी लगाकर जान दे देंगे। लड़का 13 फरवरी की शाम को लड़की के पास फोन कर फांसी लगाने की बात बताई। इधर लड़की किसी को कुछ नहीं बताई और सदमें में घर से कुछ दूरी पर जाकर सखुआ पेड़ के फंदे से झुलकर जान दे दी। घटना की जानकारी के बाद मृतकों के घर पहुंचे जिप सदस्य संग्राम सिंह ने शोक-संतप्त परिजनों को ढांढस बंधाया। संग्राम सिंह ने इस घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए गहरी संवेदना व्यक्त किया। कहा कि आजकल इस तरह की घटना समाज को धूमिल कर रही है। अभिभावकों को सतर्क रहने की जरूरत है, ताकि बच्चें नादानी में कोई गलत कदम ना उठा लें, जिससे समाज-परिवार की छवि धूमिल हो। थाना प्रभारी लालजी ने पंचनामा करवाकर पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है।

संक्षिप्त खबरें

प्रजापति ब्रह्माकुमारी विवि ने कलश यात्रा एवं शोभा यात्रा निकाला

सिल्ली : सिल्ली प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय गीता पाठशाला की ओर से सिंगपुर तिरला महुवाडीह स्थित महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य पर कलश यात्रा एवं शोभा यात्रा निकाला गया। यह कलश यात्रा बड़ा मुरी, छोटा मुरी झारखंड मोड़ होते हुए महुआडीह कार्यालय आकर संपन्न हुआ। कलश यात्रा के दौरान महिलाओं ने संदेश दिया कि शिव परमात्मा एक है और सभी आत्माओं के पिता है। विश्व में सच्चा सुख शांति के साथ-साथ आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। शिव की नारे से पूरा क्षेत्र गुंजयमान हो गया। कलश यात्रा के दौरान शिव भगवान एवं भूत पिचास का बारात भी निकाला गया। इस मौके पर बिना बहन, सोनाली बहन, बुद्धेश्वर भाई, महादेव भाई, राजू भाई, दिलीप भाई आदि शामिल थे।

दो दिवसीय जिला स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता का हुआ समापन

सिमडेगा : नेहरू युवा केंद्र सिमडेगा द्वारा दो दिवसीय जिला स्तरीय खेल-कूद प्रतियोगिता का आयोजन एस एस प्लस टू उच्च विद्यालय, सिमडेगा के प्रांगण में किया गया। जिसका समापन आज किया गया। प्रतियोगिता में प्रखंड स्तरीय खेल कूद प्रतियोगिता के विजेताओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता अंतर्गत बालक वर्ग में फुटबॉल चार सौ मीटर दौड़ और लंबी कूद एवं बालिका वर्ग में कबड्डी दो सौ मीटर दौड़ और रस्सी कूद प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में ज्ञानेन्द्र, अपर समाहर्ता, सिमडेगा उपस्थित रहे। साथ ही रोशन कुमार जिला युवा अधिकारी, सत्यजीत कुमार, एन सी सी ऑफिसर एवं सोरिना टेटे, लेखापाल एवं कार्यक्रम पर्यवेक्षक भी मौजूद रहें। मुख्य अतिथि ने फुटबॉल के फाइनल मैच में प्रतिभागियों से परिचय प्राप्त किया एवं फुटबॉल को किक मारकर मैच का शुरूआत कराया। उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज के समय में पढ़ाई के साथ साथ खेल भी रोजगार का स्वर्णिम माध्यम बन गया है इसलिए जिन लोगों की नैसर्गीक रुचि है वो अपना करियर बनाने के लिए खेल में आगे बढ़ सकते हैं और जिन्हें पढ़ाई में रुचि है वो भी शारीरिक स्वास्थ्य के लिए खेल को जोड़ कर रख सकते हैं। बालक वर्ग अंतर्गत फुटबॉल में कुलुमारा जलडेगा ने टुकुपानी ठेठईटांगर को पेनल्टी शूट आउट में हराकर विजेता रहा। वहीं व्यक्तिगत स्पर्धा में चार सौ मीटर दौड़ में दिनेश महतो ने प्रथम, शुभंकर मांझी ने द्वितीय तथा करन नायक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, लंबी कूद में प्रथम स्थान हेमन्त मांझी, द्वितीय जगन्नाथ मांझी एवं तृतीय स्थान दिनेश महतो ने प्राप्त किया।

कांग्रेस ही कर सकती है झारखंड की भलाई : केशव महतो कमलेश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : कांग्रेस पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश रविवार को रामगढ़ पहुंचे। यहां उन्होंने कार्यकर्ता मिलन समारोह में शिरकत किया। इस दौरान उन्होंने कांग्रेस के पुराने नेता रणधीर गुप्ता और उनके समर्थकों को दोबारा कांग्रेस की सदस्यता दिलाई। इस दौरान उन्होंने कहा कि झारखंड की भलाई सिर्फ कांग्रेस ही कर सकती है। यहां की जनता के सुख दुख में कांग्रेस ने ही साथ दिया है। इसलिए यहां की नस-नस में कांग्रेस बसी हुई है। उन्होंने कहा कि पूरे झारखंड में कांग्रेस को छोड़कर दूसरे दलों में हुए नेता और कार्यकर्ता वापस वापस लौट रहे है। आज रामगढ़ का होनहार और ऊजार्वान साथी रणधीर गुप्ता अपने साथियों के साथ घर वापसी कर रहे है। रंधीर गुप्ता ने पार्टी में रहकर मजदूर और विस्थापितों के लिए लंबा संघर्ष किया है। जिसका उदाहरण अरगड्डा कोलियरी है। रामगढ़ पहुंचे कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष ने मंत्रियों और विधायकों के कार्यों पर भी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि हर किसी के कार्यकाल की समीक्षा होगी। हालांकि अभी सरकार के गठन हुए कुछ ही दिन हुए हैं, लेकिन फिर भी यह जरूरी है। रणधीर गुप्ता पहले कांग्रेस पार्टी में ही थे। 2019 में उन्होंने इस्तीफा देकर आजसू पार्टी का दामन थामा था। रविवार को घर वापसी के दौरान उन्होंने कहा कि कांग्रेस छोड़ने के बावजूद वे कांग्रेस से अलग नहीं हो पाए। अब मैं दुगनी ताकत के साथ कांग्रेस पार्टी को मजबूत करूंगा और कोलियरी के मजदूरों के लिए लड़ाई लड़ूंगा। इस मौके पर पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, पूर्व मंत्री प्रदीप बालमुचू, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष शहजादा अनवर, गो रक्षा समिति के चेयरमैन राजीव रंजन, प्रदेश प्रवक्ता रियाज अहमद, डॉ. राकेश किरण, बलजीत सिंह बेदी, बजरंग महतो, शांतनु मिश्रा आदि मौजूद थे।

सड़क किनारे पेशाब कर रहे व्यक्ति को कार ने रौंदा, हुई मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ थाना क्षेत्र के अरगड्डा बेंगामोड़ पर सड़क किनारे पेशाब कर रहे व्यक्ति को एक कार ने रौंद दिया। इस हादसे में हुई व्यक्ति की मौत के बाद ग्रामीणों ने रविवार को रामगढ़ थाने का घेराव किया। मृतक के परिजनों ने मुआवजे की मांग रखी, जिस पर पुलिस ने पहल करने का आश्वासन दिया। थाने का घेराव करने पहुंची मृतक जयराम मुंडा की पत्नी फूलों देवी के बयान पर रामगढ़ पुलिस ने प्राथमिकी भी दर्ज की है। फूलों देवी ने पुलिस को बताया कि उसका पति जयराम मुंडा 9 फरवरी को गांव के ही एक व्यक्ति शिवा मुंडा और साढु भाई के साथ लड़की देखने कुजू ओपी क्षेत्र के हेसागढ़ा गया हुआ था। वहां से लौटने के दौरान बेंगामोड़ पर वह अपनी मोटरसाइकिल किनारे कर पेशाब कर रहा था। इसी दौरान गिद्दी की तरफ से रामगढ़ आ रहे स्विफ्ट कार जेएच 01 ईवी 3472 ने उसे धक्का मार दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार वह कार बेहद तेज गति से चल रही थी और अनियंत्रित थी। हादसे के बाद कार वहां पलट गई। आनन-फानन में जयराम मुंडा को प्राथमिक उपचार के लिए अस्पताल ले जाया गया। जहां से चिकित्सकों ने उसे बेहतर इलाज के लिए रिम्स रेफर कर दिया। रिम्स में इलाज के दौरान ही रविवार को जयराम मुंडा की मौत हो गई। मृतक के शव को लेकर परिजन सीधे रामगढ़ थाने पहुंचे और मुआवजे की मांग रखी। प्राथमिकी के आधार पर पुलिस अब आगे की कार्रवाई कर रही है।

उत्तर प्रदेश

लखनऊ में सुभासपा विधायक वेदीराम ने नाला पाटा

शिकायत पर मेयर-नगर आयुक्त मोहल्ले में पहुंचे, लोग बोले- 6 फीट आगे तक कब्जा किया

लखनऊ। में सुभासपा विधायक वेदी राम पर लोगों ने भरवारा मल्हौर वार्ड में नाला पाटकर उसपर दीवार बनाने का आरोप लगाया है। मोहल्ले के लोगों का कहना है कि विधायक ने 6 फीट आगे तक जमीन पर कब्जा कर लिया है। इसके कारण नाराज लोगों ने मामले की शिकायत लखनऊ की महापौर और नगर आयुक्त से की है। महापौर सुषमा खर्कवाल ने रविवार को नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह और अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव के साथ मौके पहुंची। इस दौरान सैकड़ों की संख्या में लोग मौजूद रहे। लोगों ने विधायक द्वारा नाले की जमीन पाटने पर विरोध कर नाराजगी व्यक्त की है। भरवारा मल्हौर वार्ड में एमिटी यूनिवर्सिटी से एसटीपी की तरफ जाने वाले रास्ते पर विधायक की जमीन पर करीब 6 फीट बढ़ाकर नाले की जमीन पर बाउंड्रीवाल का निर्माण करने का आरोप है। निरीक्षण के दौरान मौके पर मिले व्यक्ति से महापौर सुषमा खर्कवाल ने कहा- एक व्यक्ति की वजह से 30 से 40 हजार लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा। इस दीवार को पीछे करिए। उन्होंने कहा- लोग 6 महीने से दौड़ रहे हैं। नगर निगम के अधिकारियों को इस दौरान जमीन के कागजात दिखाने के भी निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हम लोग पार्षद और महापौर हैं अगर लोगों की समस्या का समाधान नहीं करा सकते तो किस काम के हैं। इसके साथ ही मौके पर मिले व्यक्ति से कहा कि दो दिन के अंदर पेपर लेकर आइए। नहीं तो विधायक से खुद बात करूंगी। महिलाओं ने कहा- चार दिन से घर में बंद महिलाओं ने महापौर से कहा- जलभराव के चलते चार दिनों से घर में बंद हैं। वहीं, मौके पर लोगों ने नाराजगी व्यक्त करते हुए रजिस्ट्री के अनुसार जमीन की पैमाइश कराने की मांग की। वहीं मौके पर मौजूद विधायक प्रतिनिधि ने कहा- विधायक लखनऊ में नहीं है। कल आएंगे। इसके बाद बात करेंगे। ठाकुर सिंह मनराल सचिव गंगोत्री विहार ने बताया कि क्षेत्र में पार्क, रोड और नाले का निर्माण किया गया है। विधायक वेदी राम द्वारा नाले पर मिट्टी पाट दी गई है। यह प्राकृतिक नाला है। कठौता का पानी भी आता है। पार्षद ममता रावत ने कहा कि क्षेत्र ने जलनिकासी की समस्या है। यहां एक नाला बहुत पहले से बना हुआ था। इसी नाले से पानी रळढ जाता था। लेकिन नाला पटने के कारण पानी निकल नहीं पा रहा है। महापौर ने मौके पर आकर आश्वासन दिया है। इस दौरान कई अन्य लोगों ने भी नाले की जमीन पर कब्जा किया है।

रक्तदान शिविर में युवाओं ने किया स्वैच्छिक रक्तदान

कुशीनगर। नगर पंचायत फाजिलनगर के एक निजी मैरेज हाल में माँ शारदा सेवा संस्था के द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 15 यूनिट ब्लड युवाओं ने दान किया। मुख्य अतिथि चंद्रशेखर उर्फ लड्डू यादव ने कहा की रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं, रक्तदान से मानव जीवन को बचाया जा सकता है तथा सामाजिक एकता को मजबूत करने में स्वैच्छिक रक्तदान की महत्वपूर्ण भूमिका है । आयोजक डॉ एसके यादव बताया कि लोगों द्वारा रक्त दान करने से दिल की सेहत में सुधार, दिल की बीमारियों और स्ट्रोक के खतरे को कम माना जाता है। खून में आयरन की ज्यादा मात्रा दिल के दौरे के खतरे को बढ़ा सकती है। नियमित रूप से रक्तदान करने से आयरन की अतिरिक्त मात्रा नियंत्रित हो जाती है। जो दिल की सेहत के लिए अच्छी है। रक्तदान में डॉ एसके यादव, श्रवण कुमार गुप्ता, सुमित सिंह,राजन ठाकुर, डॉक्टर अजीत कुमार गुप्ता, अजय यादव, रितेश प्रताप सिंह, दीपांशु बरनवाल सहित पंद्रह से अधिक लोगों ने भाग लिया` इस दौरान डॉक्टर जितेन्द्र प्रजापति, अभिषेक लड्डू यादव, उस्मान गनी नूरी, डॉक्टर श्रीमती मंजू यादव, मनोज सिंह, पलटन यादव, तारकेश्वर सिंह, अशोक गुप्ता, नन्दलाल गोंड, मालती देवी, शिवानी गुप्ता, सुरेंद्र, अमित कुमार मौजूद रहे।

वार्षिकोत्सव और विदाई समारोह में बच्चों ने दी मनमोहक प्रस्तुति

फाजिलनगर, कुशीनगर। क्षेत्र के नारायनपुर कोठी स्थित जितेंद्र स्मारक इंटरमीडिएट कालेज में वार्षिकोत्सव, कक्षा 10वीं व 12 वीं के छात्रों और अवकाश प्राप्त शिक्षकों के विदाई समारोह का भव्य आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद शशांक मणि त्रिपाठी ने कहा कि यह विदाई आपको आगे बढ़ाने की प्रक्रिया है। यहां से निकलकर बेहतर मुकाम हासिल करते हुए इस विद्यालय और अपनी माता पिता का नाम रोशन करें। संत दिव्यसागर जी महाराज ने छात्रों को जीवन में संस्कार और अनुशासन के महत्व पर जोर दिया। भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय, पडरौना विधायक मनीष जायसवाल, रामकोला विधायक विनय गौड़, डा. शैलेंद्र मिश्र, नंदलाल विद्रोही, रामबृक्ष गिरी, महेंद्र नाथ उपाध्याय, पूर्व जिला पंचायत सदस्य ज्ञानेश्वर द्विवेदी दीपक ने सम्बोधित किया। क्षेत्रीय विधायक सुरेन्द्र कुमार कुशवाहा ने सभी अतिथियों का स्वागत व आभार किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला संघ चालक रामाश्रय प्रसाद ने सभी को अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इसके पूर्व मुस्कान कुशवाहा, अर्चना गोड़, राजल विश्वकर्मा, सानिया, अर्चना गोड, संजना चौरसिया, खुशबू आदि ने नृत्य आदि प्रस्तुत किया। अंत में अवकाश प्राप्त शिक्षक रामायन यादव तथा स्थानांतरित शिक्षक बृजेन्द्र बहादुर यादव और लखीचंद विश्वकर्मा को स्मृति चिन्ह व गीता पुस्तक भेंटकर सम्मानित किया गया। अध्यक्षता पूर्व विधायक व प्रबंधक गंगा सिंह कुशवाहा व संचालन कवि मनंजय तिवारी निर्मल तथा शिक्षक राजेन्द्र प्रसाद कुशवाहा ने किया। इस अवसर पर पूर्व प्रवक्ता भोला प्रसाद सिंह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला संपर्क प्रमुख चंद्रिका शर्मा, विनोद शर्मा, दिलीप सिंह, विजय प्रकाश सिंह, डॉ. अजयनाथ तिवारी, प्रेम कुमार तिवारी, संजय सिंह, योगेश तिवारी, नीलेश शर्मा, अनीता सिंह, मोहनलाल गुप्ता उपस्थित रहे।

छेड़खानी के साथ ही खतरनाक चोट के गुनाहगार को चार साल की सख्त सजा के साथ हुआ ग्यारह हजार का जुमार्ना

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर नगर में 2 दिसम्बर 2013 को अभियुक्त ने 14 वर्षीय नाबालिग छात्रा से मोबाइल नम्बर मांगा, वही छात्रा के नम्बर देने से मना करने पर अभियुक्त ने छात्रा का जबरन हाथ पकड़कर उसे बुरी नियत से खींच लिया,साथ ही मारपीट कर गाली गलौज करने के मामले में हमीरपुर सदर कोतवाली में अभियुक्त विवेक सिंह पुत्र हरपाल सिंह निवासी रहुनियां धर्मशाला के खिलाफ अ0सं0-2395/2013 धारा 354ख,323,504,506 भा0द0सं0 व 8 पॉक्सो एक्ट के तहत दर्ज किया गया था, वही आपरेशन कन्विक्शन के तहत 15 फरवरी 2025 को हमीरपुर की पाक्सो अदालत की स्कालर जज कीर्ति माला सिंह ने अभियुक्त विवेक सिंह पुत्र हरपाल सिंह को गुनाहगार मानते हुये चार साल की सख्त सजा के साथ ही ग्यारह हजार रुपये का सुनाया जुमार्ना, मामले की जांच एस आई एपी सिंह ने की थी, जबकि अभियोजन की तरफ से एडीजीसी रुद्र प्रताप सिंह ने पैरवी की।

हमीरपुर की मझगवां पुलिस ने लूट के दो फरार चल रहे लूटेरों को वारदात में इस्तेमाल की गई मोटरसाइकिल के साथ दबोचा

हमीरपुर। उत्तर प्रदेश के हमीरपुर की मझगवां पुलिस ने अपराधियों की धरपकड़ के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के तहत 10 फरवरी 2025 को टोला रावत के पास लूट की वारदात को अंजाम देने वाले फरार चल रहे दो लूटेरों को दबोचने में कामयाबी हासिल की, मझगवां पुलिस ने बताया कि जरिया थाना क्षेत्र के रिगवारा निवासी 20 वर्षीय प्रिन्स पुत्र जयपाल लोधी सहित जरिया थाना क्षेत्र के ही अमूद निवासी 19 वर्षीय दीपक कुमार पुत्र परमेश्वरी दयाल को गोहानी पुलिया के पास से दबोच कर अदालत में पेश किया गया। गौरतलब है कि वारदात के बाद पीड़ित की तहरीर पर दोनों लुटेरों के खिलाफ मझगवां पुलिस ने मु०अ०सं० 14/2025 धारा 309(6)/ 317(2) बी०एन०एस० सहित 9(1)अ(1)/25(2) आर्म एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था। मामला दर्ज होने के बाद से ही पुलिस लुटेरों की तलाश कर रही थी, जबकि पकड़े गये दोनों लूटेरों के पास से पुलिस ने मोटरसाइकिल,315 बोर का अवैध असलहा, जबकि दो जिंदा कारतूस सहित एक मोटरोला मोबाइल बरामद करने में कामयाबी हासिल की है, वही मझगवां पुलिस ने बताया कि लुटेरों के खिलाफ जनपद महोबा के चरखारी थाने में भी पहले से मु०अ०सं० 21/2025, धारा 309(4)/352/125अ बीएनएस के तहत मामला दर्ज है। लुटेरों को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में खासतौर से एस एस आई शिव सहाय सरोज, एस आई अनुज कुमार सिसौदिया, एस आई अमोल सिंह, एस आई रवि मेहता, हैड कांस्टेबल महेन्द्र सिंह सहित कांस्टेबल सौरभ कुमार शामिल रहे।

वैश्विक रुख, एफपीआई की गतिविधि तय करेंगे शेयर बाजार की दिशा : विश्लेषक

- डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल और कच्चे तेल के दाम भी बाजार की धारणा को प्रभावित करेंगे

मुंबई ।

कंपनियों का तिमाही पे रिणामों का सीजन समाप्त होने के बाद इस सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों की दिशा वैश्विक रुख और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) की गतिविधियों से तय होगी। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। विश्लेषकों ने कहा कि विदेशी कोषों की लगातार निकासी, कंपनियों के उम्मीद से कमजोर तिमाही नतीजों और वैश्विक स्तर पर व्यापार युद्ध की आशंका से पिछले सप्ताह शेयर बाजारों की धारणा पर असर हुआ है। शुक्रवार को सेंसेक्स और निफ्टी लगातार आठवें कारोबारी सत्र में गिरावट के साथ बंद हुए। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि तीसरी तिमाही के नतीजों का सीजन समाप्त होने के साथ अब बाजार की नजरें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की व्यापार नीतियों की वजह से उत्पन्न हालात और वैश्विक घटनाक्रमों पर रहेगी। इसके अलावा डॉलर के मुकाबले रुपये की चाल और ब्रेंट कच्चे तेल के दाम भी बाजार की धारणा को प्रभावित करेंगे। उन्होंने कहा कि तिमाही नतीजों का सीजन समाप्त होने के साथ अब बाजार की निगाह आगे के संकेतों के लिए एफपीआई के प्रवाह और मुद्रा के उतार-चढ़ाव पर रहेगी। इसके साथ ही अमेरिकी शुल्क और वैश्विक व्यापार पर इसका प्रभाव भी बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेगा। सप्ताह के दौरान फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) की बैठक का ब्योरा भी जारी किया जाएगा। एक वरिष्ठ विश्लेषक ने कहा कि घरेलू मोर्चे पर घटनाक्रमों के अभाव में वैश्विक रुझान बाजार की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। बाजार विश्लेषकों ने कहा कि बाजार में कई कारणों से गिरावट आई है। इसमें प्रमुख कारक अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा व्यापारिक भागीदार देशों पर ऊंचा शुल्क लगाने की घोषणा है।

इसके अलावा कंपनियों के कमजोर तिमाही नतीजों तथा विदेशी निवेशकों की सतत निकासी से भी बाजार धारणा प्रभावित हुई है।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 7.6 बिलियन डॉलर तक बढ़ा

नई दिल्ली ।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार ने 7 फरवरी तक 7.6 बिलियन डॉलर बढ़कर 638 डॉलर बिलियन हो गया। यह तीसरा सप्ताह है जब विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि हुई है। पिछले साल सितंबर में भारत का उच्च स्तर 704.885 अरब डॉलर था। 2023 में वृद्धि के साथ भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 58 अरब डॉलर की बढ़ोतरी देखने को मिली। स्वर्ण भंडार में भी 1.3 बिलियन डॉलर की वृद्धि के साथ 72.20 बिलियन डॉलर तक पहुंचने के साथ पर्याप्त वृद्धि देखी गई। भारत का कुल स्वर्ण भंडार अब 876 टन है, जो दुनिया के सबसे बड़े सोने के खरीदारों में दूसरे स्थान पर है। आरबीआई ने नीतिगत कदम के रूप में रेपो दर में 25 आधार अंकों की कमी कर 6.25 फीसदी करने का निर्णय लिया है। केंद्रीय बैंक विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग करके रुपये में अस्थिरता को प्रबंधित कर रहा है, खासकर जब विदेशी निवेशक शेयर बेचकर निकासी करते हैं। ग्लोबल अर्थव्यवस्था के साथ समर्थनात्मक स्थिति के साथ, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार और स्वर्ण भंडार देश के अर्थों में सुधार का संकेत दे रहे हैं। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल की रिपोर्ट के अनुसार आरबीआई ने नवंबर 2024 में अतिरिक्त 8 टन सोना हासिल किया, जिससे महीने के दौरान वैश्विक केंद्रीय बैंक खरीद 53 टन हो गई।

भारत का कुल स्वर्ण भंडार अब 876 टन है, जो पोलैंड के बाद 2024 में दूसरे सबसे बड़े खरीदार के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करता है। एक महत्वपूर्ण नीतिगत कदम में आरबीआई ने नवीनतम मौद्रिक नीति समिति की बैठक के दौरान रेपो दर में 25 आधार अंकों की कमी कर 6.25 फीसदी करने का निर्णय लिया, पांच वर्षों में पहली बार दर में कटौती। केंद्रीय बैंक रुपये में अस्थिरता को प्रबंधित करने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग करता है, खासकर जब विदेशी निवेशक शेयर बाजार से शेयर बेचकर निकासी करते हैं।

गौतम अडानी की संपत्ति में बड़ी गिरावट

- दुनिया के अमीरों की सूची में 23वें स्थान पर

मुंबई ।

देश के प्रमुख रईसों में से एक अडानी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडानी की संपत्ति में बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर इंडेक्स के अनुसार, उनकी नेटवर्थ 2.73 अरब डॉलर घटकर 66.1 अरब डॉलर रह गई है। इसके चलते वे दुनिया के अमीरों की सूची में 23वें स्थान पर खिसक गए हैं। अडानी के साथ ही भारतीय रईसों की नेटवर्थ में गिरावट देखने को मिल रही है। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी की संपत्ति में भी 4.55 अरब डॉलर की गिरावट आई है। इससे एशिया के सबसे बड़े रईस के स्थान पर सवाल खड़े हैं। भारतीय रईसों के बीच संपत्ति में गिरावट के कारण घरेलू शेयर बाजार में लगातार गिरावट आ रही है। इससे नामी उद्योगपतियों जैसे शिव नाडर, शापूरजी मिस्त्री, अजीम प्रेमजी, सावित्री जिंदल और दिलीप सांघवी की नेटवर्थ में भी गिरावट देखने को मिल रही है। विश्व के सबसे अमीर व्यक्ति एलेन मस्क की नेटवर्थ में भी गिरावट दर्ज की गई है, जबकि मार्क जुकरबर्ग सबसे अच्छे कमाई वाले रईस बने हुए हैं। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और एशिया के सबसे बड़े रईस मुकेश अंबानी की नेटवर्थ में इस साल 4.55 अरब डॉलर की गिरावट आई है। वह 86.1 अरब डॉलर की नेटवर्थ के साथ दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 17वें नंबर पर बने हुए हैं। एचसीएल के शिव नाडर ने इस साल 4.14 अरब डॉलर, शापूरजी मिस्त्री ने 2.18 अरब डॉलर, अजीम प्रेमजी ने 18.8 करोड़ डॉलर, सावित्री जिंदल ने 5.20 अरब डॉलर और सन फार्मा के दिलीप सांघवी ने 3.40 अरब डॉलर गंवाए हैं।

दुनिया में सबसे ज्यादा नेटवर्थ गंवाने के मामले में एलन मस्क पहले नंबर पर हैं जबकि सबसे ज्यादा कमाई करने में मार्क जुकरबर्ग सबसे आगे हैं। दुनिया के सबसे बड़े रईस मस्क की नेटवर्थ में इस साल 34.1 अरब डॉलर गंवाए हैं। अब उनकी नेटवर्थ 398 अरब डॉलर रह गई है। दूसरी तरफ फेसबुक की पेरेंट कंपनी मेटा प्लेटफॉर्म्स के सीईओ जुकरबर्ग की नेटवर्थ में इस साल 52 अरब डॉलर की तेजी आई है।

देश के टैबलेट बाजार में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज

नई दिल्ली । सालाना आधार पर देश के टैबलेट बाजार में 25 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत के टैबलेट बाजार में 2024 में शानदार वृद्धि दर्ज की गई है। बाजार में यह उछाल मुख्य रूप से 5जी टैबलेट की बढ़ती मांग के कारण आया है, जिसमें पिछले साल की तुलना में 424 प्रतिशत की भारी वृद्धि देखी गई। एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत के कुल टैबलेट बाजार में एप्पल ने 29 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया। इसके बाद सैमसंग 28 प्रतिशत और लेनोवो 16 प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। पहली बार, एप्पल ने भारत में एक ही साल में 10 लाख से अधिक आईपैड शिप कर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की। सीएमआर का अनुमान है कि 2025 में भारत का टैबलेट बाजार 10-15 प्रतिशत की स्थिर वृद्धि के साथ आगे बढ़ता रहेगा। हालांकि, 2024 की चौथी तिमाही में सैमसंग ने 29 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी के साथ बढ़त बना ली, जबकि लेनोवो 23 प्रतिशत और एप्पल 21 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। सीएमआर की सीनियर एनालिस्ट मेनका कुमारी के अनुसार, भारत का टैबलेट बाजार अब प्रीमियम सेगमेंट (20,000 रुपये से अधिक) की ओर शिफ्ट हो रहा है। इस श्रेणी में शिपमेंट में 128 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जिससे यह स्पष्ट होता है कि लोग अब अधिक उन्नत फीचर्स और बेहतर प्रदर्शन वाले टैबलेट खरीदना पसंद कर रहे हैं। एप्पल ने इस सेगमेंट में अपना दबदबा बनाए रखा, जिसमें आईपैड 10 सीरीज सबसे अधिक बिकने वाला मॉडल रहा। एप्पल के कुल शिपमेंट में इसका योगदान 55 प्रतिशत था। आईपैड मिनी (2024) के लॉन्च से एप्पल के बाजार नेतृत्व को और मजबूती मिलने की उम्मीद है। दूसरी ओर, सैमसंग ने भी 53 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर्ज की। गैलेक्सी टैब ए9 प्लस 5जी मॉडल ने इसकी सफलता में बड़ी भूमिका निभाई, जो कंपनी की कुल टैबलेट शिपमेंट का 68 प्रतिशत था।

सेंसेक्स की 10 में से आठ प्रमुख कंपनियों का मार्केट कैप 2.03 लाख करोड़ घटा

- शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही

मुंबई ।

पिछले सप्ताह सेंसेक्स की 10 प्रमुख कंपनियों में से आठ के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से दो लाख करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट देखी गई। शेयर बाजार में कमजोरी के रुख के बीच सबसे ज्यादा नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में रिलायंस इंडस्ट्रीज, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), एचडीएफसी बैंक, इन्फोसिस, भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई), हिंदुस्तान यूनिलीवर, बजाज फाइनेंस और आईटीसी के मूल्यांकन में सामूहिक रूप से 2,03,952.65 करोड़ रुपये की गिरावट आई। वहीं भारती एयरटेल और आईसीआईसीआई बैंक का बाजार मूल्यांकन बढ़ गया। सप्ताह के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार पूंजीकरण 67,526.54 करोड़ रुपये घटकर 16,46,822.12 करोड़ रुपये, टीसीएस का मूल्यांकन 34,950.72 करोड़ रुपये घटकर 14,22,903.37 करोड़ रुपये, एचडीएफसी बैंक की बाजार हैसियत 28,382.23 करोड़ रुपये घटकर 12,96,708.35 करोड़ रुपये, आईटीसी की 25,429.75 करोड़ रुपये के नुकसान के साथ 5,13,699.85 करोड़ रुपये, इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 19,287.32 करोड़ रुपये घटकर 7,70,786.76 करोड़ रुपये, एसबीआई की बाजार हैसियत 13,431.55 करोड़ रुपये घटकर 6,44,357.57 करोड़ रुपये, हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार मूल्यांकन 10,714.14 करोड़ रुपये घटकर 5,44,647 करोड़ रुपये और बजाज फाइनेंस का मूल्यांकन 4,230.4 करोड़ रुपये घटकर 5,20,082.42 करोड़ रुपये रह गया। इस रुख के विपरीत भारती एयरटेल की बाजार हैसियत 22,426.2 करोड़ रुपये बढ़कर 9,78,631.54 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का बाजार पूंजीकरण 1,182.57 करोड़ रुपये बढ़कर 8,88,815.13 करोड़ रुपये हो गया। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, इन्फोसिस, एसबीआई, हिंदुस्तान यूनिलीवर, बजाज फाइनेंस और आईटीसी का स्थान रहा।

चालू वित्त वर्ष में मदर डेयरी को अपना कारोबार 17,000 करोड़ के पार होने की उम्मीद

- मदर डेयरी की स्थापना 1974 में हुई थी, कंपनी ने अपनी स्थापना के 50 साल पूरे किए

नई दिल्ली ।

अपने खाद्य उत्पादों की बेहतर मांग तथा उत्पादन क्षमता के साथ वितरण नेटवर्क के विस्तार से चालू वित्त वर्ष 2024-25 में दिल्ली-एनसीआर में प्रमुख दुग्ध आपूर्तिकर्ता मदर डेयरी का कारोबार 15 प्रतिशत बढ़कर 17,000 करोड़ रुपये से अधिक रहने की उम्मीद है। दूध और अन्य डेयरी उत्पादों के अलावा मदर डेयरी धारा ब्रांड के तहत खाद्य तेल और सफल ब्रांड के तहत बागवानी उत्पाद बेचती है। मदर डेयरी की स्थापना 1974 में हुई थी। अब यह राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) के पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी है। मदर डेयरी के एक प्रमुख अे धिकारी ने कहा कि चालू वित्त वर्ष कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है क्योंकि इसने अपनी स्थापना के 50 साल पूरे किए हैं। हम चालू वित्त वर्ष में 15 प्रतिशत की प्रभावशाली वृद्धि के साथ साल का समापन 17,000 करोड़ रुपये से अधिक के कारोबार के साथ करेंगे। वित्त वर्ष 2023-24 में मदर डेयरी ने 15,037 करोड़ रुपये का कारोबार हासिल किया था। डेयरी कारोबार ने कुल वार्षिक राजस्व में लगभग 75 प्रतिशत का योगदान दिया था। यह मजबूत प्रदर्शन हमारी रणनीतिक पहल का प्रमाण है। दिल्ली-एनसीआर से परे हम राष्ट्रीय स्तर पर उपस्थिति बढ़ा रहे हैं, नई पीढ़ी के वितरण चैनल के माध्यम से अपनी पहुंच को मजबूत कर रहे हैं, विनिर्माण क्षमता का विस्तार कर रहे हैं और उपभोक्ताओं को आकर्षित करने के लिए नए रोमांचक उत्पाद पेश कर रहे हैं। क्षमता विस्तार के लिए मदर डेयरी 500 करोड़ रुपये से अधिक के अनुमानित निवेश के साथ महाराष्ट्र के नागपुर में एक विशाल दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित कर रही है। इस नई सुविधा के 2026 तक चालू होने की उम्मीद है और यह मध्य और दक्षिणी क्षेत्र के बाजारों को उत्पादों की आपूर्ति करेगा। बागवानी कारोबार में मदर डेयरी ने दो एकीकृत फल और सब्जी प्रसंस्करण सुविधाओं की आधारशिला रखी है।

इनमें से एक इटोला, वडोदरा, गुजरात और दूसरी आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में है। इसके अलावा सफल ब्रांड के तहत कंपनी ने 350 करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश के साथ दो नए संयंत्र स्थापित किए हैं। चालू वित्त वर्ष में कंपनी ने विभिन्न श्रेणियों में 30 नए उत्पाद उतारे हैं।

अरबिंदो फार्मा कंपनी यूरोपीय बाजार में उत्पादों की आपूर्ति शुरू करेगी

नई दिल्ली । दवा निर्माता अरबिंदो फार्मा कंपनी के एक प्रमुख अधिकारी ने घोषणा की है कि कंपनी अपने चीन के संयंत्र से यूरोप के बाजारों में अप्रैल महीने से उत्पादों की आपूर्ति शुरू करेगी। कंपनी ने नवंबर, 2024 के अंतिम सप्ताह में इस संयंत्र का परिचालन शुरू किया था और अब उत्पादन बढ़ाने की प्रक्रिया में है। सुब्रमण्यन ने बताया कि यूरोप से नियामकीय मंजूरियां मिल चुकी हैं और वहां उत्पादों की आपूर्ति शुरू करने की योजना है। उन्होंने कहा कि कंपनी को अगले 2-3 वर्षों में चीन संयंत्र से अच्छी कमाई की उम्मीद है। वे ने राजस्व अनुमान के बारे में भी जानकारी दी और कहा कि दो से तीन साल में महत्वपूर्ण राजस्व मिलने की उम्मीद है। इस साल कंपनी ने अपने उत्पादों को महत्वपूर्ण बाजारों में लाने के लिए कई कदम उठाए हैं और अप्रैल से यूरोप में आपूर्ति शुरू करने का नया प्रस्ताव भी इसी दिशा में कदम है। यह अगले कुछ महीनों में कंपनी के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है और इसके साथ ही यूरोप के रोजगार की वृद्धि के लिए भी महत्वपूर्ण समाचार है। अरबिंदो फार्मा ने अपने उत्पादों की गुणवत्ता के मामले में भी अच्छी प्रतिष्ठा हासिल कर ली है और इसका यूरोप में उत्तराधिकारी हो या न करने का संकेत हो सकता है।

विदेशों में दाम चढ़ने से बीते सप्ताह अधिकांश तेल-तिलहन कीमतों में सुधार

- सोयाबीन तिलहन के दाम में गिरावट रही

नई दिल्ली । बीते सप्ताह विदेशी बाजारों में खाने के तेल महंगे होने तथा देश में आयात शुल्क पुनर्निर्धारित करने के कारण देश के तेल-तिलहन बाजार में अधिकांश तेल-तिलहनों के दाम मजबूती के साथ बंद हुए। निर्यात में सोयाबीन डी-आयल्ड केक (डीओसी) का दाम कम मिलने के बीच सोयाबीन तिलहन के दाम में गिरावट देखने को मिली। बाजार सूत्रों ने कहा कि इन सबके अलावा समीक्षाधीन सप्ताह के अंत में खाद्य तेलों के आयात शुल्क मूल्य में फेरबदल करते हुए सोयाबीन डीगम तेल का आयात शुल्क मूल्य 88 रुपये क्विंटल घटाया गया है, जबकि कच्चे पामतेल (सीपीओ) का आयात शुल्क मूल्य पांच रुपये क्विंटल बढ़ाया गया है। पामोलीन के आयात शुल्क मूल्य को 19 रुपये क्विंटल घटाया गया है। विदेशों में पिछले महीने जिस सोयाबीन डीगम तेल का दाम 1,110-1,115 डॉलर प्रति टन था वह समीक्षाधीन सप्ताह में बढ़कर 1,175-1,180 डॉलर प्रति टन हो गया। इस दौरान, 1,170-1,175 डॉलर वाले सीपीओ का दाम बढ़कर 1,180-1,185 डॉलर प्रति टन हो गया। यानी सीपीओ और सोयाबीन डीगम के दाम का जो अंतर पहले अधिक था, वह अंतर अब लगभग बराबर हो चला है। सूत्रों ने कहा कि समीक्षाधीन अवधि में एक मात्र सोयाबीन तिलहन के दाम में गिरावट रही। यह गिरावट मुख्यत- निर्यात में अच्छा दाम नहीं मिलने की वजह से है। बीते सप्ताह सरसों दाने का थोक भाव 25 रुपये के सुधार के साथ 6,125-6,225 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। सरसों दादरी तेल का थोक भाव 150 रुपये के सुधार के साथ 13,350 रुपये प्रति क्विंटल, सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल का भाव क्रमशः 30-30 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 2,295-2,395 रुपये और 2,295-2,420 रुपये टिन (15 किलो) पर, सोयाबीन दाने और सोयाबीन लूज का थोक भाव क्रमशः 25-25 रुपये की गिरावट के साथ क्रमशः 4,275-4,325 रुपये और 3,975-4,075 रुपये प्रति क्विंटल, सोयाबीन दिल्ली एवं सोयाबीन इंदौर और सोयाबीन डीगम के दाम क्रमशः 300 रुपये, 250 रुपये और 400 रुपये के सुधार के साथ क्रमशः 14,000 रुपये, 13,650 रुपये और 10,000 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तिलहन का भाव 200 रुपये की तेजी के साथ 5,475-5,800 रुपये क्विंटल पर, मूंगफली तेल गुजरात और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल का भाव क्रमशः 150 रुपये और 30 रुपये के सुधार के साथ 14,200 रुपये और 2,165-2,465 रुपये प्रति टिन, कच्चे पाम तेल (सीपीओ) का दाम 200 रुपये सुधरकर 13,000 रुपये प्रति क्विंटल और पामोलीन दिल्ली का भाव 350 रुपये मजबूत होकर

भारतीय रिजर्व बैंक ने सोने की खरीदारी में बढ़ोतरी की

जनवरी 2025 तक आरबीआई के पास कुल 876.18 टन सोना था

नई दिल्ली । दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने हाल के वर्षों में सोने की भारी खरीदारी की वजह से महत्वपूर्ण स्थिति हासिल की है। 2024 के दौरान आरबीआई ने 72.6 टन सोने की खरीदारी की, जो पिछले साल के मुकाबले चार गुना ज्यादा है। इस बढ़ती खरीदारी ने आरबीआई को दुनिया के शीर्ष दस केंद्रीय बैंकों में शामिल कर दिया है। यह सोना आरबीआई के फिनैंसियल पोर्टफोलियो को वैश्विक अनिश्चितताओं के खिलाफ सुरक्षित बनाने में मदद कर रहा है। इस मुद्दे पर संसद में चर्चा होते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने स्पष्ट किया कि आरबीआई का ध्यान केवल भंडार के संतुलन पर है और इसका मकसद किसी अन्य मुद्रा की जगह सोने को प्राथमिकता देना नहीं है। जनवरी 2025 तक आरबीआई के पास कुल 876.18 टन सोना था, जिसकी कीमत 66.2 अरब डॉलर थी। यह एक चौंकाने वाली वृद्धि है इसके अलावा रिजर्व बैंक की खरीदारी ट्रेंड को लेकर विश्लेषकों का मानना है कि यह ट्रेंड जारी रहेगा, जो दुनिया भर के केंद्रीय बैंकों के लिए सुरक्षित संपत्ति प्रदर्शित करता है।

भारत के एक्सपोर्ट में आई तेजी, 446 अरब डॉलर के निर्यात का अनुमान

निर्यात 109.3 बिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद

नई दिल्ली ।

भारत के व्यापारिक निर्यात में चालू वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में 124.8 बिलियन डॉलर की वृद्धि होने का अनुमान है। इस वृद्धि के दृष्टिकोण में इंडिया एक्जिम बैंक के अनुमानों के अनुसार, कुल व्यापारिक निर्यात 446.5 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। निर्यात में गैर-तेल निर्यात में तीव्र वृद्धि के साथ 109.3 बिलियन डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत का व्यापार घाटा दिसंबर में घटकर 21.94 बिलियन डॉलर रह गया, जबकि नवंबर में इसमें वृद्धि हुई थी। हालांकि, दिसंबर में आयात में गिरावट आई। इसके बावजूद, व्यापार नीति की अनिश्चितताओं और भू-राजनीतिक तनाव के चलते चुनौतियाँ बनी रही हैं। सालाना आधार पर दिसंबर के दौरान व्यापार घाटा बढ़ा, लेकिन निर्यात में कुछ मामूली गिरावट आई। यह स्थिति व्यापारिक निर्यात को गुजरने वाले समय में वृद्धि की संभावना को दर्शाती है। नए अनुमान स्थिर सुधार की दिशा में हैं, जो कि मजबूत विनिर्माण गतिविधि और मांग में वृद्धि के साथ समर्थित होने का संकेत देते हैं।

व्यापार नीति की अनिश्चितताओं, भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक आर्थिक विखंडन जैसी चुनौतियों के बावजूद, निर्यात में सकारात्मक गति अगले वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जारी रहने की संभावना है. नवीनतम अनुमान स्थिर सुधार का संकेत देते हैं, जो कि मजबूत विनिर्माण गतिविधि, लचीले कृषि निर्यात और वैश्विक मांग में सुधार द्वारा समर्थित हैं। इस बीच, भारत का व्यापार घाटा दिसंबर में घटकर 21.94 बिलियन डॉलर रह गया, जबकि नवंबर में यह आंकड़ा 32.84 बिलियन डॉलर था, क्योंकि मासिक आधार पर निर्यात में वृद्धि हुई, जबकि आयात में गिरावट आई. दिसंबर में व्यापारिक निर्यात बढ़कर 38.01 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि नवंबर में यह 32.11 बिलियन डॉलर था, जबकि आयात घटकर 59.95 बिलियन डॉलर रह गया, जो नवंबर में 64.95 बिलियन डॉलर था। हालांकि, सालाना आधार पर दिसंबर के दौरान व्यापार घाटा बढ़ गया, जबकि दिसंबर 2023 में यह 18.76 बिलियन डॉलर था. दिसंबर 2024 में व्यापारिक निर्यात में 1 प्रतिशत की गिरावट आई, जो पिछले वर्ष के इसी महीने में 38.39 बिलियन डॉलर था, जबकि आयात में दिसंबर 2023 में 57.15 बिलियन डॉलर से 4.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

हीरो मोटोकॉर्प का अगले वित्त वर्ष में राजस्व में 10 प्रतिशत वृद्धि का लक्ष्य

नई दिल्ली । देश की लीडिंग दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी हीरो मोटोकॉर्प ने अपने नए उत्पादों और खंडों में सतत निवेश के माध्यम से अगले वित्त वर्ष में अपने राजस्व में दो अंकीय वृद्धि का लक्ष्य घोषित किया है। कंपनी के मुख्य वित्त अधिकारी ने इसकी जानकारी दी, जिसके अनुसार दिसंबर तिमाही में कंपनी का राजस्व 10,260 करोड़ रुपये रहा है। कंपनी की नजर नए उत्पादों और खंडों पर निवेश करने की ओर है, जिससे वित्त वर्ष 2023-24 में कंपनी की एकीकृत परिचालन आय में वृद्धि होगी। वित्त वर्ष में 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की उम्मीद है। कंपनी ने अपने हीरो 2.0 मिशन के तहत अपने बिक्री शोरूमों का अद्यतन किया है और प्रीमियम शोरूम की स्थापना भी की है। इसके साथ ही कंपनी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मांग में वृद्धि के साथ नए उत्पादों की पेशकश और पावर ब्रांड में निवेश के लिए प्रतिबद्ध है। वित्त वर्ष 2023-24 में कंपनी की वृद्धि के लिए उम्मीदें हैं, जो उद्योग में और अधिक विकास के संकेत हो सकते हैं।

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी), निवेश का सही रास्ता

नई दिल्ली । सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) एक ऐसा निवेश माध्यम है जो नियमित रूप से निवेश करने के माध्यम से रिटेल इन्वेस्टर्स को आवश्यक धन वृद्धि का अवसर प्रदान करता है। यह निवेश प्रक्रिया एक डिसिप्लिन तथा विश्वसनीय उपाय है जिसमें साप्ताहिक, मासिक या तिमाही आधारित निवेश करने की स्वतन्त्रता होती है। एक रिपोर्ट दर्शाती है कि 7 साल की एसआईपी एक अधिक रियलिस्टिक और व्यापक रूप से उपयुक्त समय-सीमा है। इस अवधि के दौरान, बाजार के उतार-चढ़ाव के बावजूद निवेशक को ज्यादा रिटर्न की संभावना होती है एवं उनका निवेश भी कम जोखिमपूर्ण होता है। एक और अध्ययन में 2005 से 2025 तक के दौरान निफ्टी स्मॉलकैप 250 का मिनिमम रिटर्न -7.3 फीसदी रहा जबकि निफ्टी मिडकैप 150 ने 27.3 फीसदी रिटर्न प्रदान किया। यह दिखाता है कि स्मॉलकैप में निवेश करने वाले निवेशकों को थोड़ा जोखिम झेलना पड़ता है, जबकि मिडकैप में निवेश करने वालों को ऐसा अनुभव नहीं होता। यानी कि एसआईपी एक बेहतरीन निवेश विकल्प है जो निवेशकों के लिए धन का उत्थान करने में मदद कर सकता है, परंतु उन्हें इसे दीर्घकालिक एवं नियमित रूप से अपनाना होगा। इस प्रकार सही समय अवधि चुनने में और उसे नियमितता से अपनाने में ही एसआईपी की सफलता छिपी है।

वित्तीय अधिकारियों का मुआवजा बढ़ने की योजना

नई दिल्ली । वैश्विक स्तर पर अच्छी खबर आई है कि वर्ष 2024 और 2025 में सीएफओ ने कर्मचारियों का मुआवजा औसत से बढ़ाने की योजना बनाई है। एक रिपोर्ट के अनुसार, टेक्नोलॉजी इन्वेस्टमेंट और डिजिटल विकास को महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिससे उद्योगों में विकास और दक्षता में सुधार आ सकता है। यह सीएफओ का दृष्टिकोण है कि टेक्नोलॉजी बजट में वृद्धि करने से कंपनियों को विविधता और प्रतिस्पर्धा के माध्यम से बेहतर परिणाम मिल सकते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, सेक्टर-अनुसार टेक्नोलॉजी खर्च में वृद्धि देखने के साथ, बैंकिंग और रिटेल सेक्टर में भी मुआवजे और बाहरी सेवाओं पर ध्यान दिया जा रहा है। एक अच्छी खबर यह है कि इस दिशा में अग्रणी कंपनीयां भी सक्रिय हैं। अब दिख रहा है कि टेक्नोलॉजी के माध्यम से डिजिटल परिवर्तन की ओर गतिशील कदम बढ़ रहे हैं, जो कंपनियों को प्रतिस्पर्धात्मक बनाए रखने में मदद करेगा। रिपोर्ट के अनुसार, हालांकि कूलिंग लेबर मार्केट संगठनों को मुआवजे पर अधिक बातचीत करने की शक्ति देता है, सीएफओ को संभावित जोखिमों के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए क्योंकि घरेलू आवश्यकताओं की कीमतें लगातार ऊंची बनी हुई हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि अधिकांश क्षेत्र 2025 में टेक्नोलॉजी खर्च को प्राथमिकता दे रहे हैं। रिटेल सेक्टर में बेची गई वस्तुओं की लागत (सीओजीएस) और मुआवजे में वृद्धि देखने को मिल सकती है क्योंकि संगठन उत्पाद की गुणवत्ता और ग्राहक संपर्क को बढ़ाने का लक्ष्य रखते हैं. इस बीच, बैंकिंग क्षेत्र में, टेक्निकल टैलेंट को आकर्षित करने और गैर-रणनीतिक कार्यों को आउटसोर्स करने के लिए मुआवजे और बाहरी सेवाओं को भी प्राथमिकता दी जाती है।

लालू बोले- कुंभ फालतू है इसका कोई मतलब नहीं:भगदड़ के लिए रेलवे को ठहराया जिम्मेवार

पटना। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रात भगदड़ से 18 लोगों की मौत हो गई। मरने वालों में 14 महिलाएं और 3 बच्चे हैं। इनमें बिहार के 9 लोग हैं। वहीं 25 से ज्यादा लोग घायल हैं। घायलों को लोकनायक जय प्रकाश अस्पताल (LNJP) में भर्ती कराया गया है। हादसे पर आरजेडी सुप्रीमो ने कहा, 'बहुत दुखद घटना घटी है। मैं सभी लोगों को श्रद्धांजलि देता हूं। रेलवे की गलती है। कुप्रबंध, लापरवाही के कारण ये घटना घटी है। इतने लोगों की मृत्यु हुई है। मुझे काफी अफसोस है। रेल मंत्री को इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। वही मीडिया ने जब सवाल किया कि कुंभ में भीड़ है, इसी को लेकर ये घटना घटी है। इसके जवाब में लालू यादव ने कुंभ को फालतू बताया। इधर लालू यादव के बयान पर जदयू ने नसीहत दी है। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि 'भगदड़ पर सियासत की बजाए कैसे घायलों को और मृतकों के परिवार की मदद कर सकते हैं, इस पर बात करनी चाहिए न कि सियासत करनी चाहिए। 'JDU प्रवक्ता अरविंद निषाद ने कहा कि 'लालू यादव भारतीय सभ्यता और संस्कृति को नकार रहे हैं। कुंभ को फालतू बता रहे हैं, ये बहुत की दुर्भाग्यपूर्ण है। दुर्घटना दुर्भाग्य से होती है। हिंदू सभ्यता, संस्कृति और

रेलवे पर सवाल उठाने की जरूरत नहीं है। सहयोग करने की जरूरत है।' 'आरजेडी सुप्रीमो रेलवे को भी सुझाव दे रहे हैं। 2004 से 2009 के बीच खुद रेल मंत्री थे। उस समय 51 दुर्घटनाएं हुई। 370 रेलवे क्रॉसिंग की घटना हुई है। उस 5 साल के दौरान कुल 1034 लोगों की मौत हुई थी। क्या आपने अपने कार्यकाल में रेलवे में जो सुधार किया जाना था, वो नहीं किया। जिसके कारण 1 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई।' सनातन विरोधी हैं लालू यादव- बीजेपी बीजेपी प्रवक्ता अरविंद सिंह ने कहा कि 'उनके दिमाग में बस एक ही चीज है कि अपने पुत्र तेजस्वी यादव को बिहार का मुख्यमंत्री कैसे बनाएं। चाहे उसके लिए कोई भी घोटाला करना पड़े तो करेंगे।' 'सावन के महीने में मुर्गा-भात खाना पड़े, चाहे मुर्गा बनाना सीखना पड़े। नमाज पढ़ना पड़े, चर्च में जाकर रामायण पाठ करना पड़े तो वो भी वो करेंगे। सिर्फ वह अपने पुत्र के लिए धृतराष्ट्र बने हुए हैं। इस तरीके का सनातन विरोधी बयान दे रहे हैं।' वहीं लालू यादव द्वारा रेल मंत्री का इस्तीफा मांगे जाने पर पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय जायसवाल ने कहा कि, 'लालू जी ने 15 साल बिहार को लूटा है। उनके साले बोले रहे हैं कि वो सीएम हाउस से पैसे वसूलते थे। इस पर भी उन्हें टिप्पणी करनी चाहिए।' कहा है कि, 'नई दिल्ली में जो घटना हुई है उसमें जिम्मेदारी से होगी जो लोग दोषी हैं उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई होगी। पूरे मामले की रेलवे जांच कर रहा है।' हादसा नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 13, 14 और 15 के बीच हुआ। महाकुंभ जाने के लिए स्टेशन पर शाम 4 बजे से भीड़ जुटने लगी थी। रात को करीब 8:30 बजे प्रयागराज जाने वाली 3 ट्रेनें लेट हो गईं, जिससे भीड़ बढ़ी और भगदड़ मच गई। शुरूआत में नॉर्दर्न रेलवे के CPRO (चीफ पब्लिक रिलेशन ऑफिसर) ने भगदड़ की बात से इनकार किया। उन्होंने कहा कि कोई यह सिर्फ अफवाह है।

संक्षिप्त डायरी

दनियावां में सीएम के पहुंचने से पहले डीएम का निरीक्षण

पटना। DM डॉ. चंद्रशेखर सिंह ने दनियावां प्रखंड में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की आगामी प्रगति यात्रा की तैयारियों का जायजा लिया। फरवरी के अंतिम सप्ताह में होने वाली इस यात्रा के लिए विभिन्न विकास परियोजनाओं का निरीक्षण किया गया। हाई स्कूल में बन रहे खेल सुविधाओं का भी निरीक्षण डीडीसी सौरव सुमन, एडीएम मनोरंजन कुमार और पटना सिटी एसडीओ सत्यम सहाय के साथ डीएम ने खारभैया पंचायत के तोप गांव का दौरा किया। उन्होंने करोड़ों की लागत से निमार्णाधीन दनियावां सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और पंचायत सरकार भवन का निरीक्षण किया। तोप हाई स्कूल में बन रहे खेल सुविधाओं, जिसमें बास्केटबॉल, वॉलीबॉल कोर्ट, लॉन्ग जंप, हाई जंप और एथलेटिक्स ट्रैक शामिल हैं, का भी जायजा लिया। जलजीवन हरियाली योजना के तहत निमार्णाधीन तालाब का निरीक्षण भी किया गया। साथ ही एसएच-78 एमन बिगहा से तोप गांव अस्पताल तक और तोप गांव से जीवनचक होते हुए एसएच-78 तक जाने वाली सड़कों की मरम्मत कार्यों की प्रगति देखी गई। स्थानीय ग्रामीणों ने तोप शिव स्थान से दुर्गा स्थान तक के मार्ग से अतिक्रमण हटाने की मांग रखी। मुख्यमंत्री के हेलीकॉप्टर से आगमन को देखते हुए सरथुआ गांव के रेलवे स्टेशन के पास हेलीपैड का निर्माण कार्य चल रहा है। डीएम ने सभी विकास कार्यों में तेजी लाने का निर्देश दिया। इस दौरान पटना सिविल सर्जन, जिला शिक्षा पदाधिकारी, डीसीएलआर अभिलाषा सिंहा, बीडीओ प्रकृति नयनम, सीओ गीता देवी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। डीएम डॉ चंद्रशेखर सिंह ने बताया कि दनियावां प्रखंड के तोप गांव में खरभैइया पंचायत में आए हुए हैं। यह सरथुआ बॉर्डर भी है, इसलिए तोप सरथुआ रेलवे स्टेशन का भी निरीक्षण कर रहे हैं। नेवरा-दनियावां नई रेलवे लाइन का भी निरीक्षण कर रहे हैं। अभी मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा चल रही है। इसको लेकर इस पंचायत में सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का भी निरीक्षण किया जा रहा है।

प्राइवेट अस्पताल में तोड़फोड़ मरीज की मौत के बाद परिजनों ने काटा बवाल

डॉक्टर पर यूट्यूब से वीडियो देखकर इलाज करने का आरोप

पटना। के कदमकुंआ थाना क्षेत्र में इलाज के दौरान प्राइवेट ट्रामा सेंटर में एक युवक की मौत हो गई। जिसके बाद गुस्साए परिजनों ने जमकर बवाल काटा। अस्पताल में तोड़फोड़ कर हंगामा करना शुरू कर दिया। डॉक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाया है। घटना रोड नंबर-3 की है। महिला सफाईकर्मी ने भाई को लगाया इंजेक्शन परिजनों का आरोप है कि ट्रामा सेंटर में स्वास्थ्य कर्मी यूट्यूब से वीडियो देखकर इलाज कर रहे थे। जिसके चलते दीपक पासवान(24) की मौत हो गई। मृतक के बड़े भाई नंदू पासवान ने बताया कि शनिवार देर शाम तबियत बिगड़ी थी। उल्टी होने के बाद अस्पताल में एडमिट कराया था। उस समय स्थिति ठीक थी। अच्छे से बात कर रहा था। टाउन DSP दीक्षा ने बताया कि भोजपुर जिला के बिहियां निवासी दीपक पासवान की मौत हुई है। सुबह 4 बजे अस्पताल में तोड़फोड़ की सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची थी। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए PMCH भेजा गया है। वहीं, कदमकुआं थानेदार राजीव कुमार ने बताया कि मृतक के परिजनों ने आवेदन दिया है। अस्पताल प्रशासन की ओर से अभी तक कोई आवेदन नहीं दिया गया है।

मोबाइल दुकान में 2 लाख की चोरी

पटना। सिटी के खाजेकला थाना क्षेत्र में मोबाइल दुकान से 2 लाख की चोरी हुई है। शनिवार देर रात चोर शटर काटकर अंदर घुसे थे। चोरों ने दुकान से 2 लाख के मोबाइल पर हाथ साफ किया है। रविवार सुबह दुकानदार दिलावर हुसैन जब अपनी दुकान पर पहुंचे तो चोरी का पता चला। पीड़ित ने बताया कि शटर टूटा हुआ था। अंदर जाकर देखा तो पूरा सामान बिखरा हुआ था। काउंटर से महंगे फोन गायब थे। जिसके बाद घटना की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई। जानकारी मिलते ही सब इंस्पेक्टर भारती कुमारी के नेतृत्व में पुलिस टीम डॉग स्क्वायड के साथ मौके पर पहुंची। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों को खंगाला जा रहा है। पुलिस का मानना है कि वह किसी संगठित गिरोह का काम हो सकता है। अंधेरे का फायदा उठाकर रात में इस वारदात को अंजाम दिया गया है।

निर्मली प्रखंड कार्यालय परिसर की होगी चहारदीवारी

सुपौल। के निर्मली प्रखंड कार्यालय परिसर की चारदीवारी बनाई जाएगी और सड़क किनारे दुकानें स्थापित की जाएंगी, जिससे युवाओं को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे। फिलहाल, सरकारी जमीन पर कुछ ही दुकानें संचालित हैं, लेकिन बार-बार अतिक्रमण हटाने का डर बना रहता है। प्रखंड प्रमुख रामप्रवेश कुमार यादव ने इस समस्या का स्थायी समाधान निकालने की पहल की है। निर्मली थाना चौक के पास प्रखंड कार्यालय परिसर की खाली पड़ी जमीन को अधिग्रहित कर चारदीवारी बनाने की योजना है। सड़क से लगभग 12 फीट की जगह पार्किंग के लिए छोड़ी जाएगी, जिससे यातायात भी सुगम रहेगा। जल्द ही खोली जाएंगी दुकानें प्रखंड प्रमुख रामप्रवेश यादव ने बताया कि सरकार युवाओं को रोजगार देने के लिए प्रतिबद्ध है और इसी के तहत निर्मली में भी रोजगार सृजन की दिशा में काम किया जा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि निर्मली शहर के पब्लिक गेस्ट हाउस के पास जिला परिषद की जमीन पर भी जल्द ही दुकानें खोली जाएंगी। इस पहल से थाना चौक पर अस्थायी दुकानदारों में खुशी की लहर है। अब तक ये दुकानदार अतिक्रमण हटाने की आशंका से परेशान रहते थे, लेकिन सरकारी जमीन पर व्यवस्थित दुकानों के निर्माण से उन्हें स्थायी व्यवसाय करने का मौका मिलेगा। मिट्टी भराई का चलेगा काम इसके अतिरिक्त प्रखंड कार्यलय परिसर स्थित जर्जर भवनों को दुरुस्त करवाया जा रहा है, अति जीर्ण-शीर्ण भवनों को ध्वस्त करने का भी प्रस्ताव लिया गया है, ताकि किसी प्रकार की कोई अनहोनी से लोगों को बचाया जा सके। उन्होंने बताया कि प्रखंड कार्यालय परिसर की जमीन में जलभराव वाली जगहों पर नगर पंचायत निर्मली से सहयोग लेकर जल्द ही नाली निर्माण और मिट्टी भराई का काम करवाया जाएगा। इस योजना से न केवल जलभराव से मुक्ति और स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलेगा, बल्कि शहर में व्यापारिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

तेज रफ्तार ट्रक ने ट्रैक्टर-ट्राली में मारी टक्कर, 8 घायल

बक्सर। जिले में देर रात नया बस स्टैंड के पास एक तेज रफ्तार ट्रक ने ट्रैक्टर-ट्राली में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। इस हादसे में ट्राली में सवार मंगला भवानी मंदिर से लौट रहे 8 श्रद्धालु घायल हो गए। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ट्राली में बैठे लोग उछलकर सड़क पर गिर पड़े। घायल सभी लोग इटाढ़ी प्रखंड के कुकुढा गांव के रहने वाले हैं। हादसे में एक व्यक्ति का पैर टूट गया, जबकि अन्य लोगों को भी गंभीर चोटें आईं। स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को तत्काल सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि हादसे के बाद ट्रक चालक वाहन को भगाने की कोशिश में था, लेकिन संतुलन बिगड़ने से ट्रक सड़क किनारे लुढ़क गया। नगर थाना प्रभारी मनोज कुमार ने बताया कि ट्रक चालक और खलासी वाहन छोड़कर फरार हो गए हैं। पुलिस ने ट्रक को अपने कब्जे में ले लिया है और फरार आरोपियों की तलाश जारी है। स्थानीय लोगों में इस घटना को लेकर आक्रोश है। उनका कहना है कि आबादी वाले इलाके में भारी वाहन अक्सर तेज गति से चलते हैं, जिससे हादसों का खतरा बना रहता है। पुलिस ने बताया कि ट्रक को सुरक्षित निकालने की कार्रवाई की जा रही है, क्योंकि मिट्टी धंसने से उसके पलटने का खतरा है। मामले में आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

शॉर्टसर्किट से लगी आग 5 लाख की संपत्ति जलकर खाकट्यूशन सेंटर, बाइक और टेंट का सामान जला

फायर ब्रिगेड की टीम ने पाया काबू

सुपौल। शहर के वार्ड 13 स्थित ब्रह्मस्थान के पास बीती रात शॉर्टसर्किट से भीषण आग लग गई, जिसमें एक ट्यूशन सेंटर सहित लाखों की संपत्ति जलकर राख हो गई। करीब एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद स्थानीय लोगों ने आग पर काबू पाया, लेकिन दमकल की लापरवाही ने लोगों का गुस्सा भड़का दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार आग लगते ही इलाके में अफरा-तफरी मच गई। ट्यूशन सेंटर के अलावा पास के अन्य सामान भी आग की चपेट में आ गए। स्थानीय लोगों ने पानी डालकर आग बुझाने का प्रयास किया और काफी मशक्कत के बाद लपटों को काबू में किया। घटना की सूचना मिलते ही सदर थाने की पुलिस और डायल 112 की पुलिस टीम भी वहां पहुंच गई। लेकिन एक घंटे बाद अग्निशमन विभाग की गाड़ी मौके पर पहुंची, लेकिन उसमें पानी नहीं था। जब दमकल कर्मियों ने पानी न होने की बात कही, तो गुस्साए लोगों ने हंगामा शुरू कर दिया। आक्रोशित भीड़ ने दमकल विभाग की लापरवाही पर नाराजगी जताई, जिससे माहौल तनावपूर्ण हो गया। स्थिति बिगड़ती देख दमकल टीम बिना कोई कार्रवाई किए लौट गई। पीड़ित अरविंद कुमार साह ने बताया कि ट्यूशन सेंटर में रखी एक नई अपाचे बाइक, टेंट के लिए रखे एल्युमिनियम के बर्तन पूरी तरह जल गए। उन्होंने बताया कि 21 जनवरी को नई बाइक खरीदी ही थी। लेकिन शॉर्टसर्किट के कारण वह भी बरबाद हो गई। प्राथमिक आकलन के अनुसार इस आगजनी में लगभग 5 लाख रुपए की संपत्ति का नुकसान हुआ है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि अग्निशमन विभाग की इस लापरवाही की जांच की जाए और भविष्य में ऐसी घटनाओं से निपटने के लिए दमकल सेवा को अधिक मुस्तैद किया जाए।

पूर्णिया में अनियंत्रित कार थाने के बाउंड्री से टकराई महिला और बच्चा घायल, भागकर पुलिस वालों ने बचाई जान

-----कुंभ से लौट रहे थे सभी-----

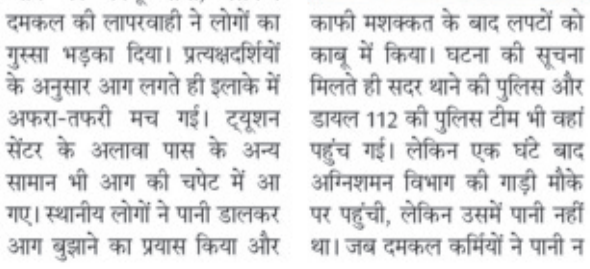

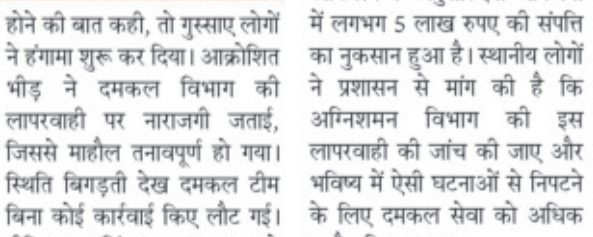

पूर्णिया। में तेज रफ्तार कार अचानक अनियंत्रित होकर यातायात थाने के बाउंड्री वॉल से जा टकराई। इसमें कार और थाने की दीवार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए, जबकि बाउंड्री वॉल के पास खड़े यातायात पुलिस के जवानों ने दौड़कर अपनी जान बचाई, जिससे बड़ा हादसा टल गया। हादसे की वजह से कार ड्राइव कर रहे युवक की अचानक आंख लग गई। हादसे के वक्त कार में 4 लोग सवार थे, इसमें 2 लोग घायल हो गए। घायलों में महिला और एक बच्चा शामिल हैं। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि घटना सुबह करीब 9 बजे की है। कार की रफ्तार 70 के आसपास थी। कार में 4 लोग सवार थे इनमें दो महिला, एक पुरुष और एक बच्चा शामिल है। सभी प्रयागराज में कुंभ से स्नान कर अपने घर के.नगर लौट रहे थे, तभी अचानक यातायात थाने के पास ड्राइवर की आंख लग गई। इसके बाद कार अनियंत्रित होकर यातायात थाने के बाउंड्री वॉल से जा टकराई। हादसे के वक्त वहां खड़े पुलिसकर्मियों ने किसी तरह भागकर अपनी जान बचाई। वहीं हादसे के वक्त कार में 4 लोग सवार थे, जिसमें महिला समेत एक बच्चा गंभीर रूप से घायल हो गया।

टक्कर के फौरन बाद पुलिस और स्थानीय मौके पर जुटे, जिसके बाद घायलों को आनन-फानन में GMCH पूर्णिया में एडमिट कराया गया। वहीं कार को पुलिस ने कब्जे में ले लिया है और आगे की कार्रवाई में जुट गई है।

मनीष हत्याकांड, परिजनों को पुलिस जांच पर भरोसा नहीं

पटना। पुलिस हलवाई मनीष हत्याकांड में 6 दिन बाद भी हत्यारों को गिरफ्तार नहीं कर सकी है। परिजनों को पुलिस जांच पर भरोसा नहीं है। घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। जिसमें वारदात के बाद कुछ लोग भागते हुए दिखाई दे रहे हैं। पीड़ित परिवार का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज में गोली चलाकर भागते हुए अपराधियों की तस्वीर साफ दिख रही है। इसके बाद भी जांच के नाम पर पुलिस सिर्फ खानापूर्ति कर रही है। एक सप्ताह में अपराधियों की गिरफ्तारी का आश्वासन दिया था। इसके बाद भी अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। अज्ञात अपराधियों के खिलाफ केस दर्ज मेहंदीगंज थाना प्रभारी के मुताबिक घटनास्थल से सिर्फ एक खोखा बरामद हुआ है। अज्ञात अपराधियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है। जांच के लिए FSL टीम को भी बुलाया गया था। मेहंदीगंज थाना क्षेत्र के पश्चिमी कस्बा में 10 फरवरी को श्राद्ध भोज के दौरान जमीन विवाद में दो गुटों के बीच गोलीबारी हुई थी। गोली लगने से हलवाई मनीष कुमार(28) की मौत हो गई थी। मृतक हकीमगंज कुम्हार टोली का रहने वाला था। घटना के बाद गुस्साए परिजनों ने रेलवे क्रॉसिंग के पास सड़क जाम कर दिया था। बीच रोड पर आगजनी कर जमकर विरोध-प्रदर्शन किया था।

महिला के प्रेमी ने शराब पिलाकर की पति की हत्या

रोहतास। के दिनारा थाना में दर्ज अपहरण कांड का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। रविवार को आयोजित प्रेसवार्ता में एसडीपीओ कुमार संजय ने मामले का खुलासा करते हुए कहा कि अवैध संबंध के कारण हत्या की गई। मामले में पत्नी और उसके प्रेमी को गिरफ्तार कर लिया गया है। एसडीपीओं ने बताया कि 11 फरवरी की रात दिनारा थाना में अभिषेक उर्फ नन्हक राय के अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। इसमें 9 फरवरी से लापता होने की बात कही गई थी। प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए अभिषेक का भाई, उसकी पत्नी और संजय गुप्ता नामक व्यक्ति पहुंचे थे और सभी का आवेदन पर हस्ताक्षर था। कहा गया था कि संजय गुप्ता के साथ अभिषेक 9 फरवरी को गया फिर नहीं लौटा। संजय ने प्रारंभिक पूछताछ में कहा कि अभिषेक उसके साथ था, फिर कहीं चला गया था। पूछताछ करने पर खुला राज दो दिन तक पता नहीं चलने पर फिर से संजय गुप्ता को बुलाकर कड़ाई से पूछताछ की गइ तो उसने अपराध स्वीकार कर लिया। संजय गुप्ता ने बताया कि वो और अभिषेक एक ही मकान में अगल-बगल दिनारा में रहते थे। उसका अभिषेक की पत्नी सीमा से अवैध संबंध हो गया। पहले दोनों ने भागकर शादी करने का फैसला किया। लेकिन फिर संपत्ति से वंचित होने के डर से पत्नी ने फैसला बदला। इसके बाद अभिषेक को रास्ते से हटाने का प्लान बनाया। इसके बाद अभिषेक को 9 फरवरी को वह अपने साथ लेकर गया। एक सुनसान स्थान पर उसके साथ शराब पी, जब अभिषेक को पूरा नशा हो गया।

आपकी किचन में ही छुपे हैं सफलता और असफलता के राज

वास्तु के अनुसार चीजों व्यवस्थित न हो तो यह अपशगुन का कारण बनती हैं। ऐसे में घर की रसोई का विशेष ख्याल रखना चाहिए। किचन की दिशा के साथ ही साथ रसोई घर में काम आने वाले तमाम बर्तन भी शुभता और अशुभता का कारण हो सकते हैं। यदि उनका ठीक प्रकार से प्रयोग न किया जाए या फिर उसे उचित स्थान पर सही तरीके से न रखा जाए तो उसके परिणाम नुकसानदायक साबित हो सकते हैं। किचन के बर्तनों का सही तरह से प्रयोग न करने पर वे दरिद्रता का भी कारण बन सकती हैं।

वास्तु के अनुसार किचन में सबसे अधिक प्रयोग आने वाले बर्तनों में तवे का बहुत ज्यादा महत्व होता है। वास्तु के अनुसार तवा और कढ़ाई राहु का प्रतिनिधित्व करने वाले होते हैं। ऐसे में इनका प्रयोग करते समय विशेष ख्याल रखे जाने की जरूरत होती है। मसलन, तवे या कढ़ाई को कभी भी जूठा न करें ना ही उस पर जूठी सामग्री रखें। हालांकि किचन में जूठे हाथ से किसी भी बर्तन को नहीं छूना चाहिए और न ही वहां पर जूठीं सामग्री रखना चाहिए। किचन में पवित्रता का पूरा ख्याल रखना बहुत जरूरी होता है। घर के इस कोने में स्वच्छता का जितना ख्याल रखा जाएगा धन आगमन के रास्ते उतने ही आसान होंगे।

किचन में वास्तु से जुड़े नियम

रात को खाना बनाने के बाद तवे को हमेशा धो कर रखें। जब तवे का उपयोग न करना हो तो उसे ऐसी जगह पर रखें जहां से वह आम नजरों में न आ पाए। कहने का तात्पर्य उसे खुले में रखने की बजाए किसी आलमारी या दराज में रखें।

तवे या कढ़ाई को कभी भी उल्टा नहीं रखना चाहिए क्योंकि तवा को उल्टा रखने से घर में राहु की नकारत्मक उर्जा का संचार होता है।

तवा और कढ़ाई को जहां पर खाना बनाते हों, उसकी दाईं ओर रखें क्योंकि किचन के दाई ओर मां अन्नपूर्णा का स्थान होता है।

कभी भी भूलकर गर्म तवे पर पानी न डालें। वास्तु के अनुसार ऐसा करने पर घर में मुसीबतें आती हैं।

हत्याहरण तीर्थ सरोवर
यहां राम ने ब्रह्महत्या का पाप धोया था

हम आपको एक ऐसे सरोवर के बारे में बताने जा रहे हैं जिसमें स्नान करने के बाद आपके सारे पाप समाप्त हो जाते हैं और पुनः साफ-सुथरे मन से आप आगे का जीवन जीने के लिए अग्रसर हो सकते हैं। ऐसा हम नहीं कह रहे हैं, इस सरोवर से जुड़ी कथाएं व यहां के लोगों की आस्था इस बात का प्रतीक है कि इस सरोवर में नहाने से लोगों के पाप नष्ट हो जाते हैं। इस सरोवर से जुड़ी कथाओं की पुष्टि करने के लिए जब हम उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ से लगभग 150 किलोमीटर की दूरी पर बने ष पहुंचे, जो हरदोई जनपद की संडीला तहसील में पवित्र नैमिषारण्य परिक्रमा क्षेत्र में स्थित है। जब हम इस सरोवर के साक्षात दर्शन करने पहुंचे तो इस सरोवर से जुड़ी लोगों की आस्थाओं को देखकर एक बार विश्वास हो चला कि हो ना हो इस सरोवर में स्नान करने के बाद कहीं न कहीं पापों से मुक्ति मिल जाती है क्योंकि सरोवर में स्नान करने वालों की अपार भीड़ थी। इस सरोवर से जुड़ी कथाओं को जानने का प्रयास किया तो कई बातें सामने निकलकर आईं। सरोवर के पास पीढ़ियों से फूलमालाओं का काम करने वाले 80 साल के जगन्नाथ से इस सरोवर से जुड़ी बातों को जानना चाहा तो जगन्नाथ ने बताया की पौराणिक बातों में कितनी सत्यता है, इसकी पुष्टि तो वे नहीं करते लेकिन जो वह बताने जा रहे हैं, इसके बारे में उन्होंने अपने पिताजी से सुना था। उन्होंने कि कहा जब मैं अपने पिताजी के साथ इस सरोवर पर फूल बेचने के लिए आता था तो मैंने एक दिन अपने पिता से पूछा कि यहां पर इतने सारे लोग क्या करने आते हैं तो उन्होंने मुझे बताया कि हजारों वर्ष पूर्व जब भगवान राम ने रावण का वध कर दिया था तो उन्हें ब्रह्महत्या का दोष लग गया था। उस पाप को मिटाने के लिए भगवान राम भी इस सरोवर में स्नान करने आए थे। इस सरोवर के निर्माण के बारे में शिव पुराण में वर्णन है कि माता पार्वती के साथ भगवान भोलेनाथ एकांत की खोज में निकले और नैमिषारण्य क्षेत्र में विहार करते हुए एक जंगल में जा पहुंचे। वहां पर सुरम्य जंगल मिलने पर तपस्या करने लगे। तपस्या करते हुए माता पार्वती को प्यास लगी। जंगल में कहीं जल न मिलने पर उन्होंने देवताओं से पानी के लिए कहा तब सूर्य देवता ने एक कमंडल जल दिया। देवी पार्वती ने जलपान करने के बाद शेष बचे जल को जमीन पर गिरा दिया। तेजस्वी पवित्र जल से वहां पर एक कुंड का निर्माण हुआ और जाते वक्त भगवान शंकर ने इस स्थान का नाम प्रभास्कर क्षेत्र रखा।

यह कहानी सतयुग की है। काल बीतते रहे द्वापर में ब्रम्हा द्वारा अपनी पुत्री पर कुदृष्टि डालने पर पाप लगा। उन्होंने इस तीर्थ में आकर स्नान किया तब वे पाप मुक्त हुए। जगन्नाथ ने बताया कि तब से यहां पर मान्यता चली आ रही है की जो इस स्थान पर आकर स्नान करेगा वह पाप मुक्त हो जाएगा। हत्या मुक्त हो जाएगा। यहां पर राम का एक बार नाम लेने से हजार नामों का लाभ मिलेगा। तब से आज तक लोग यहां इस पावन तीर्थ पर आकर हत्या, गोहत्या एवं अन्य पापों से मुक्ति पा रहे हैं।

मंत्र जपने के चमत्कारिक फायदे

मंत्रयोग या जपयोग के चमत्कार के संबंध में शास्त्रों में ढेर सारे उल्लेख मिलते हैं। वेदों में उल्लेख है कि विशेष प्रकार के मंत्रों से विशेष तरह की शक्ति उत्पन्न होती है। अनेक परिक्षणों से यह सिद्ध हो गया है कि मंत्रों में प्रयोग होने वाले शब्दों में भी शक्ति होती है। मंत्रों में प्रयोग होने वाले कुछ ऐसे शब्द हैं, जिन्हे 'अल्फा वेव्स' कहते हैं। मंत्र का यह शब्द 8 से 13 साइकल प्रति सैकेंड में होता है और यह ध्वनि तरंग व्यक्ति की एकाग्रता में भी उत्पन्न होती है। इन शब्दों से जो बनता है, उसे मंत्र कहते हें। मंत्रों के जप करने से व्यक्ति के भीतर जो ध्वनि तरंग वाली शक्ति उत्पन्न होती है, उसे ही जपयोग या मंत्र योग कहते हैं। शास्त्र अनुसार 'ज' का अर्थ जन्म का रुक जाना और 'प' का अर्थ पाप का नष्ट हो जाना। किसी भी मंत्र को बार बार जपने से कई तरह के चमत्कारि घटित होते हैं। आओ जानते हैं 5 चमत्कारिक फायदे।

बढ़ती एकाग्रता मानसिक - शक्ति : मंत्र का अर्थ होता है मन

को एक तंत्र में बांधना। जब मन एक तंत्र में बंध जाता है तो व्यक्ति मानसिक रूप से शक्तिशाली बन जाता है और इससे एकाग्रता भी बढ़ जाती है। अच्छे विचार, मंत्र और भगवान का बार-बार जप करने या ध्यान करते रहने से व्यक्ति की मानसिक शक्ति बढ़ती जाती है। मानसिक शक्ति के बल पर ही व्यक्ति सफल, स्वस्थ और शक्तिशाली महसूस कर सकता है। मंत्र के द्वारा हम खुद के मन या मस्तिष्क को बुरे विचारों से दूर रखकर उसे नए और अच्छे विचारों में बदल सकते हैं। लगातार अच्छी भावना और विचारों में रत रहने से जीवन में हो रही बुरी घटनाएं रुक जाती है और अच्छी घटनाएं होने लगती है।

देवताओं से जुड़ता संबंध - अपने ईष्ट या किसी शक्तिशाली मंत्र का निरंतर जप करने से व्यक्ति ईधर माध्यम की सकारात्मक ऊर्जा और शक्तियों से जुड़ जाता है। मंत्र से किसी देवी या देवता को साधा जाता है, मंत्र से किसी भूत या पिशाच को भी साधा जाता है और मंत्र से किसी यक्षिणी और यक्ष को भी साधा जाता है। 'मंत्र साधना' भौतिक बाधाओं का आध्यात्मिक उपचार है। यदि आपके जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या या बाधा है तो उस समस्या को मंत्र जप के माध्यम से हल कर सकते हैं।

प्राप्त होती सिद्धि -किसी भी मंत्र को प्रातिदिन निरंतर जपते रहने से सिद्धियों का द्वार खुल जाता है। जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों ही अवस्था में व्यक्ति जागा हुआ हो जाता है। जपयोग व्यक्ति के अवचेतन को जाग्रत कर उसे दिव्य दृष्टि प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं को किसी भी रूप में स्थापित करने में सक्षम हो जाता है। इससे व्यक्ति टेलीपैथिक और परा मनोविज्ञान में पारंगत हो सकता है।

सूक्ष्म शरीर को सक्रिय करते हैं मंत्र -निरंतर मंत्र जप करने से ध्वनि तरंग उत्पन्न होती है, उससे शरीर के स्थूल व सूक्ष्म अंग तक कंपित होते हैं। इसके कारण व्यक्ति का सूक्ष्म शरीर सक्रिय होकर शक्तिशाली परिणाम देना प्रारंभ कर देता है।

मिटते हैं शोक- जब व्यक्ति बहुत व्यग्र या चिंतित रहता है तो तरह-तरह के नकारात्मक विचारों से घिर जाता है और पहले की अपेक्षा परिस्थितियों को और संकटपूर्ण बना लेता है। ढेर सारे विचारों से बचने के लिए किसी भी मंत्र का जप करते रहने से मन में विश्वास और सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है। इससे शोक और संताप मिट जाता है। यह व्यक्ति को मानसिक रूप से शांत कर देता है। यदि आप सात्विक रूप से निश्चित समय और निश्चित स्थान पर बैठक मंत्र प्रतिदिन मंत्र का जप करते हैं तो आपके मन में आत्मविश्वास बढ़ता है साथ ही आपमें आशावादी दृष्टिकोण भी विकसित होता है जो कि जीवन के लिए जरूरी है।

पाखंड और अंधविश्वास से बचा सकती है ऐसी सोच

आप किसी भी शहर में हों, आपको सुनने को मिलेगा कि कोई अलौकिक बाबा, योगपुरुष या फकीर का आगमन इस शहर में हो रहा है। उनके दर्शन या स्पर्श मात्र से असाध्य से असाध्य बीमारियां पलक झपकते ही गायब हो जाती हैं। इच्छुक व्यक्ति के मिलने के लिए बाबाओं के सारे अते-पते के पैंपलेट शहर की दीवारों पर चिपके मिलते हैं। बाबाओं को मालूम है कि हमारे यहां समस्याग्रस्त लोगों की कमी नहीं है। एक ढूंढो, लाख मिल जाते हैं एक बार मैं भी आजमाने के खयाल से मुंबई में एक बाबा से मिलने चला गया। लेकिन वह मुझसे नाराज इसलिए हो गए क्योंकि मैंने उन्हीं की बात को दोहराते हुए कह दिया कि जब ईश्वरीय इच्छा से सब कुछ होना है तो फिर लोग आपके पास क्यों आएं वे खुद भगवान से अपने अच्छे दिन के लिए प्रार्थना करेंगे। अनेक असाध्य रोगियों से उन्हें कहते हुए सुना कि यह केस वे नहीं ले सकते क्योंकि ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध जाना होगा। इसका सीधा मतलब है कि उनका पाखंड जहां चल जाता है, वे वहां अपना धंधा करने में कामयाब हो जाते हैं। असाध्य रोगियों पर ईश्वर की इच्छा लाद देते हैं। यह सिर्फ एक घटना नहीं, बल्कि हमारे देश में होने वाली घटनाओं की लंबी शृंखला की एक कड़ी है।कहीं भभूति, कहीं स्पर्श मात्र से तो कहीं मंत्र से शुद्ध किया हुआ पानी पिलाने से समस्याओं और रोगों को ठीक करने की गारंटी कब से दी जाती रही है। आजकल योग-ध्यान का विज्ञापन भी इसी सस्ती भूमिका पर उतर आया है। कोई यह सोचने के लिए तैयार नहीं है कि भारत में जब इतने महात्मा, बाबा और योगीजन बीमारियों से मुक्त करने का दावा कर रहे हैं तो बड़े-बड़े अस्पतालों, डॉक्टरों और इन पर होने वाले भारी भरकम खर्च की क्या जरूरत है लेकिन जब हम इनके जीवन के भीतर झांकते हैं तो तस्वीर का एक दूसरा बड़ा ही दयनीय और निराशाजनक पहलू सामने आता है। दूसरों को रोगमुक्त करने वाला खुद डॉक्टरों की शरण में होता है।आज शरीर-शास्त्री तथा चिकित्सा-विज्ञान के पंडित इस तथ्य से सहमत हैं कि अधिकांश रोगों का कारण हमारा मन है। मानसिक आवेग और उद्वेग बहुत प्रकार के रोगों को जन्म देते हैं। कुछ रोग आज के व्यस्तता बहुल वातावरण से उत्पन्न दबावों और तनावों की वजह से होते हैं। ये रोग मनोवैज्ञानिक हैं, इसलिए इनका इलाज भी उसी भूमिका पर होना आवश्यक होता है। इसी का फायदा बाबा उठा लेते हैं। आस्थाशील लोग एक मनो-विभ्रम से निकलकर दूसरे मनो-विभ्रम में पड़ जाते हैं। चूंकि यह सुखद विभ्रम होता है इसलिए साधारण आदमी के लिए यह चमत्कार बन जाता है। एक कथित चमत्कारिक घटना को आधार बनाकर दस नई कथाओं को खड़ा करने में भक्त लोग माहिर होते हैं। इस तरह यह सिलसिला आगे चलता रहता है।सुशिक्षित, बुद्धिमान लोग भी इनकी गिरफ्त में आ जाते हैं। लेकिन आज इस स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण होना आवश्यक है। तभी पाखंडों और अंधविश्वासों को पनपने से रोका जा सकता है। श्रद्धा का शोषण शताब्दियों से किया जाता रहा है और आज भी हो रहा है। इन स्थितियों को समझने के साथ-साथ मनो-विभ्रम से भी निकलना बहुत जरूरी है।

इस मंदिर में मूर्तियों से निकलती हैं आवाजें

कहते हैं कि पत्थर में भी जान होती है। निश्चित ही मूर्ति एक पत्थर की होती है, लेकिन जिस भी देवी या देवता की यह मूर्ति बनाई गई है उन देवी या देवताओं के अस्तित्व और उनकी शक्ति को नहीं नकारा जा सकता। आए दिन देवी या देवता अपने होने का अहसास कराते रहते हैं। इसी अहसास को चमत्कार कहा जाता है। ऐसा ही एक चमत्कार बिहार के बक्सर में स्थित देवी के एक मंदिर में देखने को मिला। यहां आकर आपको दुर्गा शक्ति के होने पर यकीन हो जाएगा क्योंकि यहां की मूर्तियां आपसे बात करती है। जब वैज्ञानिकों ने इसकी खोज की तो उन्होंने भी इस बात से इनकार नहीं किया। यह मंदिर 400 वर्ष पुराना है। प्रसिद्ध तांत्रिक भवानी मिश्र ने करीब 400 वर्ष पहले इस मंदिर की स्थापना की थी। तब से आज तक इस मंदिर में उन्हीं के परिवार के सदस्य पुजारी बनते रहे हैं। तंत्र साधना से ही यहां माता की प्राण प्रतिष्ठा की गई है। दरअसल, तंत्र साधना के लिए प्रसिद्ध बिहार के इस इकलौते राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर में यहां पर किसी के नहीं होने पर आवाजें सुनाई तेती हैं। इस मंदिर में दस महाविद्याओं काली, त्रिपुर भैरवी, धुमावती, तारा, छिन्न मस्ता, षोडसी, मातंगड़ी, कमला, उग्र तारा, भुवनेश्वरी की मूर्तियां स्थापित हैं। इसके अलावा यहां बंगलामुखी माता, दतात्रेय भैरव, बटुक भैरव, अन्नपूर्णा भैरव, काल भैरव व मातंगी भैरव की प्रतिमा स्थापित की गई है। यहां साधना करने वाले हर साधकों की हर तरह की मनोकामना पूर्ण होती है। देर रात तक साधक इस मंदिर में साधना में लीन रहते हैं। मंदिर में प्रधान देवी राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी है।

तांत्रिकों की आस्था इस मंदिर के प्रति अटूट है। कहा जाता है कि यहां किसी के नहीं होने पर भी कई तरह की आवाजें सुनाई देती हैं। राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर की सबसे अनोखी मान्यता यह है कि निस्तब्ध निशा में यहां स्थापित मूर्तियों से बोलने की आवाजें आती हैं। मध्य-रात्रि में जब लोग यहां से गुजरते हैं तो उन्हें आवाजें सुनाई पड़ती हैं। वैज्ञानिकों की मानें, तो यह कोई वहम नहीं है। इस मंदिर के परिसर में कुछ शब्द गूंजते रहते हैं। यहां पर वैज्ञानिकों की एक टीम भी गई थी, जिन्होंने रिसर्च करने के बाद कहा कि यहां पर कोई आदमी नहीं है। इस कारण यहां पर शब्द भ्रमण करते रहते हैं। वैज्ञानिकों ने यह भी मान लिया है कि हां पर कुछ न कुछ अजीब घटित होता है, जिससे कि यहां पर आवाज आती है। मानो या न मानो यह एक चमत्कार ही है कि यहां अजीब तरह के आवाजें आती है जो कि किसी मानव की आवाजों की तरह की है। माना जाता है कि संपूर्ण अखंड भारत में जहां भी माता के शक्तिपीठ हैं वे सभी जागृत और सिद्ध शक्तिपीठ हैं। मुगलों ने देश के कई मंदिरों को ध्वस्त किया लेकिन वे इन शक्तिपीठों को कभी खंडित नहीं कर पाए। ऐसा दुस्साहस करने वाले काल के मुख में समा गए हैं। उदाहणणार्थ माता हिंगलाज और माता ज्वालादेवी का शक्तिपीठ।

विजय अभियान जारी रखने उतरेंगे दिल्ली कैपिटल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु

वडोदरा (एजेंसी)। अपने पहले मैच में विपरीत अंदाज में जीत दर्ज करने वाले रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और दिल्ली कैपिटल्स महिला प्रीमियर लीग में सोमवार को यहां जब आमने-सामने होंगे तो उनका लक्ष्य अपना विजय अभियान जारी रखना होगा। मौजूदा चैंपियन आरसीबी ने टूर्नामेंट के उद्घाटन मैच में गुजरात जायंट्स को छह विकेट से हराया जबकि दिल्ली कैपिटल्स ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ अंतिम गेंद पर जीत दर्ज की।

अच्छी शुरुआत से दोनों टीम का मनोबल बढ़ा होगा लेकिन आरसीबी की टीम विशेषकर बल्लेबाजी और गेंदबाजी में अधिक संतुलित नजर आ रही है और इसलिए वह इस मैच में जीत की प्रबल दावेदार के रूप में शुरुआत करेगी। आरसीबी की बल्लेबाजी इकाई की मजबूती का पता इससे चलता है कि उसने 200 से अधिक रन के लक्ष्य को बड़ी आसानी से हासिल किया।

स्मृति मंधाना की अगुवाई वाली टीम अपना यह प्रदर्शन जारी रखने की कोशिश करेगी। आरसीबी को राघवी बिष्ट और कनिका आहूजा जैसी युवा खिलाड़ियों के कारण मजबूती मिली है जो मंधाना, एलिसे पेरी, ऋचा घोष और डैनी व्याट के साथ सहजता से घुल-मिल गई हैं। राघवी और कनिका ने पहले मैच में जीत में अहम भूमिका निभाई थी। आरसीबी के गेंदबाजों को हालांकि कसी हुई गेंदबाजी करनी होगी। गेंदबाजी ने उसे पेरी की कमी महसूस हो रही है। ऑस्ट्रेलिया की यह स्टार ऑलराउंडर चोटिल होने के कारण टूर्नामेंट के शुरुआती चरण में गेंदबाजी नहीं कर पाएंगी।

दिल्ली की बल्लेबाजी बेहद मजबूत है और आरसीबी के गेंदबाजों को उन पर लगाम लगाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। दिल्ली की बल्लेबाजी इकाई में कप्तान मेग लैनिंग, एनाबेल सदरलैंड, शैफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, एलिस कैप्सी और सारा ब्राइस जैसी धुरंधर बल्लेबाज हैं जो किसी भी तरह के

आक्रमण की धज्जियां उड़ा सकती हैं। तेज गेंदबाज शिखा पांडे की अगुवाई वाली दिल्ली की गेंदबाजी इकाई ने पिछले मैच में मुंबई इंडियंस को 164 रन पर रोककर अच्छा प्रदर्शन किया था जिसे वह जारी रखने की कोशिश करेंगे।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

दिल्ली कैपिटल्स : मेग लैनिंग (कप्तान), एलिस कैप्सी, सारा ब्राइस, एनाबेल सदरलैंड, मिन्नू मणि, शैफाली वर्मा, अरुंधति रेड्डी, एन चरानी, शिखा पांडे, जेमिमा रोड्रिग्स, नंदिनी कश्यप, स्नेहा दीप्ति, जेस जोनासेन, निकी प्रसाद, तानिया भाटिया, मारिज़ैन कैप, राधा यादव, टिटास साधु।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु : स्मृति मंधाना (कप्तान), नुजहत परवीन, जोशिता वीजे, ऋचा घोष, डैनी व्याट, कनिका आहूजा, सब्बीनेनी मेघना, एकता बिष्ट, किम गर्थ, श्रेयंका पाटिल, एलिसे पेरी, प्रेमा रावत, जॉर्जिया वेयरहैम, राघवी बिस्ट, हीथर ग्राहम, जाग्रवी पवार, रेणुका सिंह, चार्ली डीन।

रणजी टीम से भी बाहर हुए यशस्वी

मुम्बई (एजेंसी)। युवा सलामी बल्लेबाज जायसवाल को आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए शामिल नहीं किया गया है। ऐसे में यशस्वी रणजी ट्रॉफी में खेलने जा रहे थे पर अब वह भी संभवन नहीं है। यशस्वी चोटिल होने के कारण रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल से भी बाहर हो गए हैं। रणजी सेमीफाइनल नागपुर के जामठा में सोमवार से मुंबई और विदर्भ के बीच शुरु होगा। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार यशस्वी के बाएं टखने में दर्द है और उनको जांच के लिए बेंगलुरु के बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस ले जाया जाएगा। आज रविवार को नागपुर में मुंबई के अभ्यास सत्र में फील्डिंग पर नेट्स में बल्लेबाजी करते समय उन्हें दर्द उभरने लगा। कहा जा रहा है कि उनकी पुरानी चोट फिर से उभर आई है। अब उनकी रिकवरी प्रक्रिया बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में होगी।+

यशस्वी जायसवाल और शिवम दुबे को आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय टीम में जगह नहीं मिली है और दोनो को ही नॉन ट्रैवलिंग सब्स्टीट्यूट के तौर पर रखा गया है। इससे साफ है कि जब कोई खिलाड़ी चोटिल होता है तो विकल्प के तौर पर इन्हें शामिल किया जाएगा। यशस्वी ने इस सत्र कमात्र रणजी ट्रॉफी मैच जम्मू और कश्मीर के खिलाफ खेला था।

चैंपियंस ट्रॉफी में सबसे अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज बन सकते हैं विराट

मुम्बई (एजेंसी)। आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली के पास एक अहम रिकार्ड बनाने का अवसर है। विराट इस टूर्नामेंट में सबसे अधिक रन बनाने वाले शीर्ष खिलाड़ी बन सकते हैं। भारतीय टीम 20 फरवरी को बांग्लादेश के खिलाफ चैंपियंस ट्रॉफी में अपने अभियान की शुरुआत करेगी और दौरान सभी की नजरें विराट कोहली पर रहेंगी। विराट ने इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे एकदिवसीय में अर्धशतक लगाकर फार्म हासिल कर लिया है। ऐसे में सभी को उनसे अधिक से अधिक रन बनाने की उम्मीदें रहेंगी। विराट अपनी चौथी चैंपियंस ट्रॉफी खेल रहे हैं। विराट ने अब तक 13 मैचों में 529 रन बनाए हैं और इस प्रकार वह भारतीय टीम के चौथे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं। उन्हें चैम्पियंस ट्रॉफी में भारत के सफल बल्लेबाज बनने के लिए केव 173 रन चाहिये।

अभी शिखर धवन के नाम चैम्पियंस ट्रॉफी में सबसे अधिक रन हैं, जिन्होंने 2013 और 2017 की चैंपियंस ट्रॉफी में कुल 701 रन बनाए थे। धवन दोनों चैंपियंस ट्रॉफी में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे थे। भारत ने 2013 में ट्रॉफी जीती थी जबकि 2017 में टीम फाइनल तक पहुंची थी। वहीं पूर्व कप्तान सौरव गांगुली 665 रन के साथ दूसरे स्थान पर हैं, जिन्होंने 2000 और 2002 में चैंपियंस ट्रॉफी खेले थे। विराट ने चैंपियंस ट्रॉफी में 12 पारियों में 529 रन बनाए हैं, जिसमें पांच अर्धशतक भी शामिल हैं। उनका औसत 88.16 का है और उन्होंने 53 चौके लगाए हैं। भारत को इस टूर्नामेंट में कम से कम तीन मैच खेलने हैं, और कोहली के पास रन बनाकर इस सूची में शीर्ष स्थान हासिल करने का सुनहरा अवसर होगा।

आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में केवल एक अनुभवी तेज गेंदबाज के साथ उतर रही भारतीय टीम

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय टीम को 19 फरवरी से होने वाली आईसीस चैम्पियंस ट्रॉफी में खिताब का प्रबल दावेदार माना जा रहा है। कप्तान रोहित शर्मा भी पिछले कुछ समय से लगातार असफल रहे है। ऐसे में उनका लक्ष्य भी इस ट्रॉफी का जीतकर प्रशंसकों को खुश करना रहेगा। हालांकि ये इतना आसान भी नहीं है। इसका कारया मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह का नहीं होना है। बुमराह ने पिछले कुछ समय में हर सीरीज में अबसे अधिक विकेट लिए हैं। ऐसे में भारतीय टीम के पास मोहम्मद शमी के अलाव कोई भी अनुभवी तेज गेंदबाज नहीं है। टीम के पास अन्य तेज गेंदबाजों में युवा हर्षित राणा और अर्शदीप सिंह है। वहीं टीम पांच स्पिनरों के साथ जा रही है।

टीम के साथ रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, वॉशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव और वरुण चक्रवर्ती जैसे स्पिनर रहेंगे। भारत के मैच दुबई में होने हैं जहां तेज गेंदबाजों को अधिक सफलता मिलती रही है। आंकड़ों पर नजर डालें तो दुबई अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम पर 2009 के बाद से 58 एकदिवसीय खेले गये हैं जिसमें तेज गेंदबाजों को पांच से कम की इकॉनामी दर से 466 विकेट मिले हैं। वहीं स्पिनरों को 334 विकेट मिले हैं और उनकी किफायत दर 4.2 रही है। वहीं भारतीय टीम 5 स्पिनर लेकर जा रही है और उसे ये रणनीति भारी पड़ सकती है। उसके पास स्पिन ऑलराउंडर के रूप में रविंद्र जडेजा, वाशिंगटन सुंदर और अक्षर पटेल हैं जबकि विशेषज्ञ स्पिनर के तौर पर वरुण चक्रवर्ती और कुलदीप यादव हैं।

पांच स्पिनरों को लेकर जाने पर भी सवाल उठ रहे है क्योंकि दुबई की पिचों पर स्पिनरों को अधिक सहायता

नहीं मिलती है। टीम में शामिल रहस्यमयी गेंदबाज वरुण चक्रवर्ती से काफी उम्मीदें हैं और अब देखना है कि वह क्या करते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी में लीग चरण में भारत को बांग्लादेश, पाकिस्तान और न्यूजीलैंड से खेलना है और इनमें से किसी ने भी वरुण का पहले सामना नहीं किया है। जडेजा और अक्षर का खेलना लगभग तय है और वरुण के खेलने पर कुलदीप यादव को बाहर रहना पड़ सकता है। एक पूर्व राष्ट्रीय चयनकर्ता ने कहा, दुबई में पिच से गेंदबाजों को शारजाह की तुलना में अधिक मदद मिलती है। तेज गेंदबाजों को यहां सफलता मिलती रही है जिसकी वजह से पाकिस्तान ने टीम में अधिक तेज गेंदबाज चुने हैं हालांकि उन्हें यहां ज्यादा मैच नहीं खेलने हैं। बुमराह के बाहर होने पर सिराज की जगह राणा को चुनने पर भी सवाल उठ रहे हैं क्योंकि ऐसे टूर्नामेंटों में अनुभव खिलाड़ी की जरुरत रहती है। ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या है मोहम्मद शमी और अर्शदीप या राणा के साथ तीसरे तेज गेंदबाज होंगे पर उनके साथ कई बार फिटनेस की समस्या आज जाती है।वहीं कप्तान रोहित शर्मा का कहना है कि पुरानी गेंद से अधिक प्रभावी नहीं होने के कारण ही सिराज को बाहर रखा गया। राणा ने टी20 में पदार्पण करके छठे गेंदबाज के तौर पर 33 रन देकर तीन विकेट लिए थे। भारतीय टीम की जीत के लिए कप्तान रोहित शर्मा औ अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली को बड़ी पारियां खेलनी होंगी।

पाकिस्तान का तेज गेंदबाज चोट से उबरा, चैंपियन्स ट्रॉफी के लिए होगा उपलब्ध

करांची - पाकिस्तान के तेज गेंदबाज हारिस राउफ चोट से उबर चुके हैं और बुधवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी में टीम के पहले मैच के लिए उपलब्ध रहेंगे। सूत्रों ने यह जानकारी दी। पाकिस्तान टीम के एक करीबी सूत्र ने रविवार को पुष्टि की कि हारिस चोट से उबर गए हैं और करांची में चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में खेलेंगे। इस तेज गेंदबाज को हाल ही में त्रिकोणीय श्रृंखला के दौरान छाती की मांसपेशियों में खिंचाव आ गया था। सूत्र ने कहा, 'हारिस अब ठीक हैं और त्रिकोणीय श्रृंखला के पहले मैच के बाद दिए गए आराम से उन्हें उबरने में मदद मिली है।% सूत्र ने कहा कि पाकिस्तान के किसी अन्य खिलाड़ी के साथ फिटनेस संबंधी कोई समस्या नहीं है। अपनी तेज गति और बीच के ओवरों में विकेट लेने की क्षमता के साथ पाकिस्तान के प्रमुख गेंदबाजों में से एक हारिस टीम के साथ बने हुए हैं जबकि चयनकर्ताओं ने उनके विकल्प के रूप में अकिफ जावेद को बुलाया है जिन्हें पदार्पण का इंतजार है। हारिस ने 46 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में 83 विकेट और 79 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में 110 विकेट चटकाए हैं। पाकिस्तान त्रिकोणीय श्रृंखला में न्यूजीलैंड से दो बार हार गया था जिसमें शुक्रवार को हुआ फाइनल भी शामिल है। टीम को चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में हार का बदला चुकता करने का मौका मिलेगा जिसमें वे गत विजेता भी हैं।

श्रेयंका डब्ल्यूपीएल से बाहर हुई

मुम्बई । रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की श्रेयंका पाटिल फिट नहीं होने के कारण महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) 2025 के तीसरे सत्र से बाहर हो गयी हैं। आरसीबी के अनुसार श्रेयंका अपनी चोट से नहीं उबर पायी हैं। इसी कारण उनकी जगह पर ऑलराउंडर स्नेह राणा को शामिल किया गया है। फ्रेंचाइजी ने उनके बाहर होने की घोषणा करते हुए कहा कि ये खिलाड़ी अपनी पिंडली की चोट से परेशान हैं जिसका वह अभी इलाज करायेंगी। श्रेयंका ने आरसीबी की ओर से पिछले सत्र में अच्छा प्रदर्शन करते हुए 8 मैचों में 13 विकेट लिए थे। ऐसे में उनका बाहर होना टीम के लिए करारा झटका है। लीग में श्रेयंका के अलावा आशा शोभना और सोफी मोलिनक्स की चोटिल होकर बाहर हो गयी हैं। श्रेयंका की जगह पर शामिल राणा ने गुजरात जायंट्स के लिए डब्ल्यूपीएल के दो सत्रों के 12 मैचों में भाग लिया है। उसने दो मैचों में टीम की कप्तानी भी की थी।

चैंपियंस ट्रॉफी में स्मिथ पारी शुरु करें : गिलक्रिस्ट

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई टीम के करिश्माई विकेटकीपर बल्लेबाज रहे क्रिकेटर एडम गिलक्रिस्ट ने कहा कि 19 फरवरी से होने वाली आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी में कप्तानी कर स्टीव स्मिथ पारी की शुरुआत करें। गिलक्रिस्ट के अनुसार इससे स्मिथ को अधिक से अधिक गेंदें खेलने के लिए मिलेंगी। इससे पहले हुए श्रीलंका दौरे में स्मिथ ने मध्यक्रम के बल्लेबाज के तौर पर काफी कम रन बनाये थे। गिलक्रिस्ट के अनुसार युवा बल्लेबाज जेक फ्रेजर-मैकगर्क अभी रन नहीं बना पा रहे हैं। ऐसे में स्मिथ को पारी शुरु करनी चाहिए। गिलक्रिस्ट के अनुसार मैट शॉर्ट को भी शीर्ष क्रम में ट्रैविस हेड के साथ उतारा जा सकता है पर अभी स्मिथ को पारी शुरु करनी चाहिए क्योंकि शॉर्ट के पास अधिक अनभव नहीं है।

उन्होंने कहा,मुझे मैट को बल्लेबाजी में हैड

के साथ उतारना भी अच्छा प्रयोग लग रहा है। इससे बाएं हाथ और दाएं हाथ का अच्छा संयोजन बनेगा। वहीं स्मिथ भी पारी शुरु कर कर सकते हैं, टी20 में हमने उन्हें 20 ओवर के क्रिकेट में ऐसा करते हुए देखा है। वह मध्यक्रम में काफी अच्छे बल्लेबाजी है पर पारी की शुरुआत में भी वह सफल रहेंगे। इससे उन्हें ज्यादा गेंदों का सामना करने का अवसर मिलेगा। टीम चैंपियंस ट्रॉफी में मिशेल स्टार्क, जोश हेज़लवुड और पैट कमिंस जैसे शीर्ष तेज गेंदबाजों के बिना उतरेगी। इसके अलावा ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन और मिशेल मार्श भी उसके साथ नहीं हैं, ऐसे में युवा खिलाड़ियों पर अधिक जम्मेदारी है। ऑस्ट्रेलिया को चैंपियंस ट्रॉफी के लीग चरण के मैचों में इंग्लैंड, अफ़गानिस्तान और दक्षिण अफ्रीका से मुकाबला करना है। गिलक्रिस्ट को लगता है कि चैंपियंस ट्रॉफी के लिए उनकी सीमित तैयारी के कारण टीम को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। उन्होंने कहा मुझे लगता है कि इस प्रारूप के संबंध में सीमित तैयारी हुई है।

चैम्पियंस ट्रॉफी सेमीफाइनल में पहुंचने लीग के सभी तीन मैच जीतने होंगे

मुम्बई । आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से शुरु हो रही है। चैम्पियंस ट्रॉफी की मेजबानी पाकिस्तान कर रहा है हालांकि इसमें भारतीय टीम के मुकाबले दुबई में खेले जाएंगे। रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय टीम खिताब की प्रबल दावेदार मानी जा रही हैं हालांकि मेजबान पाकिस्तान के अलावा ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका भी प्रबल दावेदारों में शामिल हैं। इसमें भाग ले रही सभी आठ टीमों को चार-चार टीमों के दो समूहों में बांटा गया है और इन सभी टीमों को तीन-तीन लीग मुकाबले खेलने होंगे और सेमीफाइनल में पहुंचने ये तीनों ही मैच जीतने होंगे। एक भी हार टीम को खिताब की दौड़ से बाहर कर सकती है। इसमें शीर्ष पर रही दो टीमें सेमीफाइनल में जगह बनाएगी। आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी को नॉकआउट टूर्नामेंट माना जाता है। यहां एक भी मैच हारना टीम की उम्मीदों को समाप्त कर सकता है। भारतीय टीम को ग्रुप ए में मेजबान पाकिस्तान, बांग्लादेश और न्यूजीलैंड के साथ रखा गया है। टीम इंडिया पहला मैच बांग्लादेश के खिलाफ 20 फरवरी को खेलेगी। इसके बाद 23 फरवरी को उसका मुकाबला पाकिस्तान से होगा। वहीं भारतीय टीम को अपना अंतिम लीग मैच 2 मार्च को न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलेगी। टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में सीधे जगह बनाने के लिए सभी तीनों मैच जीतने होंगे। वहीं अगर तीन में से 1 मैच भी टीम हारती है तो उसे अन्य टीमों के परिणामों पर निर्भर रहना पड़ेगा। चार टीमों के ग्रुप में दो ऐसी टीमें जिन्होंने 2-2 मुकाबला जीते होने पर सेमीफाइनल में जाने वाली टीम का फैसला नेट रन रेट के आधार पर किया जाएगा।

यानिक सिनर और वाडा के बीच समझौता, टेनिस खिलाड़ी बोले- अब साफ-सुथरे खेल में विश्वास नहीं

लंदन । विश्व के नंबर एक खिलाड़ी यानिक सिनर पर डोपिंग मामले में तीन महीने का प्रतिबंध लगाने के समझौते की टेनिस खिलाड़ियों ने कड़ी आलोचना की है। सिनर और विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (वाडा) के बीच निलंबन को लेकर समझौता हो गया है जिसका मतलब है कि इटली का यह खिलाड़ी पांच मई से फिर से खेल सकता है। इससे उनकी विश्व में नंबर एक रैंकिंग पर भी कोई असर नहीं पड़ेगा तथा वह सभी ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट खेल पाएंगे। पिछले साल मार्च में प्रतिबंधित एनाबॉलिक स्टेरॉयड के सेवन का दोषी पाए जाने वाले सिनर को कोई खिताब या पुरस्कार राशि भी नहीं गंवानी पड़ेगी। तीन बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन स्टैन वावरिंका ने एक्स पर लिखा, 'मैं अब साफ-सुथरे खेल में विश्वास नहीं करता।' विंबलडन उपविजेता निक किर्गियोस ने एक्स पर कहा, 'टेनिस में निष्पक्षता मौजूद नहीं है। सिनर की टीम ने केवल तीन महीने का प्रतिबंध लगाने के लिए अपनी तरफ से पूरी शक्ति लगा दी। कोई खिताब नहीं खोया, कोई पुरस्कार राशि नहीं खोई। दोषी है या नहीं? टेनिस के लिए दुखद दिन।' विश्व के आठवें नंबर के खिलाड़ी दानिल मेदवेदेव ने मार्सिले ओपन के सेमीफाइनल में हारने के बाद कहा, 'मुझे उम्मीद है कि हर कोई वाडा के साथ चर्चा कर सकता है और अब से यानिक सिनर की तरह खुद का बचाव कर सकता है।' विश्व के पूर्व नंबर एक ब्रिटिश खिलाड़ी टिम हेनमैन ने कहा, 'उसने अभी ऑस्ट्रेलियाई ओपन जीता है और वह अगले तीन महीने तक एटीपी टूर में नहीं खेल पाएगा लेकिन फ्रेंच ओपन में खेलने का पात्र होगा। सिनर के लिए प्रतिबंध झेलने का इससे बेहतर समय नहीं हो सकता था लेकिन यह इस खेल के लिए कड़वे घूंट की तरह है।' नोवाक जोकोविच और वासेक पोस्पिसिल द्वारा स्थापित प्रोफेशनल टेनिस प्लेयर्स एसोसिएशन ने भी निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल पार्टियों की आलोचना करते हुए एक्स पर जारी बयान में कहा, 'प्रणाली कोई प्रणाली नहीं है। यह एक क्लब है। यह केवल अनुरूप सौदों, अनुचित व्यवहार और असंगत निर्णयों के लिए कवर है। इसमें पारदर्शिता की कमी और प्रक्रिया का अभाव है।'

चैंपियंस ट्रॉफी के वह एतिहासिक क्षण जिन्हें भूला पाना है मुश्किल

दुबई (यूएई) (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के 19 फरवरी से शुरू हो रही है जो पाकिस्तान और यूएई में खेली जाएगी। भारत अपने मैच यूएई में हाईब्रिड मॉडल के तहत खेलेगा जबकि बाकी का टूर्नामेंट पाकिस्तान में होगा। टूर्नामेंट से पहले आइए इसके पिछले संस्करणों के पांच सबसे प्रतिष्ठित क्षणों पर एक नजर डालते हैं जिन्हें भुला पाना मुश्किल है।

वीरेंद्र सहवाग ने गेंद से जीत दिलाने में की मदद

स्टार बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने अपनी ऑफ-स्पिन से खेल को बदल दिया क्योंकि भारत ने कोलंबो में दक्षिण अफ्रीका पर रोमांचक जीत के साथ 2002 के संस्करण के फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। सहवाग ने पहले ही शानदार अर्धशतक का योगदान दिया था, जिसमें भारत ने आर प्रेमदासा स्टेडियम में 261/9 का प्रतिस्पर्धी स्कोर बनाया था, लेकिन रन चेज के दौरान

प्रोटियाज नियंत्रण में दिखाई दिए और उन्होंने सात विकेट और नौ ओवर शेष रहते स्कोर 200 तक पहुंचा दिया। सहवाग ने मार्क बाउचर, जैक्स कैलिस और लांस क्लूजनर के महत्वपूर्ण विकेट लिए और भारत के लिए रोमांचक जीत सुनिश्चित की और श्रीलंका के खिलाफ फाइनल में अपनी जगह पक्की की।

वेस्टइंडीज की शानदार जीत

2004 में लंदन के ओवल में इंग्लैंड के खिलाफ खिताबी मुकाबले में जब मुख्य बल्लेबाज शिवनारायण चंद्रपॉल आउट हो गए और कैरेबियाई टीम को जीत के लिए 81 रन की जरूरत थी, तब वेस्टइंडीज के लिए चीजें निराशाजनक लग रही थीं, लेकिन कोर्टनी ब्राउन और इयान ब्रैडशॉ के बीच 9वें विकेट की अविश्वसनीय साझेदारी ने एक शानदार रन चेज का मार्ग प्रशस्त किया। ब्राउन और ब्रैडशॉ ने नाबाद 71 रनों की पारी खेली जिससे वेस्टइंडीज ने सात गेंद शेष रहते इंग्लैंड के 217 रनों के लक्ष्य को सफलतापूर्वक हासिल कर लिया और कैरेबियाई टीम ने अपना पहला खिताब जीता।

इंग्लैंड ने घरेलू मैदान पर दक्षिण अफ्रीका को हराया

2009 में सेंचुरियन में हुए हाई-स्कोरिंग मुकाबले में इंग्लैंड ने मेजबान देश दक्षिण अफ्रीका पर शानदार जीत के साथ नॉकआउट चरण में अपनी जगह पक्की की। ओवैस शाह ने बल्ले से हीरो बनकर 98 रनों की पारी खेली जिसमें उन्होंने छह छक्के लगाए जबकि तेज गेंदबाज जेम्स एंडरसन और स्टुअर्ट ब्रॉड ने तीन-तीन विकेट चटकाए जिससे प्रोटियाज टीम जवाब में बुरी तरह से पिछड़ गई। ग्रीम स्मिथ ने दक्षिण अफ्रीका के लिए शानदार 141 रन की पारी खेली लेकिन यह काफी नहीं था क्योंकि इंग्लैंड ने काफी तेजी के साथ सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

लसिथ मलिंगा का कम स्कोर वाले रोमांचक मैच में शानदार प्रदर्शन

कम स्कोर वाले मुकाबलों में अक्सर रोमांचक अंत होता है और 2013 में कार्डिफ में ऐसा ही हुआ जब न्यूजीलैंड ने श्रीलंका पर एक विकेट से शानदार जीत दर्ज की। बहुत से लोगों ने उम्मीद नहीं की होगी कि श्रीलंका का 138 रन का स्कोर प्रतिस्पर्धी होगा, लेकिन तेज गेंदबाज लसिथ मलिंगा के इरादे कुछ और ही थे, उन्होंने ब्लैक कैप्स के मध्यक्रम को तहस-नहस कर दिया और न्यूजीलैंड को जवाब में 122/8 पर रोक दिया। टिम साउथी और मिशेल मैक्लेनाघन को न्यूजीलैंड को जीत दिलाने की जिम्मेदारी सौंपी गई, लेकिन इससे पहले श्रीलंका ने बड़ा उलटफेर कर दिया था।

फखर जमान ने पाकिस्तान को भारत पर जीत दिलाई

लंदन के ओवल में एक यादगार दिन था, जब पाकिस्तान ने अपने चिर प्रतिद्वंद्वी भारत पर जोरदार जीत के साथ अपना पहला चैंपियंस ट्रॉफी खिताब जीता। सलामी बल्लेबाज फखर जमान ने शानदार शतक के साथ पाकिस्तान को 338/4 का स्कोर बनाने में मदद की और मोहम्मद आमिर के शानदार गेंदबाजी प्रदर्शन ने सुनिश्चित किया कि यह स्कोर पर्याप्त से अधिक हो। आमिर ने रोहित शर्मा और विराट कोहली को जल्दी-जल्दी आउट करके भारत के शीर्ष क्रम को तहस-नहस कर दिया और भारत कभी भी उबर नहीं सका और जवाब में सिर्फ 158 रन पर ढेर हो गया।

चैम्पियंस ट्रॉफी में फखर और बाबर से रहना होगा भारतीय टीम को सावधान

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम 19 फरवरी से शुरु हो रही आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए दुबई पहुंच गयी है। यहां भारतीय टीम को 23 फरवरी को पाकिस्तान से अहम मुकाबला खेलना है। ऐसे में भारतीय टीम पिछली बार हुए चैम्पियंस ट्रॉफी फाइनल की यादों को भूलना चाहेगी। तब पाक टीम के फखर जमां और बाबर आजम के कारण भारतीय टीम को हार का सामना करना पड़ा था। इस बार भी ये दोनो ही खिलाड़ी पाक टीम में हैं जिनसे भारतीय टीम को निपटना होगा। भारतीय टीम के लिए राहत की बात ये है कि ये इस बार अपने पहले वाले फार्म में नजर नहीं आ रहे। ऐसे में विराट कोहली की कप्तानी में मिली हार का हिसाब रोहित शर्मा की टीम लेना चाहेगी। पिछली बार बाबर आजम, फखर जमां और फहीम अशरफ ने पाक टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई थी। इस बार भी ये तीनो ही पाक टीम में शामिल हैं। बाबर आजम ने 2017 के फाइनल में 52 बॉल पर 46 रन की अहम पारी खेली थी। तब पाक टीम ने 338 रन बनाये थे। वहीं फखर जमां ने शतकीय पारी खेली थी। जिससे पाक टीम 338 रन बनाने में सफल रही थी।

एक नजर

हम रेल मंत्री के साथ : मांझी

नई दिल्ली : हिन्दुस्तानी अवाम पार्टी के मुखिया एवं केन्द्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुए हादसे को लेकर रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव का बचाव किया है। मांझी ने कहा है कि हमने माना कि रेलवे के अधिकारियों से चूक हुई है, पर इसका मतलब यह नहीं कि सीधे तौर पर रेल मंत्री का इस्तीफा मांग लिया जाए। रविवार को सोशल मीडिया के एक्स हैंडल पर एक पोस्ट में केन्द्रीय मंत्री मांझी ने कहा कि घटना नि:संदेह आकस्मिक है, पर हमें यह देखना चाहिए कि कई करोड़ लोगों को एक साथ कितनी मुश्किल से रेल मंत्रालय कुंभ स्नान करवा रहा है। इसके लिए अश्विनी वैष्णव के काम की तो तारीफ होनी चाहिए। हम रेल मंत्री के साथ है। उल्लेखनीय है कि नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर शनिवार की रात भगदड़ में 18 लोगों की मौत हुई है। हादसे के बाद राजनीतिक आरोप प्रत्यारोपों का दौर शुरू हो गया है। कांग्रेस सहित कई विपक्षी दल सीधे तौर पर रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव पर निशाना साध कर उनसे इस्तीफा मांग रहे हैं।

अमेरिका से डिपोर्ट दो युवकों को हत्या मामले में पंजाब पुलिस ने किया गिरफ्तार

चंडीगढ़ : पंजाब पुलिस ने अमेरिका से डिपोर्ट होकर शनिवार की रात लौटे दो युवकों को गिफ्तार किया है। यह दोनों युवक आपस में चचेरे भाई हैं और इन पर पंजाब में हत्या का केस दर्ज है। बाद में दोनों डंकी रूट से अमेरिका गए थे। पटियाला के एसएसपी डॉक्टर नानक सिंह के अनुसार दोनों युवकों के विरुद्ध पहले से मामला दर्ज था। इनका लुआउट नोटिस भी जारी हो चुका है। पकड़े गए आरोपियों को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जाएगी। गिरफ्तार दोनों भाइयों की पहचान संदीप और प्रदीप के रूप में हुई है। यह पटियाला में राजपुरा के रहने वाले हैं। पुलिस के अनुसार पटियाला के राजपुरा सिटी थाने में 25 जून 2023 को दर्ज एफआईआर के मुताबिक शिकायतकर्ता हरमनजोत ने बताया थाकि दाना मंडी के करीब उनकी रेहड़ी लगती है। वहां 25 जून की रात हसमुख सिंह उनकी रेहड़ी पर आया। जिसके साथ उसका झगड़ा हो गया। उसने अपने दोस्तों संदीप सिंह उर्फ सनी और प्रदीप सिंह को बुला लिया। इन आरोपितों ने शिकायतकर्ता हरमनजोत के भाई सचंदर सिंह और फूफा सरवन सिंह पर हमला कर दिया था। इस हमले में सरवन सिंह की मौत हो गई थी। इसके बाद दोनों आरोपी डंकी रुट से अमेरिका फरार हो गए। अब उन्हें डिपोर्ट किये जाने पर पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया है।

कर्नाटक में 21 मार्च से होगी संघ की बैठक

नागपुर : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक 21 से 23 मार्च को बेंगलुरु के चेलनड्डी में होगी। इस बैठक में संघ के शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की जाएगी। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सबसे बडी नीति निर्धारक समिति है। संघ प्रतिवर्ष देश के विभिन्न प्रांतों में प्रतिनिधि सभा की बैठक आयोजित करता है। इस बार यह बैठक बेंगलुरु के चेलनड्डी में 21 मार्च से 23 मार्च तक होगी। जानकारी के अनुसार बेंगलुरु के चेलनड्डी में आयोजित बैठक में संघ शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की जाएगी। इस साल विजयादशमी को संघ की स्थापना के 100 वर्ष पूरे हो जाएंगे। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कार्य योजना को लेकर चर्चा और विभिन्न मुद्दों पर विचार-मंथन होगा। साथ ही बैठक में 2025-26 में होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा और फ्रेम तय किया जाएगा। इसमें संघ के विस्तार और दृढ़ीकरण के लिहाज से रूपरेखा तैयार किया जाएगा।

जनजातीय विरासत को प्रस्तुत और प्रोत्साहित करने में प्रमुख है आदि महोत्सव का आयोजन : राष्ट्रपति

- नई दिल्ली के मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में शुरू हुआ आदि महोत्सव 2025

एजेंसी

नई दिल्ली : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने रविवार को कहा कि आदि महोत्सव जनजातीय विरासत को प्रस्तुत करने और उसे प्रोत्साहित करने का एक प्रमुख आयोजन है। ऐसे उत्सव, जनजातीय समाज के उद्यमियों, शिल्पकारों और कलाकारों को बाजार से जुड़ने का बहुत अच्छा अवसर प्रदान करते हैं। जनजातीय मामलों के मंत्रालय के तहत भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ लिमिटेड 16-24 फरवरी तक मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम नई दिल्ली में प्रतिष्ठित आदि महोत्सव 2025 का शुभारंभ हो गया। राष्ट्रपति मुर्मु आज मुख्य अतिथि के रूप में इस महोत्सव के उद्घाटन समारोह में शामिल हुईं। कार्यक्रम में जनजातीय कार्य मंत्री जुएल ओराम भी मौजूद रहे। इस महोत्सव में 600 से अधिक आदिवासी कारीगर, 500 प्रदर्शनकारी कलाकार भाग ले रहे है। इस मौके पर 25 आदिवासी खाद्य स्टॉल भी लगाए गए हैं। यहां 30 से अधिक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की विविध परंपराओं का प्रतिनिधित्व भी है। इस अवसर पर राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि जनजातीय समाज की शिल्प-कलाएं, खान-पान, वस्त्र और आभूषण, चिकित्सा पद्धतियां, घरेलू उपकरण तथा खेल-कूद हमारे देश की अनमोल धरोहर हैं। वे न केवल पारंपरिक हैं, बल्कि आधुनिक और वैज्ञानिक भी हैं। वे पर्यावरण के साथ एक प्राकृतिक सद्भाव प्रदर्शित करते हैं और एक स्थायी जीवन शैली का अनुकरण करते हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि पिछले 10 वर्ष में आदिवासी समुदायों के व्यापक विकास के लिए कई प्रभावी कदम उठाए गए हैं। किसी भी समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती है। यह प्रसन्नता की बात है कि देश में 470 से अधिक एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के माध्यम से लगभग सवा लाख आदिवासी बच्चों को स्कूली शिक्षा दी जा रही है। उन्होंने कहा कि पीएम जनमन अभियान के तहत विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समुदाय के लगभग 28 लाख लोगों को लाभ पहुंचाने के प्रयास किए जा रहे हैं। बड़े पैमाने पर अभियान की सफलता का विस्तार करने के लिए और यह सुनिश्चित करने के लिए कि जनजाती समुदायों के पांच करोड़ से अधिक लोग सरकारी पहलों से लाभान्वित होते हैं, पिछले साल गांधी जयंती पर धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान शुरू किए गए थे।

भारत को विकसित बनाने में कपड़ा क्षेत्र का भी होगा बड़ा योगदान : प्रधानमंत्री

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था में सदियों से कपड़ा उद्योग की बड़ी भूमिका रही है। वर्तमान में भारत को विकसित बनाने में भी कपड़ा क्षेत्र का बड़ा योगदान रहने वाला है। भारत टेक्स जैसे आयोजन इस क्षेत्र में भारत की स्थिति को मजबूत बना रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रविवार को नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित भारत टेक्स-2025 कार्यक्रम को संबोधित कर थे। वैश्विक स्तर का आयोजन 14 से शुरू हुआ था और 17 फरवरी तक चलेगा। भारत टेक्स में 120 से अधिक देश भाग ले रहे हैं।
इस मौके पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज भारत दुनिया का छठा सबसे बड़ा कपड़ा और परिधान निर्यातक देश है। भारत का निर्यात 3 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। अब हमारा लक्ष्य है कि वर्ष 2030 तक हम इसे 9 लाख करोड़ रुपये तक लेकर जाएं। भारत के कपड़ा क्षेत्र की समस्याओं का समाधान और संभावनाओं का सृजन हमारा संकल्प है। इसके लिए हम दूरदर्शी और लम्बे कालखंड के नवाचार पर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगले कुछ वर्षों में भारत की कपड़ा रिसाइक्लिंग बाजार 40 करोड़ डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। वैश्विक रिसाइक्लिंग बाजार करीब 7.5 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। अगर हम सही दिशा में आगे बढ़ें, तो भारत इसमें और बड़ा शेयर हासिल कर सकता है। इस सफलता के पीछे पूरे एक दशक की मेहनत और निरंतर नीति को श्रेय देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले एक दशक में हमारे कपड़ा क्षेत्र में विदेशी निवेश दोगुना हुआ है। कपड़ा देश में सबसे ज्यादा रोजगार के अवसर देने वाली उद्योगों में से एक है। भारत की उत्पादकता में क्षेत्र 11 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। इस बार बजट में भी हमने मिशन मैन्युफैक्चरिंग पर बल दिया है। क्षेत्र में निवेश और विकास का लाभ करोड़ों कपड़ा क्षेत्र के कामगारों को मिल रहा है।

गुजरात में स्थानीय निकायों के चुनाव में करीब 57 फीसदी मतदान

अहमदाबाद : गुजरात में रविवार को स्थानीय निकायों के लिए मतदान किए गए। कुल 66 नगर पालिकाओं, 3 तहसील पंचायत और 1 महानगर पालिका के लिए कुल 5084 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला ईवीएम में कैद हो गया। करीब 38 लाख मतदाता उम्मीदवारों का भविष्य तय करेंगे। मतदान सुबह 7 बजे से शुरू हुआ और शाम 6 बजे तक चला। गुजरात में स्थानीय निकायों के चुनाव में अभी तक कुल 213 सीट निर्विरोध घोषित की जा चुकी हैं। जूनागढ़ महानगर पालिका के 15 वार्ड की 60 सीटों में 8 सीट निर्विरोध घोषित हुई हैं। राज्य में रविवार को हुए चुनाव में शांतिपूर्ण मतदान हुआ है। हालांकि कुछ जगहों पर आरोप-प्रत्यारोप समेत हल्की नोकझोंक की खबर है।

भारत से कब उड़ेगा बांग्लादेशियों रोहिंग्याओं के लिए विमान : शिवसेना

एजेंसी

जम्मू : शिवसेना (यूबीटी) जम्मू-कश्मीर ने अमेरिका द्वारा अवैध प्रवासी भारतीयों की वापसी पर अपमानजनक तरीके व व्यवहार को दोहराए जाने की कड़ी आलोचना करते हुए इसके साथ ही अवैध बांग्लादेशियों, रोहिंग्या मुस्लिमों को देश से बाहर करने के लिए तत्काल प्रभाव से कड़े कदम उठाने की मांग की है। पार्टी प्रदेश मध्यवर्ती कार्यालय से जारी प्रेस विज्ञप्ति में पार्टी प्रदेश प्रमुख मनीश साहनी ने अमेरिका द्वारा अवैध प्रवासी भारतीयों को हटाने को लेकर अपमानजनक व्यवहार के सिलसिले को जारी रखने की कड़ी आलोचना की है। गत दिवस 116 भारतीयों जिनमें-जम्मू-कश्मीर निवासी भी शामिल थे को एक बार फिर सैन्य विमान व बेड़ियों में देश वापिस भेजा गया जो बेहद निंदनीय है। साहनी ने केन्द्र की मोदी सरकार से अपमान पर कड़ा संज्ञान लेते हुए अमेरिकी राजदूत को तलब कर कड़ा विरोध दर्ज करने के साथ अपमानजनक व्यवहार को बंद करने की मांग की है। हालांकि इस बार महिलाओं व बच्चों को बेड़ियों से मुक्त से मुक्त रखा गया था। साहनी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से देश में डेरा डाले बांग्लादेश की पूर्व राष्ट्रपति शेख हसीना, पाकिस्तानी महिला सीमा हैदर समेत जम्मू-कश्मीर तथा देशभर में अवैध बांग्लादेशियों, रोहिंग्या मुस्लिमों को देश से बाहर निकालने के लिए तत्काल प्रभाव से कड़े कदम उठाने की मांग की है। वहीं शिवसेना ने गत दिवस देर रात दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुए भगदड़ की घटना पर गहरा दुख प्रकट किया है। साहनी ने कहा कि महाकुंभ में जाने वाले लोगों की भारी भीड़ से निपटने को लेकर लगातार रेलवे स्टेशनों व रेलगाड़ियों में बदइंतजामी पर सवाल उठ रहे थे।

स्थानीय कारीगरों के उत्पादों को मिल रही वैश्विक पहचान : धर्मेंद्र प्रधान

एजेंसी

महाकुंभ नगर : महाकुंभ में आयोजित एक जिला-एक उत्पाद (ओडीओपी) प्रदर्शनी में रविवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कुशीनगर जिले के प्रसिद्ध केले के रेशे से निर्मित कालीन की खरीददारी की और इसकी गुणवत्ता को जमकर सराहा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार की यह योजना न केवल स्थानीय कारीगरों को सशक्त बना रही है, बल्कि वैश्विक स्तर पर प्रदेश के उत्पादों को नई पहचान दिला रही है। धर्मेंद्र प्रधान ने ओडीओपी योजना की सराहना करते हुए कहा कि यह पहल स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह योजना न केवल कारीगरों और छोटे उद्यमियों को सशक्त बना रही है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान कर रही है। अब यूपीआई जैसी डिजिटल भुगतान व्यवस्था के चलते कारीगरों को सीधे उनके उत्पादों का उचित मूल्य मिल रहा है, जिससे व्यापार में पारदर्शिता और सुगमता आई है। महाकुम्भ के आयोजन से प्रदेश के हर जिले के विशिष्ट उत्पादों को व्यापक पहचान मिल रही है, जिससे स्थानीय कारीगरों और उद्यमियों को बड़ा बाजार उपलब्ध हो रहा है। यह प्रयास भारत की आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और आने वाले समय में इससे प्रदेश के लाखों कारीगरों को आर्थिक मजबूती मिलेगी। प्रदर्शनी के दौरान विभिन्न जनपदों के ओडीओपी उत्पादों के कारीगरों और उद्यमियों ने भी केंद्रीय मंत्री से संवाद किया और अपने अनुभव साझा किए।

पंचायत चुनाव का नक्सलियों ने नहीं किया विरोध, नक्सली कमांडर हिड़मा के गांव में पहली बार होगा मतदान

एजेंसी

जगदलपुर : छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बस्तर संभाग के सात जिलों में पहले वोट डालने पर नक्सली अंगुली काटने की धमकी देते थे। अब वहां त्रि-स्तरीय पंचायत चुनाव की सुगबुगाहट दिखने लगी है, वहीं बड़े नक्सली कैडरों के मारे जाने से कमजोर पड़ रहे नक्सली संगठन की ओर से पंचायत चुनाव को लेकर पहली बार अब तक विरोध नहीं किया गया है। बस्तर संभाग की कुल 1,855 पंचायतों में तीन चरणों में 17, 20 और 23 फरवरी को चुनाव होने हैं। नक्सलियों के कोर इलाके में दो वर्ष के भीतर 40 से अधिक नवीन सुरक्षा कैंप स्थापित किए जाने के बाद इन इलाकों में कुछ हद तक नक्सलियों का प्रभाव कम हुआ है। वैसे नक्सलवाद अपने अस्तित्व को बचाने के लिए पूरा जोर लगा रहा है। वहीं सुकमा जिले में नक्सली कमांडर हिड़मा के गांव पूवर्ती में पहली बार मतदान होगा। पिछले विधानसभा और लोकसभा चुनाव में यहां के लोगों ने विस्थापित मतदान केंद्र सिलगेर में मतदान किया था। सुकमा कलेक्टर देवेश ध्रुव ने बताया कि सुकमा जिले में 60 संवेदनशील और 25 अति संवेदनशील पंचायतों में भी इस बार त्रि-स्तरीय पंचायत चुनाव होने हैं। नए सुरक्षा कैंपों के खुलने के बाद से नक्सली इन क्षेत्रों से पीछे हटे हैं, जिससे इन पंचायतों में लगभग 40 साल बाद पंचायत चुनाव में मतदान होंगे। पंचायत चुनाव को लेकर ग्रामीणों में उत्साह दिख रहा है। ग्रामीण अब अपने गांव में सड़क, बिजली, पानी की सुविधा चाहते हैं। आस-पास के गांव में नवीन सुरक्षा कैंप आने के बाद हुए बदलाव से लोग प्रभावित हैं और लोगों का लोकतंत्र पर भरोसा मजबूत हुआ है। बीजापुर कलेक्टर संबित मिश्रा के अनुसार जिले में 50 से अधिक अतिसंवेदनशील मतदान केंद्र हैं, जहां इस बार चुनाव होने हैं। अंदरूनी क्षेत्रों में नवीन सुरक्षा कैंपों की स्थापना के बाद गांव का विकास होने से लोगों में लोकतंत्र पर भरोसा बढ़ा है।

संक्षिप्त खबरें

कांशीराम के पद चिन्हों पर चलने वाला ही होना चाहिए बसपा का उतराधिकारी : मायावती

लखनऊ : बहुजन समाज पार्टी में बीते कुछ दिनों से यह हलचल है कि मायावती अपना उतराधिकारी ढूंढ रही है। इन सारी अटकलों पर विराम लगाते हुए पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने एक बार फिर उतराधिकारी के पद पर अपना रूख स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा कि बसपा उतराधिकारी उनके जीते जी कोई कांशीराम के पद चिन्हों पर चलने वाला ही होगा। उन्होंने रविवार को एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि कांशीराम की उत्तराधिकारी होने के नाते उनके पदचिन्हों पर चलते हुए मैं भी अपनी आखिरी सांस तक हर कुबार्नी देकर संघर्ष जारी रखूंगी। ताकि बहुजन समाज के लोग राजनीतिक गुलामी व सामाजिक लाचारी के जीवन से मुक्त होकर अपने पैरों पर खड़े हो सकें। मायावती ने कहा कि बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के मानवतावादी आत्म-सम्मान व स्वाभिमान के कारवां को सत्ता तक पहुंचाने के लिए कांशीराम ने सब कुछ त्यागकर स्थापित की गई पार्टी व मूवमेन्ट, जिसमें स्वार्थ, रिश्ते-नाते आदि महत्वहीन अर्थात बहुजन-हित को सर्वोपरि रखा था। देश भर में बसपा के छोटे-बड़े सभी पदाधिकारियों और कार्यकताओं को भी पार्टी प्रमुख द्वारा निर्देश, निर्धारित अनुशासन एवं दायित्व के प्रति पूरी निष्ठा व ईमानदारी से जवाबदेह होकर पूरे तन, मन, धन से लगातार काम करते रहना जरूरी है। इसी जिम्मेदारी के साथ खासकर कैडर के बल पर, जमीनी स्तर पर पार्टी संगठन की मजबूती व सर्वसमाज में जनाधार को बढ़ाने के साथ ही आगे भी हर चुनाव की तैयारी में पूरी दमदारी के साथ लगना है, ताकि बहुजन समाज की एकमात्र आशा की किरण बसपा को अपेक्षित व प्रतीक्षित सफलता मिल सके।

अमेरिका से डिपोर्ट आठ अप्रवासी अहमदाबाद पहुंचे

अहमदाबाद : अमेरिका में अवैध रूप से घुसे गुजरात के आठ अप्रवासियों को लेकर विमान रविवार सुबह करीब 11.30 बजे अहमदाबाद हवाईअड्डे पहुंचा। हवाईअड्डे पर जरूरी प्रक्रिया पूरी करने के बाद सभी लोगों को पुलिस बंदोबस्त के साथ काले पर्दे वाले वाहन में बिठाकर उनके घर के लिए रवाना किया गया। डिपोर्ट सभी लोगों में मेहसाणा जिले के छह और गांधीनगर दो नागरिक बताए जा रहे हैं। अमेरिका में अवैध रूप से घुसे भारतीयों को वहां के प्रशासन ने डिपोर्ट करने का क्रम जारी है। दूसरे चरण में 116 अप्रवासी भारतीयों को डिपोर्ट किया गया है। इसके तहत 15 फरवरी शनिवार की रात 11.40 बजे अमेरिकन एयरफोर्स का विमान अमृतसर पहुंचा, जिसमें 8 गुजराती समेत कुल 116 अप्रवासी भारतीय थे। जहां से गुजरात के रहने वाले नागरिकों को दिल्ली लाया गया। रविवार सुबह गुजरात के सभी नागरिक दिल्ली से अहमदाबाद हवाईअड्डे पहुंचे। डिपोर्ट किए गए गुजरात के नागरिकों में गांधीनगर कलोल के धवल लुहार व रुद्र लुहार हैं, जबकि मेहसाणा जिले के मिहिर ठाकोर, धीरज कुमार पटेल, केनिश चौधरी, आरोहीबेन गोस्वामी, दीपकपुरी गोस्वामी, पूजाबेन गोस्वामी शामिल हैं। अहमदाबाद के कलेक्टर सुजीत कुमार ने बताया कि डिपोर्ट सभी अप्रवासी नागरिकों को पुलिस की गाड़ी से उनके घरों के लिए रवाना किया गया है। जिला कलेक्टर को किसी तरह का पत्राचार नहीं हुआ है। इस तरह के मामलों में पुलिस प्रशासन की ओर से कार्रवाई की जाती है। पहले चरण में अमेरिका ने 104 भारतीयों को डिपोर्ट किया था। यह सभी 5 फरवरी को अमेरिकी एयरफोर्स विमान से अमृतसर पहुंचे थे। जिनमें से गुजरात के 33 लोगों को 6 फरवरी 2025 को अहमदाबाद लाया गया था। अब दूसरे चरण का विमान आने के बाद तीसरे चरण में 16 फरवरी की रात 10 बजे अमेरिका का विमान अमृतसर हवाईअड्डे पर पहुंचेगा, जिसमें डिपोर्ट किए गए 157 भारतीय सवार बताए जा रहे हैं।

यमुना को स्वच्छ और निर्मल बनाने का अभियान शुरू

नई दिल्ली : दिल्ली में यमुना को स्वच्छ और निर्मल बनाने का अभियान शुरू हो गया है। यमुना से रविवार को कचरा उठाने वाले स्किमर, खरपतवार काटने वाली मशीने और ड्रेज यूटिलिटी क्राफ्ट ने सफाई शुरू कर दी है। दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने कल मुख्य सचिव और एसीएस से मुलाकात करके तुरंत यमुना की सफाई शुरू करने के लिए कहा था। दिल्ली विधानसभा चुनावों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जनसभाओं में यमुना को साफ करने का वादा किया था। उपराज्यपाल कार्यालय के अनुसार यमुना की सफाई के लिए चार सूत्रीय रणनीति बनाई गई है। सबसे पहले यमुना नदी की धारा में जमा कचरा, कूड़ा और गाद हटाया जाएगा। इसके बाद नजफगढ़ नाले, सप्लीमेंट्री नाले और अन्य सभी प्रमुख नालों में सफाई अभियान शुरू किया जाएगा। मौजूदा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता और उत्पादन के संदर्भ में दैनिक निगरानी रखी जाएगी। इसके बाद करीब 400 एमजीडी सीवर के उपचार की वास्तविक कमी को पूरा करने के लिए नालों आदि पर नए एसटीपी/डीएसटीपी के निर्माण के संदर्भ में एक समयबद्ध योजना बनाई जाएगी और उसे शुरू किया जाएगा। लगभग तीन वर्षों में यमुना को साफ करने का लक्ष्य रखने वाली इस महत्वाकांक्षी योजना के क्रियान्वयन के लिए विभिन्न एजेंसियों और विभागों के बीच निर्बाध समन्वय की आवश्यकता होगी। इसमें डीजेबी, आईएंडएफसी, एमसीडी, पर्यावरण विभाग, पीडब्ल्यूडी और डीडीए शामिल हैं।
उपर्युक्त कार्यों की निगरानी साप्ताहिक आधार पर उच्चतम स्तर पर की जाएगी। इसके अलावा, दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) को शहर में औद्योगिक इकाइयों द्वारा नालों में अनुपचारित अपशिष्ट के निर्वहन पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया गया है।

महाकुम्भ में वैदिक मंत्रों का जाप कर विद्वानों ने बनाया विश्व रिकॉर्ड

महाकुम्भ नगर : प्रयागराज महाकुम्भ मेला में दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान शिविर में 504 ब्रह्मज्ञानी विद्वानों ने लगातार वैदिक मंत्रों का जाप कर रविवार को विश्व रिकॉर्ड बनाया। एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स टीम के अधिकारियों ने जाग्रति संस्थान को इसका प्रमाण पत्र दिया। 14 जनवरी 2025 को महाकुम्भ मेला के दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान शिविर में इन ब्रह्मज्ञानी वेदपाठियों के बिना रुके हुए किए गए वैदिक मंत्रों पाठ को लाखों लोगों ने देखा और सुना। इस भव्य आध्यात्मिक परंपरा को शिविर में आने वाले श्रद्धालु, भक्त देखकर चकित थे। यह असाधारण तप कर्म 33 दिनों तक चला, जो आध्यात्मिक भक्ति और अनुशासन में एक अद्वितीय उपलब्धि का उदाहरण प्रस्तुत करता है। दिव्य ज्योति वेद मंदिर द्वारा आयोजित दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान सेक्टर-9 में एक परियोजना के शिविर में इस पवित्र तप कर्म रिले के लिए 504 ब्रह्मज्ञानी वैदिक विद्वानों को एक साथ लाया। जिन्होंने 792 घंटों तक लगातार जाप किया। जिसमें कुल 25,61,328 वैदिक मंत्र शामिल हैं। जिसमें शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्र अष्टाध्यायी पाठ के 11,151 प्रतिपादन शामिल हैं। यह ऐतिहासिक उपलब्धि 14 जनवरी 2025 को सुबह 3 बजे शुरू हुई और 16 फरवरी 2025 को 4 बजे समाप्त हुई। महाकुम्भ मेले के दौरान आधिकारिक तौर पर एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में पंजीकृत किया गया। उल्लेखनीय है कि 180 से अधिक शहरों के ब्रह्मज्ञानी वेदपाठियों ने विश्व शांति और मानवता के कल्याण को बढ़ावा देने के महान इरादे से इन मंत्रों का निस्वार्थ भाव से उच्चारण करने का संकल्प लिया। सभी वेदपाठियों ने इस कीर्तिमान में योगदान दिया। ये वेदपाठी दिव्य गुरु आशुतोष महाराज के शिष्य हैं, जिन्होंने महाकुम्भ में इस भव्य आध्यात्मिक प्रसाद में भाग लिया है।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह**. 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**